श्री श्रीविद्या खड्ग-माला

श्री श्रीविद्या के पन्द्रह विग्रहों का उनके शिव-सहित आराधना

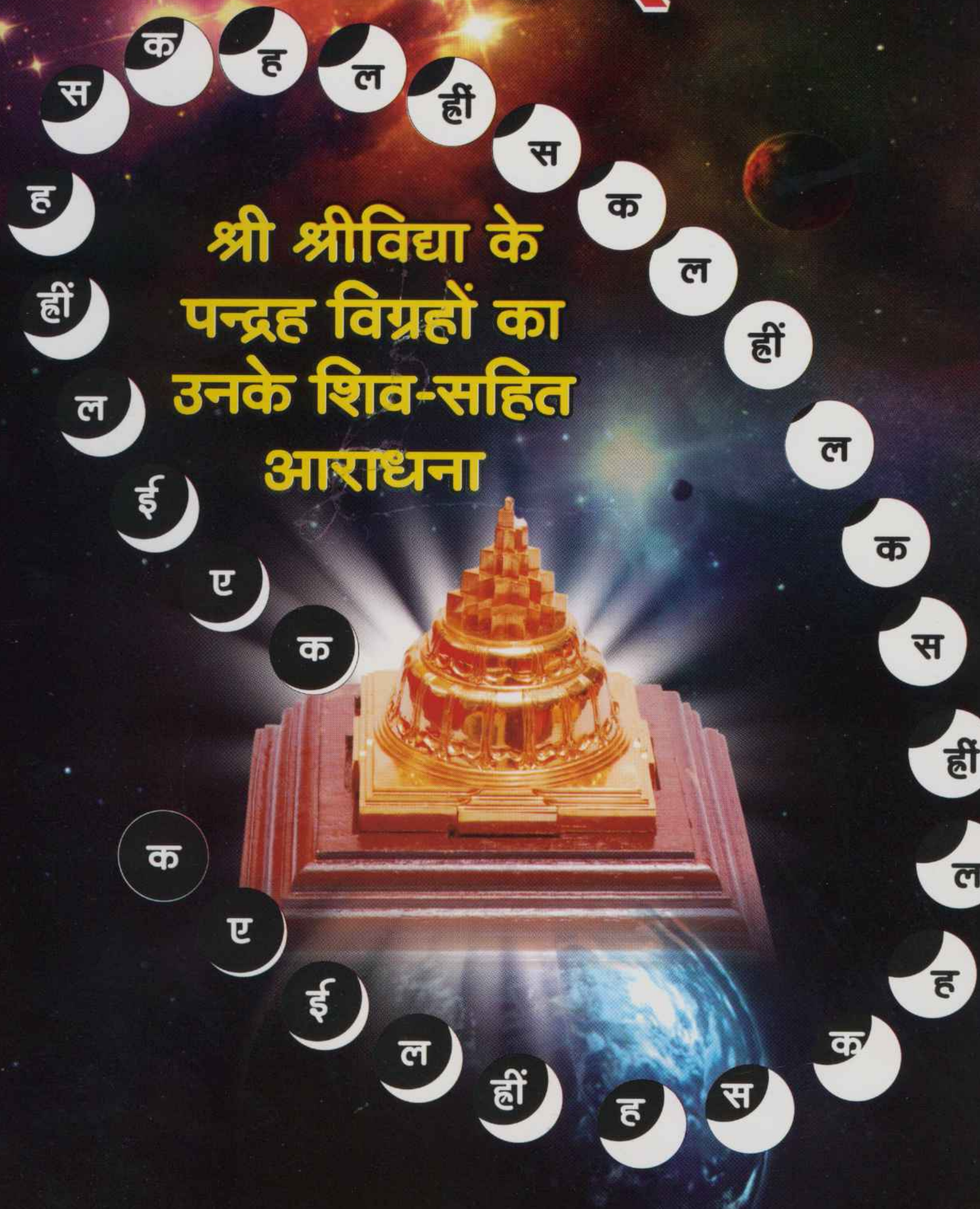

‘कौल-कल्पतरु’ चण्डी की विशेष प्रस्तुति

श्री श्रीविद्या खड्ग-माला

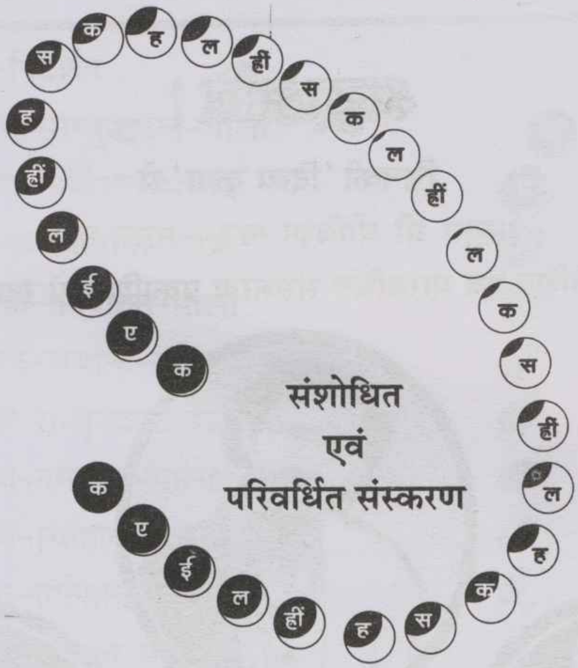

संशोधित
एवं
परिवर्धित संस्करण

आदि-सम्पादक

प्रातः-स्मरणीय ‘कुल-भूषण’ पं० रमादत्त शुक्ल

सम्पादक

ऋतशील शर्मा

*

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

Email : chandi_dham@rediffmail.com

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

श्रद्धाञ्जलि !

जिनकी 'दिव्य कृपा' से
प्रस्तुत श्री श्रीविद्या खड्ग-माला का
संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

गुप्तावतार
बाबाश्री

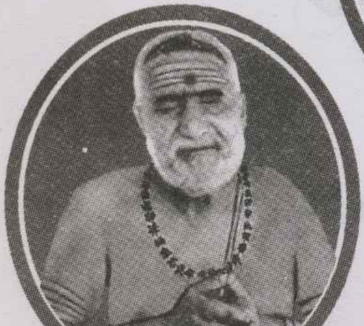

कौल-कल्पतरु
पं० देवीदत्त शुक्ल

कुल-भूषण
पं० रमादत्त शुक्ल

तृतीय संस्करण
शरत् पूर्णिमा, विश्वावसु सं० २०६९ वि०-२९ अक्टूबर, २०१२
सर्वाधिकार सुरक्षित
परा-वाणी प्रेस, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

अनुक्रम

	दो शब्द			०४
	भूमिका			०५
	माहात्म्य-निदर्शन			०७
०१.	शुद्ध-शक्ति-सम्बुद्ध्यन्त-माला	क	क	१३
०२.	शुद्ध-शक्ति-नमोऽन्त-माला	ए	ए	२१
०३.	शुद्ध-शक्ति-स्वाहान्त-माला	ई	ई	२९
०४.	शुद्ध-शक्ति-तर्पणान्त-माला	ल	ल	३७
०५.	शुद्ध-शक्ति-जयान्त-माला	ह्रीं	ह्रीं	४५
०६.	शुद्ध-शिव-सम्बुद्ध्यन्त-माला	ह	ह	५३
०७.	शुद्ध-शिव-नमोऽन्त-माला	स	स	६१
०८.	शुद्ध-शिव-स्वाहान्त-माला	क	क	६९
०९.	शुद्ध-शिव-तर्पणान्त-माला	ह	ह	७७
१०.	शुद्ध-शिव-जयान्त-माला	ल	ल	८५
११.	शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-सम्बुद्ध्यन्त-माला	ह्रीं	ह्रीं	९३
१२.	शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-नमोऽन्त-माला	स	स	१०१
१३.	शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-स्वाहान्त-माला	क	क	११३
१४.	शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-तर्पणान्त-माला	ल	ल	१२३
१५.	शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-जयान्त-माला	ह्रीं		१३३
	परिशिष्ट			
	१. सौभाग्य-वर्द्धक-पुष्पाञ्जलि			१४३
	२. शान्ति-स्तोत्र-पाठ			१४५
	३. क्षमापण-स्तोत्र-पाठ			१५०

***

दो शब्द

दश-महा-विद्याओं की उपासना में '**खड्ग-माला**' का विशेष महत्त्व है। '**खड्ग-माला**' के सम्बन्ध में ऐसी मान्यता है कि जो उपासक समयाभाव के कारण अपने **इष्ट देवता** का पूरा **आवरण-पूजन** नित्य करने में असमर्थ हों, वे केवल '**खड्ग-माला**' का **पारायण** (**पाठ**) करके अपना कर्तव्य पूरा कर सकते हैं और जिनके पास पर्याप्त समय हो, वे पूजन के बाद '**खड्ग-माला**' का भी '**पाठ**' कर विशेष अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

महत्त्व-पूर्ण बात यही है कि '**खड्ग-माला**' के विधि-वत् **पाठ** मात्र से **इष्ट देवता का आवरण-शक्तियों के सहित पूजन** हो जाता है और इसके द्वारा कम समय में विशेष अनुभूतियों की प्राप्ति होने लगती है।

सम्भवतः यही कारण है कि जब '**चण्डी**' के आदि-सम्पादक '**कुल-भूषण**' **पण्डित रमादत्त शुक्ल जी** की दृष्टि इस पर पड़ी, तब उन्होंने इसे हिन्दी में सर्व-प्रथम प्रकाशित कराया और लिखा कि -

"....'**चण्डी**' में मैंने '**खड्ग-माला**' के सम्बन्ध में एक लेख लिखा था। उसके लिखते समय मेरे मन में यह विचार उठा था कि उसका **साङ्गोपाङ्ग विधान** यदि पुस्तक-रूप में प्रकाशित किया जाए, तो ऐसी पुस्तक साधकों के लिए बड़ी उपयोगी होगी।...

...**श्री जगदम्बा की कृपा** से मेरा उक्त विचार कार्य-रूप में परिणत हो गया। '**सविधि श्री श्रीविद्या खड्ग-माला**' नामक पुस्तक प्रकाशित हो गई।..."

अस्तु! आज **शुक्ल जी** की **तीसरी पुण्य-तिथि** पर उक्त '**श्री श्रीविद्या खड्ग-माला**' का **तीसरा संशोधित** एवं **परिवर्धित संस्करण** प्रकाशित कर हमें परम सन्तोष की अनुभूति हो रही है। उनके कर-कमलों में उनके द्वारा दिए गए इस अनूठे '**प्रसाद**' को हम सादर अर्पित करते हैं।

प्रस्तुत तीसरे संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण के प्रकाशन हेतु हमें '**चण्डी**' के अनेक बन्धुओं के पत्रादि प्राप्त हुए हैं। साथ ही, कुछ बन्धुओं ने संशोधन-कार्य में हमारी सहायता भी की है। हम सभी के प्रति यहाँ अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

हमें विश्वास है कि **भगवती श्री श्रीविद्या** की उपासना करनेवाले बन्धु प्रस्तुत **तीसरे संस्करण** से विशेष रूप से लाभान्वित होंगे।

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग

- ऋतशील शर्मा

भूमिका

(द्वितीय संस्करण में प्रकाशित)

'खड्ग-माला' का अपना विशेष महत्त्व है। जो उपासक अपने इष्ट-देवता का पूरा पूजन नित्य-प्रति करने में असमर्थ होते हैं, वे केवल **'खड्ग-माला'** का पारायण (पाठ) करके अपना कर्तव्य पूरा कर सकते हैं और जिन्हें पर्याप्त समय हो, वे पूजन के साथ-साथ **'खड्ग-माला'** का भी पाठ कर सकते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि **'खड्ग-माला'** के विधि-वत् पारायण से सम्पूर्ण पूजा का फल पाने का अधिकारी उपासक हो जाता है।

दश महा-विद्याओं में से **'श्री श्रीविद्या'** के उपासकों में **'खड्ग-माला'** का विशेष रूप से प्रचलन पाया जाता है और दक्षिण भारत के **श्री-विद्योपासकों** में तो यह बहुत ही लोक-प्रिय है। **'खड्ग-माला'** के द्वारा उपासना बड़ी सरल हो जाती है और सहज ही अनुष्ठान सम्पन्न किया जा सकता है। ऐसी महत्त्व-पूर्ण **'खड्ग-माला'** का ज्ञान प्रत्येक साधक को अवश्य होना चाहिए।

'खड्ग-माला' के पाँच अङ्ग होते हैं-**१. सम्बुद्ध्यन्त, २. नमोऽन्त, ३. स्वाहान्त, ४. तर्पणान्त** और **५. जयान्त।**

- **सम्बुद्ध्यन्त-माला** का प्रत्येक मन्त्र **सम्बोधन** में होता है।
- **नमोऽन्त-माला** के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में **'नमः'** होता है।
- **स्वाहान्त-माला** के मन्त्रों के अन्त में **'स्वाहा'** होता है।
- **तर्पणान्त-माला** के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में **'तर्पयामि'** होता है।
- **जयान्त-माला** के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में **'जय जय'** होता है।

पुनः उक्त पाँच अङ्गों में से प्रत्येक के तीन अङ्ग होते है-१. **शुद्ध-शक्ति-सम्बन्धी**, २. **शुद्ध- शिव**-सम्बन्धी और ३. **शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन**-सम्बन्धी।

इस प्रकार कुल **१५ मालाएँ** बनती हैं। इनमें से **प्रति-दिन एक माला का पाठ** कर **एक पक्ष का पारायण होता है।**

उपासक को **शुक्ल पक्ष की प्रथमा** को **शुद्ध-शक्ति-सम्बुद्ध्यन्त माला** का पाठ करना चाहिए, **द्वितीया** को **शुद्ध-शक्ति-नमोऽन्त, तृतीया** को **शुद्ध-शक्ति-तर्पणान्त, चतुर्थी** को **शुद्ध-शक्ति-स्वाहान्त** और **पञ्चमी** को **शुद्ध-शक्ति-जयान्त माला** का पाठ करना चाहिए।

तदनन्तर **शुक्ला षष्ठी** को **शुद्ध-शिव-सम्बुद्ध्यन्त माला** का, **सप्तमी** को **शुद्ध-शिव-नमोऽन्त, अष्टमी** को **शुद्ध-शिव-तर्पणान्त, नवमी** को **शुद्ध-शिव-स्वाहान्त** और **दशमी** को **शुद्ध-शिव-जयान्त** का पाठ करना चाहिए।

इसके बाद शुक्ला एकादशी को **शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-सम्बुद्धयन्त माला** का, द्वादशी को **शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-नमोऽन्त**, त्रयोदशी को **शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-तर्पणान्त**, चतुर्दशी को **शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-स्वाहान्त** और पूर्णिमा को **शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-जयान्त माला** का पारायण करना चाहिए।

इसी प्रकार **कृष्ण-पक्ष** में मालाओं का पाठ करना चाहिए। किन्तु **विलोम-क्रम** हो जाएगा।

अर्थात् **कृष्णा प्रतिपदा** को **शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-सम्बुद्धयन्त** से प्रारम्भ कर, **द्वितीया** को **शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-नमोऽन्त**, **तृतीया** को **शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-तर्पणान्त**, **चतुर्थी** को **शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-स्वाहान्त** और **पञ्चमी** को **शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-जयान्त माला** का पाठ करना होगा।

तदनन्तर **कृष्णा षष्ठी** को **शुद्ध-शिव-सम्बुद्धयन्त माला** का, **सप्तमी** को **शुद्ध-शिव-नमोऽन्त**, **अष्टमी** को **शुद्ध-शिव-तर्पणान्त**, **नवमी** को **शुद्ध-शिव-स्वाहान्त** और **दशमी** को **शुद्ध-शिव-जयान्त माला** का पाठ होगा।

इसके बाद **कृष्णा एकादशी** को **शुद्ध-शक्ति-सम्बुद्धयन्त माला** का, **द्वादशी** को **शुद्ध-शक्ति-नमोऽन्त**, **त्रयोदशी** को **शुद्ध-शक्ति-तर्पणान्त**, **चतुर्दशी** को **शुद्ध-शक्ति-स्वाहान्त** और **अमावास्या** को **शुद्ध-शक्ति-जयान्त माला** का पाठ होगा।

इस प्रकार दोनों पक्षों में **'खड्ग-माला'** के **पन्द्रह अङ्गों का पारायण** नियमित रूप से करके साधक **श्री श्रीविद्या या पञ्च-दशी मन्त्र** का एक अनुष्ठान सम्पन्न कर लेता है। इस अनुष्ठान की अवधि में ३४,७२९ अक्षरों का जप होता है। यह क्रम **निष्काम अनुष्ठान** का है। **सकाम अनुष्ठान** में अक्षरों की संख्या ३४,७८५ हो जाती है। वैसे अनुष्ठान में थोड़ा-सा परिवर्तन करना होता है, जिसके सङ्केत उक्त मालाओं में यथा-स्थान कर दिए गए हैं।

हमें विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन से **श्री-श्रीविद्या** के उपासकों को **'खड्ग-माला'** का पारायण करने में पर्याप्त सहायता मिलेगी। इसी में हमारे परिश्रम की सार्थकता है।

रमादत्त शुक्ल

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग

(वैशाख पूर्णिमा, सं० २०३८ वि०)

***

माहात्म्य-निदर्शन

प्रस्तुत पुस्तक में '**श्रीविद्या-खड्ग-माला**' के जो पन्द्रह प्रकार दिए गए हैं, उनके जप का माहात्म्य विनियोगों और ध्यानों से स्पष्टतया ज्ञात हो जाता है।

♦ **पहली माला** के जप का विनियोग '**खड्ग**' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए है। इसका ध्यान निम्न प्रकार है–

तादृशं खड्गमाप्नोति, येन हस्त-स्थितेन वै।
अष्टादश-महा-द्वीप-साम्राज्य-भोक्ता भविष्यति।।

अर्थात् साधक उस प्रकार का **खड्ग** प्राप्त करता है, जिसके हाथ में रहने से वह अठारह महा-द्वीपों के साम्राज्य का भोग करनेवाला हो जाएगा।

♦ **दूसरी माला** के जप का विनियोग '**पादुका**' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए है। इसका ध्यान इस प्रकार है–

तादृशं पादुका-युग्ममाप्नोति तव भक्ति-मान्।
यदाक्रमण - मात्रेण, क्षणात् त्रिभुवन - क्रमः।।

अर्थात् तुम्हारी भक्ति करनेवाला साधक उस प्रकार की '**पादुका**' की जोड़ी प्राप्त करता है, जिनके सञ्चालित होते ही वह तीनों भुवनों में क्षण भर में पहुँचने की शक्ति पा जाता है।

♦ **तीसरी माला** के जप का विनियोग '**अञ्जन**' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए है। इसका ध्यान यह है–

सिद्धाञ्जनं समासाद्य, तेनाञ्जनित-लोचनः।
निधिं पश्यति सर्वत्र, भक्तस्तेन समृद्धिमान्।।

अर्थात् **सिद्धाञ्जन** को पाकर उसे आँख में लगाकर भक्त कहीं भी छिपी हुई निधि को देखने में समर्थ बनकर वैभव-शाली हो जाता है।

♦ **चौथी माला** के जप का विनियोग '**बिल**' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए है। इसका ध्यान निम्न प्रकार है–

बिल-द्वारमपावृत्य, पाताल-तल-योगिनः।
वीक्ष्य तेभ्यो लब्ध-सिद्धः, तव भक्तः सुखी भवेत्।।

अर्थात् '**बिल**' के द्वार को ढँककर पाताल के तले में रहनेवाले योगियों को देखकर उनसे तुम्हारा भक्त '**सिद्धि**' पाता है और सुखी होता है।

♦ **पाँचवीं माला** के जप का विनियोग '**वाक्**' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए है। इसका ध्यान इस प्रकार है–

वाक्-सिद्धिः द्विविधा प्रोक्ता, शापानुग्रह-कारिणी।
महा-कवित्व-रूपा च, भक्तस्तेन ह्यास्पदः।।

अर्थात् महान् कवित्व-रूपिणी '**वाक्**' की 'सिद्धि' दो प्रकार की कही गई है–**१. शाप देनेवाली, २. कृपा करनेवाली।** भक्त साधक इन दोनों को प्राप्त करता है।

♦ **छठी माला** के जप का विनियोग '**देह**' की शुद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसका ध्यान यह है–

तथा सिद्ध्यति ते भक्तो, यच्छरीरस्य पार्वति!।
तप्त-काञ्चन-गौरस्य, कदापि क्वापि न क्षयः।।

अर्थात् हे पार्वति! तुम्हारा भक्त **तपे हुए स्वर्ण के समान गौर वर्णवाले** उस शरीर की सिद्धि प्राप्त करता है, जिसका कभी कहीं भी नाश नहीं होता।

♦ **सातवीं माला** के जप का विनियोग '**लोह**' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसका ध्यान निम्न प्रकार है–

त्वद्भक्त-हस्त-स्पर्शेन, लोहोप्यष्ट-विधः शिवे!।
काञ्चनी-भावमाप्नोति, यथा स्याच्छिव-तुल्यता।।

अर्थात् हे शिवे! तुम्हारे भक्त के हाथ के छूने मात्र से आठों प्रकार का लोहा स्वर्ण बन जाता है, जिससे वह शिव-तुल्य हो जाता है।

♦ **आठवीं माला** के जप का विनियोग '**अणिमादि अष्ट-ऐश्वर्य**' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसका ध्यान इस प्रकार है–

'येऽष्टाणुत्व-महत्त्वाद्याः, स्वेच्छा-मात्र-प्रकल्पिताः।
तव भक्त-शरीराणां, ते स्युर्नैसर्गिका गुणाः।।

अर्थात् **अणुत्व, महत्त्व** आदि जो **आठ सिद्धियाँ** तुम्हारी इच्छा मात्र से उत्पन्न हुई हैं, वे तुम्हारे भक्त के शरीर में स्वाभाविक गुण के समान रहती हैं।

♦ **नवीं माला** के जप का विनियोग '**सर्व-वश्य**' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसका ध्यान यह है–

शरीरमर्थं प्राणांश्च, निवेद्य निज-भृत्य-वत्।
तव भक्तान् निषेवन्ते, वशी-भूता नृपादयः।।

अर्थात् राजा आदि सभी जन तुम्हारे भक्तों के वशीभूत सेवक के समान तन, मन, धन देकर उनकी सेवा करते हैं।

♦ दसवीं माला के जप का विनियोग '**सर्वाकर्षण**' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसका ध्यान निम्न प्रकार है–

लोह - प्राकार - संगुप्ता, निगडैर्यन्त्रिता अपि।
त्वद्भक्तै कृष्यमाणाश्च, समायान्त्येव योषितः।।

अर्थात् लोहे के किले में छिपाकर जञ्जीरों से नियन्त्रित किए जाने पर भी स्त्रियाँ तुम्हारे भक्तों द्वारा आकृष्ट किए जाने पर उनके पास पहुँच ही जाती हैं।

♦ **ग्यारहवीं माला** के जप का विनियोग '**सर्व-सम्मोहन**' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसका ध्यान इस प्रकार है–

अम्बिके! तव भक्तानामवलोकन - मात्रतः।
कृत्याकृत्य - विमूढाः स्युः, नरा नार्यो नृपादयः।।

अर्थात् हे अम्बिके! तुम्हारे भक्त की दृष्टि पड़ने मात्र से स्त्रियाँ और पुरुष तथा नरेश आदि किङ्कर्तव्य-विमूढ़ हो जाते हैं।

♦ **बारहवीं माला** के जप का विनियोग '**सर्व-स्तम्भन**' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसका ध्यान यह है–

देवि! त्वद्-भक्तमालोक्य, शरीरेन्द्रिय-चेतसाम्।
स्तम्भनाद्वैरिणः स्तब्धाः, स्व-स्व-कार्य-पराङ्मुखाः।।

अर्थात् हे देवि! तुम्हारे भक्त को देखकर शरीर की इन्द्रियों और मन का स्तम्भन हो जाने से शत्रु-गण स्तब्ध होकर अपने-अपने कार्य से विमुख हो जाते हैं।

♦ **तेरहवीं माला** के जप का विनियोग '**धर्मार्थ-काम-मोक्ष**' इन **पुरुषार्थ-चतुष्टय** की सिद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसका ध्यान निम्न प्रकार है–

धर्मं चार्थं च कामं च, मोक्षं चेति चतुष्टयम्।
तव भक्तः स्व-भक्तेभ्यः, प्रयच्छत्यप्रयासतः।।

अर्थात् **धर्म, अर्थ, काम** और **मोक्ष**–इन चारों को तुम्हारा भक्त अपने भक्तों को सहज ही प्रदान कर देता है।

♦ **चौदहवीं माला** के जप का विनियोग '**नित्यानन्द**' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसका ध्यान इस प्रकार है–

अलौकिकं लौकिकं चेत्यानन्द - द्वितयं सदा।
सुलभं परमेशानि!, त्वत्पादौ भजतां नृणाम्।।

अर्थात् हे परमेशानि! **अलौकिक** और **लौकिक** दो प्रकार के आनन्द होते हैं। तुम्हारे चरणों की भक्ति करनेवालों को **लौकिक** और **अलौकिक** दोनों प्रकार का आनन्द सदा सुलभ रहता है।

♦ पन्द्रहवीं माला के जप का विनियोग 'भोग-मोक्ष' की सिद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसका ध्यान यह है–

या भोग-दायिनी देवी, जीवन्मुक्ति-प्रदा न सा।
मोक्षदा तु न भोगाय, ललिता तूभय-प्रदा।।

अर्थात् जो शक्ति भोग देती है, वह जीवन से मुक्ति नहीं देती और जो मोक्ष देती है, वह भोग नहीं प्रदान करती। किन्तु भगवती ललिता–भोग और मोक्ष दोनों की प्रदायिनी हैं।

उक्त मालाओं के पारायण से श्रीविद्या के पन्द्रह विग्रहों का उनके शिव-सहित आराधन भी सहज ही सम्पन्न हो जाता है। इन विग्रहों का विवरण इस प्रकार है–

- श्रीकामेश्वरी ललिता–श्रीशिव कामेश्वर।
- श्रीएकला ललिता–श्रीएकवीर कामेश्वर।
- श्रीईश्वरी ललिता–श्रीईश्वर कामेश्वर।
- श्रीललिता ललिता–श्रीललित कामेश्वर।
- श्रीहल्लेखा ललिता–श्रीहृदय कामेश्वर।
- श्रीहलिनी ललिता–श्रीहलिक कामेश्वर।
- श्रीसरस्वती ललिता–श्रीसर्वज्ञ कामेश्वर।
- श्रीकमला ललिता–श्रीकाल-मर्दन कामेश्वर।
- श्रीहरि-वल्लभा ललिता–श्रीहरनाथ कामेश्वर।
- श्रीलक्ष्मी ललिता–श्रीललज्जिह्वा कामेश्वर।
- श्रीहिरण्या ललिता–श्रीहृदयेश्वर कामेश्वर।
- श्रीसकल-जननी ललिता–श्रीसकलेश्वर कामेश्वर।
- श्रीकाम-कोटि ललिता–श्रीकरुणाकर कामेश्वर।
- श्रीलीलावती ललिता–श्रीलावण्य-नायक कामेश्वर।
- श्रीहरेश्वरी ललिता–श्रीहिरण्य-बाहु कामेश्वर।

इस प्रकार प्रस्तुत 'खड्ग-माला' बड़ी ही प्रभाव-शालिनी है। ऊपर इसकी महिमा रहस्य-मय सिद्धियों द्वारा वर्णित हुई है, जिसे सद्-गुरु की कृपा के द्वारा ही हृदयङ्गम किया जा सकता है।

फल-स्तुति के निम्न-लिखित श्लोकों से इसकी सामान्य महिमा इस प्रकार स्पष्ट होती है। यथा–

सप्ताष्ट - माला - माहात्म्यं, वक्तुं वर्ष - शतैरपि।
न शक्यते वरारोहे!, पञ्चभिर्वदनैरपि।।१

एक-वारं प्रति-दिनं, दश-पञ्च-स्त्रजो जपेत्।
महा-पातक-निर्मुक्त-सर्वं पुण्यमवाप्नुयात्।।२
मासमेकं समावर्त्य, सप्ताष्ट - स्त्रजमुत्तमम्।
असाध्य-याप्य-साध्याख्यैर्मुच्यते त्रिविधैर्गदैः।।३
माला-मन्त्रैरमीभिस्तु, मन्त्रिता भूति-पांसवः।
क्षिप्ता भूताभि-भूतानां, मूर्ध्नि भूत-विनाशकाः।।४
ज्वरिणां च ज्वरा यान्ति, वाता वातकिनामपि।
असाध्य-रोग-ग्रस्तानां, रोगा यान्ति द्रुतं क्षयम्।।५
एतन्मन्त्रित-तोयेन, भस्मना वा समुत्क्षणात्।
पठित्वा हस्त-स्पर्शाद् वा, नात्र कार्या विचारणा।।६
सप्ताष्ट-माला-मन्त्रैस्तु, मन्त्रयित्वा घटोदकम्।
सप्ताहं सेवनं कृत्वा, बन्ध्या पुत्र-वती भवेत्।।७
अन्येष्वपि च दोषेषु, माला-मन्त्रं पठेन्नरः।
सर्वोपद्रव-निर्मुक्तः, साक्षाच्छिव-मयो भवेत्।।८
सप्ताष्ट-मालिका-जापी, नित्यं पुण्य-मयाकृतिः।
ज्वलन्नग्निरिव यस्तैर्वीक्ष्यते भूत - पूतनैः।।९
पूजा-होमस्तर्पणं च, मन्त्र-शक्ति-प्रभावतः।
पुष्पाज्य-तोयाभावेऽपि, जप-मात्रेण सिद्ध्यति।।१०
आपत्-काले नित्य-पूजां, विस्तरात् कर्तुमक्षमः।
एकावर्तन - मात्रेण, पर्व-पूजा-फलं लभेत्।।११

♦ अर्थात् सात+आठ =पन्द्रह मालाओं की महिमा का वर्णन करना सम्भव नहीं है। जो प्रति-दिन एक बार इस दस+पाँच=पन्द्रह मालाओं का जप करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर सभी प्रकार के पुण्यों को प्राप्त करता है।

♦ एक महीने तक इस उत्तम माला का जप करने से असाध्य, याप्य और साध्य–इन तीनों प्रकार के रोगों से छुटकारा मिलता है।

♦ इन माला–मन्त्रों से अभिमन्त्रित भस्म को भूताविष्ट लोगों के मस्तक पर फेंकने से भूतों का विनाश होता है। ज्वर–ग्रस्त लोगों का ज्वर दूर होता है और वायु–रोग से पीड़ितों की वात–व्याधि अच्छी हो जाती है। असाध्य रोगों से दुःखी लोगों के रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

♦ इस माला से अभिमन्त्रित जल या भस्म को छोड़ने से या इसका पाठ कर हाथ से स्पर्श करने से निश्चय ही उक्त सब फल प्राप्त होते हैं, इसमें सन्देह नहीं।

♦ इस पन्द्रह माला के मन्त्रों से **अभिमन्त्रित घटोदक** (घड़े में रखे जल) का सेवन करने से वन्ध्या स्त्री भी पुत्र-वती होती है।

♦ इसी प्रकार अन्य दोषों के सम्बन्ध में इस **माला-मन्त्र का पाठ** करने से पाठ-कर्त्ता सभी उपद्रवों से छूट कर साक्षात् शिव-स्वरूप हो जाता है।

♦ इस **माला** का जप करनेवाला सदा पुण्य-मय स्वरूपवाला होता है। वह प्रज्वलित अग्नि के समान जिसे भी देखता है, वह भूतादि-पीड़ाओं से छुटकारा पा जाता है।

♦ इस **माला-मन्त्र** के प्रभाव से **पुष्प, जल, हव्य-सामग्री** आदि पूजोपचारों का अभाव होते हुए भी **केवल जप** से ही **पूजन, होम** और **तर्पण** की अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होती है।

♦ आपत्ति के समय विस्तृत **नित्य-पूजा** करने में असमर्थ होने पर इस '**माला**' की केवल एक आवृत्ति करने से ही **पर्व-पूजा** के समान महा-फल होता है।

***

विशेष

जो बन्धु '**माला-पारायण**' हेतु '**सङ्कल्प**' करना चाहते हों, वे **सामान्य पञ्चाङ्ग** के अनुसार '**सामान्य सङ्कल्प**' और '**तान्त्रिक पञ्चाङ्ग**' के अनुसार '**तान्त्रिक सङ्कल्प**' कर सकते हैं। '**तान्त्रिक सङ्कल्प**' निम्न प्रकार करना चाहिए–

आदि-गुरोः पर-शिवस्याज्ञया, प्रवर्तमानेन देवी-मानेन, षट्-त्रिंशत्-तत्त्वात्मक सकल-प्रपञ्च-सृष्टि-स्थिति-संहार-तिरोधानानुग्रह-कारिण्याः श्रीपरा-शक्त्या ऊर्ध्व-भ्रू-विभ्रमे १. अं पूर्णे, २. षं सत्ये, ३. हं शवले, ४. हस्ख्फ्रें खर्वे, ५. क्लीं रामे, ६. स्हख्फ्रें महा-परिवृत्तौ, ७. थं अष्टादश-परिवृत्तौ, ८. शून्यं महा-युगे, ९. खं युगे, १०. अमुक* वर्षे, ११. अमुक मासे, १२. अमुक लघु-मासे, १३. अमुक पक्षे, १४. अमुक दिने, १५. अमुक तिथि-नित्यायां, १६. अमुक नाथे, अमुक घटिकायां, अमुक नक्षत्रे, अमुक योगे, अमुक करणे, अमुक विद्यायां, अमुक महा-विद्यायां, अमुक वासरे अमुक-गोत्रोत्पन्न अमुकानन्द-नाथोऽहं श्रीपर-देवता-प्रीत्यर्थं खड्गमाला-महा-मन्त्रस्य पारायणं करिष्ये।

* 'अमुक' के स्थान में तान्त्रिक पञ्चाङ्ग के अनुसार वर्ष आदि अङ्गों का उल्लेख करना चाहिए।

(१)

शुद्ध-शक्ति-सम्बुद्ध्यन्त-माला

प्रतिपदा (शुक्ल-पक्ष)	'क'	अमावास्या (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्री शुद्ध-शक्ति-सम्बुद्ध्यन्त-माला-महा-मन्त्रस्य उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीवरुणादित्य ऋषिः। गायत्री छन्दः। सात्त्विक-ककार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया श्रीकामेश्वरी-ललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। खड्ग-सिद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीवरुणादित्य-ऋषये नमः शिरसि। गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। सात्त्विक-ककार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलयायै श्रीकामेश्वरी-ललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। खड्ग-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

आरक्ताभां त्रि-नेत्रां मणि-मुकुट-वतीं रत्न-ताटङ्क-रम्याम्,
हस्ताम्भोजैः स-पाशांकुश-मदन-धनुः-सायकैः विस्फुरन्तीम्।
आपीनोत्तुङ्ग-वक्षोरुह-युग-विलुठत्-तार हारोज्ज्वलाङ्गीम्,
ध्यायेदाम्भोरुहस्थामरुण-सु-वसनामीश्वरीमीश्वराणाम्।।

।।सकाम ध्यान।।

तादृशं खड्गमाप्नोति, येन हस्त-स्थितेन वै।
अष्टादश-महा-द्वीप-साम्राज्य-भोक्ता भविष्यति।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२

ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुर-सुन्दरि! ।।१२।।
- हृदय-देवि!
- शिरो-देवि!
- शिखा-देवि!
- कवच-देवि!
- नेत्र-देव्यस्त्र-देवि! ।।३७।।
- कामेश्वरि!
- भग-मालिनि!
- नित्य-क्लिन्ने!
- भेरुण्डे!
- वह्नि-वासिनि!
- महा-वज्रेश्वरि!
- शिवा-दूति!
- त्वरिते!
- कुल-सुन्दरि!
- नित्ये!
- नील-पताके!
- विजये!
- सर्व-मङ्गले!
- ज्वाला-मालिनि!
- चित्रे!
- महा-नित्ये! ।।१०२।।
- परमेश्वर-परमेश्वरि!
- मित्रेश-मयि!
- षष्ठीश-मय्युड्डीश-मयि!
- चर्यानाथ-मयि!
- लोपामुद्रा-मय्यगस्त्य-मयि!
- काल-तापन-मयि!
- धर्माचार्य-मयि!
- मुक्तकेशीश्वर-मयि!
- दीप-कला-नाथ-मयि!
- विष्णु-देव-मयि!
- प्रभाकर-देव-मयि!
- तेजो-देव-मयि!
- मनोज-देव-मयि!
- कल्याण-देव-मयि!
- रत्न-देव-मयि!
- वासुदेव-मयि! ।।२१७।।
- रामानन्द-मयि!
- अणिमा-सिद्धे!
- लघिमा-सिद्धे!
- महिमा-सिद्धे!
- ईशित्व-सिद्धे!
- वशित्व-सिद्धे!
- प्राकाम्य-सिद्धे!
- भुक्ति-सिद्धे!
- इच्छा-सिद्धे!
- प्राप्ति-सिद्धे!
- सर्व-काम-सिद्धे! ।।२७१।।
- ब्राह्मि!

- माहेश्वरि!
- कौमारि!
- वैष्णवि!
- वाराहि!
- माहेन्द्रि!
- चामुण्डे!
- महा-लक्ष्मि! ।।२९६।।
- सर्व-संक्षोभिणि!
- सर्व-विद्राविणि!
- सर्वाकर्षिणि!
- सर्व-वशङ्करि!
- सर्वोन्मादिनि!
- सर्व-महांकुशे!
- सर्व-खेचरि!
- सर्व-बीजे!
- सर्व-योने!
- सर्व-त्रिखण्डे!
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिनि!
- प्रकट-योगिनि! ।।३६५।।
- कामाकर्षिणि!
- बुद्ध्याकर्षिण्यहङ्काराकर्षिणि!
- शब्दाकर्षिणि!
- स्पर्शाकर्षिणि!
- रूपाकर्षिणि!
- रसाकर्षिणि!
- गन्धाकर्षिणि!
- चित्ताकर्षिणि!
- धैर्याकर्षिणि!
- स्मृत्याकर्षिणि!
- नामाकर्षिणि!
- बीजाकर्षिण्यात्माकर्षिण्यमृताकर्षिणि!
- शरीराकर्षिणि!
- सर्वाशापरि-पूरक-चक्र-स्वामिनि! ।।४५९।।
- गुप्त-योगिन्यनङ्ग - कुसुमेऽनङ्ग - मेखलेऽनङ्ग-मदनेऽनङ्ग-मदनातुरेऽनङ्ग-रेखेऽनङ्ग-वेगिन्यनङ्गांकुशेऽनङ्ग-मालिनि!
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनि!
- गुप्ततर-योगिनि! ।।५२२।।
- सर्व-संक्षोभिणि!
- सर्व-विद्राविणि!
- सर्वाकर्षिणि!
- सर्वाह्लादिनि!
- सर्व-सम्मोहिनि!
- सर्व-स्तम्भिनि!
- सर्व-जृम्भिणि!
- सर्व-वशङ्करि!
- सर्व-रञ्जिनि!
- सर्वोन्मादिनि!
- सर्वार्थ-साधिनि!
- सर्व-सम्पत्ति-पूरणि!
- सर्व-मन्त्र-मयि!
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करि!
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिनि!
- सम्प्रदाय-योगिनि! ।।६२४।।

- सर्व-सिद्धि-प्रदे!
- सर्व-सम्पत्प्रदे!
- सर्व-प्रियङ्करि!
- सर्व-मङ्गल-कारिणि!
- सर्व-काम-प्रदे!
- सर्व-दुःख-विमोचिनि!
- सर्व-मृत्यु-प्रशमनि!
- सर्व-विघ्न-निवारिणि!
- सर्वाङ्ग-सुन्दरि!
- सर्व-सौभाग्य-दायिनि!
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनि!
- कुलोत्तीर्ण-योगिनि! ।।७१२।।
- सर्वज्ञे!
- सर्व-शक्ते!
- सर्वैश्वर्य-प्रदे!
- सर्व-ज्ञान-मयि!
- सर्व-व्याधि-विनाशिनि!
- सर्वाधार-स्वरूपे!
- सर्व-पाप-हरे!
- सर्वानन्द-मयि!
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिणि!
- सर्वेप्सित-प्रदे!
- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिनि!
- निगर्भ-योगिनि! ।।७८९।।
- वशिनि!
- कामेश्वरि!
- मोदिनि!
- विमलेऽरुणे!
- जयिनि!
- सर्वेश्वरि!
- कौलिनि!
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिनि!
- रहस्य-योगिनि! ।।८३१।।
- बाणिनि!
- चापिनि!
- पाशिन्यंकुशिनि!
- महा-कामेश्वरि!
- महा-वज्रेश्वरि!
- महा-भग-मालिनि!
- महा-श्रीसुन्दरि!
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिन्यति-रहस्य-योगिनि! ।।८८६।।
- श्रीश्री-महा-भट्टारिके!
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनि!
- परापर-रहस्य-योगिनि! ।।९१५।।
- त्रिपुरे!
- त्रिपुरेशि!
- त्रिपुर-सुन्दरि!
- त्रिपुर-वासिनि!
- त्रिपुरा-श्रीस्त्रिपुर-मालिनि!
- त्रिपुरा-सिद्धे!
- त्रिपुराम्ब महा-त्रिपुर-सुन्दरि! ।।९६१।।
- महा-महेश्वरि!
- महा-महा-राज्ञि!

- महा-महा-शक्ते!
- महा-महा-गुप्ते!
- महा-महा-ज्ञप्ते!
- महा-महानन्दे!
- महा-महा-स्पन्दे!
- महा-महाशये!
- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-साम्राज्ञि!
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।। १०३१।।

•••

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में **जप-समर्पण** करे। यथा–

श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रसादेन मम खड्ग-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शक्ति-सम्बुद्ध्यन्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् **कराङ्ग-न्यास** और **षडङ्ग-न्यास** कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका **मानस-पूजन** करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुँ। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

आरक्ताभां त्रि-नेत्रां मणि-मुकुट-वतीं रत्न-ताटङ्क-रम्याम्,
हस्ताम्भोजैः स-पाशांकुश-मदन-धनुः-सायकैः विस्फुरन्तीम्।
आपीनोत्तुङ्ग-वक्षोरुह-युग-विलुठत्-तार हारोज्ज्वलाङ्गीम्,
ध्यायेदाम्भोरुहस्थामरुण-सु-वसनामीश्वरीमीश्वराणाम्।।

।।सकाम ध्यान।।

तादृशं खड्गमाप्नोति, येन हस्त-स्थितेन वै।
अष्टादश-महा-द्वीप-साम्राज्य-भोक्ता भविष्यति।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीशिव-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीकामेश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे–

(१) गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।

सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि!।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-सम्बुद्ध्यन्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं 'श्रीशिव'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीकामेश्वरी'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-सम्बुद्ध्यन्त'-माला-मन्त्र-जपेन 'श्रीशिव'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीकामेश्वरी'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) 'श्रीशिव'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीकामेश्वरी'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रसादेन 'खड्ग'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

•••

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् **पृथिवी**–हमारे लिए शान्ति-दायिनी हो, **अन्तरिक्ष** और **दिव्याकाश**–कल्याणकारी हों, **देव-गण**–अभय देनेवाले हों, **दिशाएँ, विदिशाएँ** और **ऊर्ध्व दिशाएँ**–मङ्गल-मय हों तथा **जल-राशियाँ (सागर)**–चारों ओर से रक्षा करें। ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या **एक सहस्त्र एकतीस** है।

यह '**सम्बुद्ध्यन्त-माला**' है।

इसमें प्रत्येक मन्त्र के अन्त में सम्बोधन (आवाहन) की विभक्ति है।

अतः **मन्त्र-जप** के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता का मैं आवाहन कर रहा हूँ, यह भावना मन में करता जाए।

बाह्य-पूजन में प्रति सम्बोधन पर देवता के प्रति हाथ जोड़ता जाए।

(२)

शुद्ध-शक्ति-नमोऽन्त-माला

द्वितीया (शुक्ल-पक्ष)	'ए'	चतुर्दशी (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध-शक्ति-नमोऽन्त-माला-मन्त्रस्य पाय्विन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीमित्रादित्य ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। भोगद-एकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया श्रीएकला-ललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। पादुका-सिद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

पाय्विन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीमित्रादित्य-ऋषये नमः शिरसि। उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे। भोगद-एकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलयायै श्रीएकला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। पादुका-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।निष्काम ध्यान।।

आरक्ताभां त्रि-नेत्रां मणि-मुकुट-वतीं रत्न-ताटङ्क-रम्याम्,
हस्ताम्भोजैः स-पाशांकुश-मदन-धनुः-सायकैः विस्फुरन्तीम्।
आपीनोत्तुङ्ग-वक्षोरुह-युग-विलुठत्-तार हारोज्ज्वलाङ्गीम्,
ध्यायेदाम्भोरुहस्थामरुण-सु-वसनामीश्वरीमीश्वराणाम्।।

।।सकाम ध्यान।।

तादृशं पादुका-युग्ममाप्नोति तव भक्ति-मान्।
यदाक्रमण-मात्रेण, क्षणात् त्रिभुवन - क्रमः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२

ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-परायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।।२१
- हृदय-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- शिरो-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- शिखा-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- कवच-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- नेत्र-देव्यै नमः पादुकां पूजयाम्यस्त्र-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।।१००
- कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- भग-मालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- नित्य-क्लिन्नायै नमः पादुकां पूजयामि।
- भेरुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि।
- वह्नि-वासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-वज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- शिवा-दूत्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- त्वरितायै नमः पादुकां पूजयामि।
- कुल-सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- नित्यायै नमः पादुकां पूजयामि।
- नील-पताकायै नमः पादुकां पूजयामि।
- विजयायै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-मङ्गलायै नमः पादुकां पूजयामि।
- ज्वाला-मालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- चित्रायै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-नित्यायै नमः पादुकां पूजयामि।।३१८
- परमेश्वर-परमेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- मित्रेश-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- षष्ठीश-मय्यै नमः पादुकां-पूजयाम्युड्डीश-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- चर्यानाथ-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- लोपामुद्रा-मय्यै नमः पादुकां पूजयाम्यगस्त्य-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- काल-तापन-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- धर्माचार्य-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- मुक्तकेशीश्वर-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- दीप-कला-नाथ-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- विष्णु-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- प्रभाकर-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- तेजो-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- मनोज-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- कल्याण-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- रत्न-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- वासुदेव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।।५९५
- श्रीरामानन्द-मय्यै नमः पादुकां पूजयाम्यणिमा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि।
- लघिमा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि।
- महिमा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामीशित्व-सिद्ध्यै(*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि।
- वशित्व-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि।
- प्राकाम्य-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि।

- भुक्ति-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामीच्छा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि।
- प्राप्ति-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व - काम - सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि।।७४६ (*७५६)
- ब्राह्म्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- माहेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- कौमार्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- वैष्णव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- वाराह्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- माहेन्द्र्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- चामुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-लक्ष्म्यै नमः पादुकां पूजयामि।।८४४
- सर्व-संक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-विद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-वशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-महांकुशायै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-खेचर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-बीजायै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-योन्यै (*योनये) नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-त्रिखण्डायै नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- प्रकट-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।।१०२४
- कामाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- बुद्ध्याकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयाम्यहङ्कारा-कर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- शब्दाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- स्पर्शाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- रूपाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- रसाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- गन्धाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- चित्ताकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- धैर्याकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- स्मृत्याकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- नामाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- बीजाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयाम्यात्माकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयाम्यमृताकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- शरीराकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाशापरि-पूरक-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।।१२७१ (*१२८२)
- गुप्त-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-कुसुमायै नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मेखलायै नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मदनायै नमः पादुकां पूजयाम्यऽनङ्ग-मदनातुरायै नमः पादुकां पूजयाम्यऽनङ्ग-रेखायै नमः पादुकां पूजयाम्यऽनङ्ग-वेगिन्यै नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्गांकुशायै नमः पादुकां पूजयाम्यऽनङ्ग-मालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।

- सर्व - संक्षोभण - चक्र - स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- गुप्ततर - योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।।१४३९ (*१४५०)
- सर्व-संक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-विद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाह्लादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सम्मोहिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-स्तम्भिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-जृम्भिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-वशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-रञ्जिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वार्थ-साधिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-मन्त्र-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सम्प्रदाय - योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।।१६८५ (*१६९६)
- सर्व-सिद्धि-प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सम्पत्प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-प्रियङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-मङ्गल-कारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-काम-प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-दुःख-विमोचिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-मृत्यु-प्रशमन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-विघ्न-निवारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाङ्ग-सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सौभाग्य-दायिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वार्थ - साधक - चक्र - स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- कुलोत्तीर्ण - योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।।१८८४ (*१८९५)
- सर्वज्ञायै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-शक्त्यै (*शक्तये) नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वैश्वर्य-प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-ज्ञान-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-व्याधि-विनाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाधार-स्वरूपायै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-पाप-हरायै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वानन्द-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वेप्सित-प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व - रक्षा - कर - चक्र - स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- निगर्भ - योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।।२०७४ (*२०८६)
- वशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- मोदिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- विमलायै नमः पादुकां पूजयाम्यऽरुणायै नमः पादुकां पूजयामि।

- जयिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- कौलिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- रहस्य - योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।।२२०८ (*२२२०)
- बाणिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- चापिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- पाशिन्यै नमः पादुकां पूजयाम्यंकुशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।।२२५६ (*२२६८)
- महा-कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-वज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-भग-मालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-श्रीसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सिद्धि-प्रद - चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयाम्यति-रहस्य-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।।२३५३ (*२३६५)
- श्री श्री-महा-भट्टारिकायै नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वानन्द - मय - चक्र - स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- परापर - रहस्य - योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।।२४१० (*२४२२)
- त्रिपुरायै नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुरेश्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुर-वासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुरा-श्रियै नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुर-मालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुरा-सिद्धायै नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुराम्बायै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा - त्रिपुर - सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।।२५४१ (*२५५३)
- महा-महेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-राज्ञै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-शक्त्यै (*शक्तये) नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-गुप्तायै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-ज्ञप्त्यै (*ज्ञप्तये) नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-नन्दायै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-स्पन्दायै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महाशयायै नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-साम्राज्ञ्यै नमः पादुकां पूजयामि।
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ।।२६९६ (*२७१०)

•••

: विशेष :

काम्य-साधना हेतु (*) चिह्नाङ्कित प्रकार से 'जप' किया जाता है। ऐसा करने पर १४ अक्षर बढ़ जाते हैं और माला की कुल संख्या २७१० हो जाती है।

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा–

श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रसादेन मम पादुका-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शक्ति-नमोऽन्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् कराङ्ग-न्यास और षडङ्ग-न्यास कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका मानस-पूजन करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

आरक्ताभां त्रि-नेत्रां मणि-मुकुट-वतीं रत्न-ताटङ्क-रम्याम्,
हस्ताम्भोजैः स-पाशांकुश-मदन-धनुः-सायकैः विस्फुरन्तीम्।
आपीनोत्तुङ्ग-वक्षोरुह-युग-विलुठत्-तार हारोज्ज्वलाङ्गीम्,
ध्यायेदाम्भोरुहस्थामरुण-सु-वसनामीश्वरीमीश्वराणाम्।।

।।सकाम ध्यान।।

तादृशं पादुका-युग्ममाप्नोति तव भक्ति-मान्।
यदाक्रमण-मात्रेण, क्षणात् त्रिभुवन - क्रमः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीएकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीएकला-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे–

(१) गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-नमोऽन्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं 'श्रीएकवीर'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीएकला'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-नमोऽन्त'-माला-मन्त्र-जपेन 'श्रीएकवीर'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीएकला'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) 'श्रीएकवीर'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीएकला'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रसादेन 'पादुका'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् पृथिवी–हमारे लिए शान्ति-दायिनी हो, अन्तरिक्ष और दिव्याकाश–कल्याणकारी हों, देव-गण–अभय देनेवाले हों, दिशाएँ, विदिशाएँ और ऊर्ध्व दिशाएँ–मङ्गल-मय हों तथा जल-राशियाँ (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या दो सहस्र छः सौ छानवे (काम्य-साधना हेतु २७१०) है। यह 'नमोऽन्त-माला' है। प्रत्येक मन्त्र के अन्त में नमः पादुकां पूजयामि है। अतः मन्त्र-जप के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति मन में नमस्कार की भावना करता जाए। बाह्य-पूजन में प्रति नमः पादुकां पूजयामि पर देवता के प्रति पुष्पाञ्जलि देता जाए।

(३)

शुद्ध-शक्ति-स्वाहान्त-माला

तृतीया (शुक्ल-पक्ष)	'ई'	त्रयोदशी (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध-शक्ति-स्वाहान्त-माला-मन्त्रस्य पादेन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीधात्रादित्य ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। मोक्षद-ईकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया श्रीईश्वरी-ललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं।सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। अञ्जन-सिद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

पादेन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीधात्रादित्य-ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। मोक्षद-ईकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलयायै श्रीईश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। अञ्जन-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास-ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।निष्काम ध्यान।।

आरक्ताभां त्रि-नेत्रां मणि-मुकुट-वतीं रत्न-ताटङ्क-रम्याम्,
हस्ताम्भोजैः स-पाशांकुश-मदन-धनुः-सायकैः विस्फुरन्तीम्।
आपीनोत्तुङ्ग-वक्षोरुह-युग-विलुठत्-तार हारोज्ज्वलाङ्गीम्,
ध्यायेदाम्भोरुहस्थामरुण-सु-वसनामीश्वरीमीश्वराणाम्।।

।।सकाम ध्यान।।

सिद्धाञ्जनं समासाद्य, तेनाञ्जनित-लोचनः।
निधिं पश्यति सर्वत्र, भक्तस्तेन समृद्धि-मान्।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१
ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२
ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३
ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-परायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दर्यै स्वाहा।।१४
- हृदय-देव्यै स्वाहा।
- शिरो-देव्यै स्वाहा।
- शिखा-देव्यै स्वाहा।
- कवच-देव्यै स्वाहा।
- नेत्र-देव्यै स्वाहास्त्र-देव्यै स्वाहा।।५१
- कामेश्वर्यै स्वाहा।
- भग-मालिन्यै स्वाहा।
- नित्य-क्लिन्नायै स्वाहा।
- भेरुण्डायै स्वाहा।
- वह्नि-वासिन्यै स्वाहा।
- महा-वज्रेश्वर्यै स्वाहा।
- शिवा-दूत्यै स्वाहा।
- त्वरितायै स्वाहा।
- कुल-सुन्दर्यै स्वाहा।
- नित्यायै स्वाहा।
- नील-पताकायै स्वाहा।
- विजयायै स्वाहा।
- सर्व-मङ्गलायै स्वाहा।
- ज्वाला-मालिन्यै स्वाहा।
- चित्रायै स्वाहा।
- महा-नित्यायै स्वाहा।।१५७
- परमेश्वर-परमेश्वर्यै स्वाहा।
- मित्रेश-मय्यै स्वाहा।
- षष्ठीश-मय्यै स्वाहोड्डीश-मय्यै स्वाहा।
- चर्यानाथ-मय्यै स्वाहा।
- लोपामुद्रा-मय्यै स्वाहागस्त्य-मय्यै स्वाहा।
- काल-तापन-मय्यै स्वाहा।
- धर्माचार्य-मय्यै स्वाहा।
- मुक्त-केशीश्वर-मय्यै स्वाहा।
- दीप-कला-नाथ-मय्यै स्वाहा।
- विष्णु-देव-मय्यै स्वाहा।
- प्रभाकर-देव-मय्यै स्वाहा।
- तेजो-देव-मय्यै स्वाहा।
- मनोज-देव-मय्यै स्वाहा।
- कल्याण-देव-मय्यै स्वाहा।
- रत्न-देव-मय्यै स्वाहा।
- वासुदेव-मय्यै स्वाहा।।३०८
- श्रीरामानन्द-मय्यै स्वाहाणिमा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा।
- लघिमा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा।
- महिमा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहेशित्व-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा।
- वशित्व-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा।
- प्राकाम्य-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा।
- भुक्ति-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहेच्छा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा।
- प्राप्ति-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा।

- सर्व - काम - सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा।।३८२ (*३९२)
- ब्राह्म्यै स्वाहा।
- माहेश्वर्यै स्वाहा।
- कौमार्यै स्वाहा।
- वैष्णव्यै स्वाहा।
- वाराह्यै स्वाहा।
- माहेन्द्र्यै स्वाहा।
- चामुण्डायै स्वाहा।
- महा-लक्ष्म्यै स्वाहा।।४२४ (*४३४)
- सर्व-संक्षोभिण्यै स्वाहा।
- सर्व-विद्राविण्यै स्वाहा।
- सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा।
- सर्व-वशङ्कर्यै स्वाहा।
- सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा।
- सर्व-महांकुशायै स्वाहा।
- सर्व-खेचर्यै स्वाहा।
- सर्व-बीजायै स्वाहा।
- सर्व-योन्यै (*योनये) स्वाहा।
- सर्व-त्रिखण्डायै स्वाहा।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा।
- प्रकट-योगिन्यै स्वाहा।।५२० (*५३१)
- कामाकर्षिण्यै स्वाहा।
- बुद्ध्याकर्षिण्यै स्वाहाहङ्काराकर्षिण्यै स्वाहा।
- शब्दाकर्षिण्यै स्वाहा।
- स्पर्शाकर्षिण्यै स्वाहा।
- रूपाकर्षिण्यै स्वाहा।
- रसाकर्षिण्यै स्वाहा।
- गन्धाकर्षिण्यै स्वाहा।
- चित्ताकर्षिण्यै स्वाहा।
- धैर्याकर्षिण्यै स्वाहा।
- स्मृत्याकर्षिण्यै स्वाहा।
- नामाकर्षिण्यै स्वाहा।
- बीजाकर्षिण्यै स्वाहात्माकर्षिण्यै स्वाहामृताकर्षिण्यै स्वाहा।
- शरीराकर्षिण्यै स्वाहा।
- सर्वाशापरि-पूरक-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा।
- गुप्त - योगिन्यै स्वाहानङ्ग - कुसुमायै स्वाहानङ्ग-मेखलायै स्वाहानङ्ग-मदनायै स्वाहाऽनङ्ग-मदनातुरायै स्वाहाऽनङ्ग-रेखायै स्वाहाऽनङ्ग-वेगिन्यै स्वाहानङ्गांकुशायै स्वाहाऽनङ्ग-मालिन्यै स्वाहा।
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा।
- गुप्ततर-योगिन्यै स्वाहा।।७३९ (*७५०)
- सर्व-संक्षोभिण्यै स्वाहा।
- सर्व-विद्राविण्यै स्वाहा।
- सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा।
- सर्वाह्लादिन्यै स्वाहा।
- सर्व-सम्मोहिन्यै स्वाहा।
- सर्व-स्तम्भिन्यै स्वाहा।
- सर्व-जृम्भिण्यै स्वाहा।
- सर्व-वशङ्कर्यै स्वाहा।

- सर्व-रञ्जिन्यै स्वाहा।
- सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा।
- सर्वार्थ-साधिन्यै स्वाहा।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरण्यै स्वाहा।
- सर्व-मन्त्र-मय्यै स्वाहा।
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्कर्यै स्वाहा।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा।
- सम्प्रदाय-योगिन्यै स्वाहा।।८७३ (*८८४)
- सर्व-सिद्धि-प्रदायै स्वाहा।
- सर्व-सम्पत्प्रदायै स्वाहा।
- सर्व-प्रियङ्कर्यै स्वाहा।
- सर्व-मङ्गल-कारिण्यै स्वाहा।
- सर्व-काम-प्रदायै स्वाहा।
- सर्व-दुःख-विमोचिन्यै स्वाहा।
- सर्व-मृत्यु-प्रशमन्यै स्वाहा।
- सर्व-विघ्न-निवारिण्यै स्वाहा।
- सर्वाङ्ग-सुन्दर्यै स्वाहा।
- सर्व-सौभाग्य-दायिन्यै स्वाहा।
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा।
- कुलोत्तीर्ण-योगिन्यै स्वाहा।।९८८ (*९९९)
- सर्वज्ञायै स्वाहा।
- सर्व-शक्त्यै (*शक्तये) स्वाहा।
- सर्वैश्वर्य-प्रदायै स्वाहा।
- सर्व-ज्ञान-मय्यै स्वाहा।
- सर्व-व्याधि-विनाशिन्यै स्वाहा।
- सर्वाधार-स्वरूपायै स्वाहा।
- सर्व-पाप-हरायै स्वाहा।
- सर्वानन्द-मय्यै स्वाहा।
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिण्यै स्वाहा।
- सर्वेप्सित-प्रदायै स्वाहा।
- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा।
- निगर्भ-योगिन्यै स्वाहा।।१०९४ (*११०६)
- वशिन्यै स्वाहा।
- कामेश्वर्यै स्वाहा।
- मोदिन्यै स्वाहा।
- विमलायै स्वाहाऽरुणायै स्वाहा।
- जयिन्यै स्वाहा।
- सर्वेश्वर्यै स्वाहा।
- कौलिन्यै स्वाहा।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा।
- रहस्य-योगिन्यै स्वाहा।।११५८ (*११७०)
- बाणिन्यै स्वाहा।
- चापिन्यै स्वाहा।
- पाशिन्यै स्वाहांकुशिन्यै स्वाहा।११७८ (*११९०)
- महा-कामेश्वर्यै स्वाहा।
- महा-वज्रेश्वर्यै स्वाहा।
- महा-भग-मालिन्यै स्वाहा।
- महा-श्रीसुन्दर्यै स्वाहा।
- सर्व - सिद्धि - प्रद - चक्र - स्वामिन्यै स्वाहाति-रहस्य-योगिन्यै स्वाहा।।१२३३ (*१२४५)

- श्रीश्री-महा-भट्टारिकायै स्वाहा।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा।
- परापर-रहस्य-योगिन्यै स्वाहा।।१२६९ (*१२८१)
- त्रिपुरायै स्वाहा।
- त्रिपुरेश्यै स्वाहा।
- त्रिपुर-सुन्दर्यै स्वाहा।
- त्रिपुर-वासिन्यै स्वाहा।
- त्रिपुरा-श्रियै स्वाहा।
- त्रिपुर-मालिन्यै स्वाहा।
- त्रिपुरा-सिद्धायै स्वाहा।
- त्रिपुराम्बायै स्वाहा।
- महा - त्रिपुर - सुन्दर्यै स्वाहा।।१३३७ (*१३४९)
- महा-महेश्वर्यै स्वाहा।
- महा-महा-राज्ञ्यै स्वाहा।
- महा-महा-शक्त्यै (*शक्तये) स्वाहा।
- महा-महा-गुप्तायै स्वाहा।
- महा-महा-ज्ञप्त्यै (*ज्ञप्तये) स्वाहा।
- महा-महा-नन्दायै स्वाहा।
- महा-महा-स्पन्दायै स्वाहा।
- महा-महाशयायै स्वाहा।
- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-साम्राज्ञ्यै स्वाहा।
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ।।१४२९ (*१४४३)

•••

: विशेष :

काम्य-साधना हेतु (*) चिह्नाङ्कित प्रकार से 'जप' किया जाता है। ऐसा करने पर १४ अक्षर बढ़ जाते हैं और माला की कुल संख्या १४४३ हो जाती है।

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में **जप-समर्पण** करे। यथा–

श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रसादेन मम अञ्जन-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शक्ति-स्वाहान्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् **कराङ्ग-न्यास** और **षडङ्ग-न्यास** कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका **मानस-पूजन** करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

आरक्ताभां त्रि-नेत्रां मणि-मुकुट-वतीं रत्न-ताटङ्क-रम्याम्,
हस्ताम्भोजैः स-पाशांकुश-मदन-धनुः-सायकैः विस्फुरन्तीम्।
आपीनोत्तुङ्ग-वक्षोरुह-युग-विलुठत्-तार हारोज्ज्वलाङ्गीम्,
ध्यायेदाम्भोरुहस्थामरुण-सु-वसनामीश्वरीमीश्वराणाम्।।

।।सकाम ध्यान।।

सिद्धाञ्जनं समासाद्य, तेनाञ्जनित-लोचनः।
निधिं पश्यति सर्वत्र, भक्तस्तेन समृद्धि-मान्।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीईश्वर-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीईश्वरी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे–

(१) गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-स्वाहान्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं 'श्रीईश्वर'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीईश्वरी'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-स्वाहान्त'-माला-मन्त्र-जपेन 'श्रीईश्वर'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीईश्वरी'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) 'श्रीईश्वर'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीईश्वरी'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रसादेन 'अञ्जन'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् **पृथिवी**–हमारे लिए शान्ति-दायिनी हो, **अन्तरिक्ष** और **दिव्याकाश**–कल्याणकारी हों, **देव-गण**–अभय देनेवाले हों, **दिशाएँ**, **विदिशाएँ** और **ऊर्ध्व दिशाएँ**–मङ्गल-मय हों तथा **जल-राशियाँ** (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। **ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति** हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या

एक सहस्त्र चार सौ उन्तीस (काम्य-साधना हेत १४४३) है।

यह **'स्वाहान्त-माला'** है अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के **अन्त में स्वाहा** है।

अतः मन्त्र-जप के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति

चित-कुण्ड में हवन की भावना करता जाए।

बाह्य-पूजन में प्रति स्वाहा पर **हवन-कुण्ड में देवता के प्रति आहुतियाँ** देता जाए।

(४)

शुद्ध-शक्ति-तर्पणान्त-माला

चतुर्थी (शुक्ल-पक्ष)	'ल'	द्वादशी (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध - शक्ति - तर्पणान्त - माला - मन्त्रस्य पाणीन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीअर्यमादित्य ऋषिः। वृहती छन्दः। सात्त्विक-लकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया श्रीललिता-ललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। बिल-सिद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

पाणीन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीअर्यमादित्य-ऋषये नमः शिरसि। वृहती छन्दसे नमः मुखे। सात्त्विक-लकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलयायै श्रीललिता-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। बिल-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

आरक्ताभां त्रि-नेत्रां मणि-मुकुट-वतीं रत्न-ताटङ्क-रम्याम्,
हस्ताम्भोजैः स-पाशांकुश-मदन-धनुः-सायकैः विस्फुरन्तीम्।
आपीनोत्तुङ्ग-वक्षोरुह-युग-विलुठत्-तार हारोज्ज्वलाङ्गीम्,
ध्यायेदाम्भोरुहस्थामरुण-सु-वसनामीश्वरीमीश्वराणाम्।।

।।सकाम ध्यान।।

बिल-द्वारमपावृत्य, पाताल - तल - योगिनः।
वीक्ष्य तेभ्यो लब्ध-सिद्धः, तव भक्तः सुखी भवेत्।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२

ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दरीं तर्पयामि।।१६
- हृदय-देवीं तर्पयामि।
- शिरो-देवीं तर्पयामि।
- शिखा-देवीं तर्पयामि।
- कवच-देवीं तर्पयामि।
- नेत्र-देवीं तर्पयाम्यस्त्र-देवीं तर्पयामि।।६५
- कामेश्वरीं तर्पयामि।
- भग-मालिनीं तर्पयामि।
- नित्य-क्लिन्नां तर्पयामि।
- भेरुण्डां तर्पयामि।
- वह्नि-वासिनीं तर्पयामि।
- महा-वज्रेश्वरीं तर्पयामि।
- शिवा-दूतीं तर्पयामि।
- त्वरितां तर्पयामि।
- कुल-सुन्दरीं तर्पयामि।
- नित्यां तर्पयामि।
- नील-पताकां तर्पयामि।
- विजयां तर्पयामि।
- सर्व-मङ्गलां तर्पयामि।
- ज्वाला-मालिनीं तर्पयामि।
- चित्रां तर्पयामि।
- महा-नित्यां तर्पयामि।।१९४
- परमेश्वर-परमेश्वरीं तर्पयामि।
- मित्रेश-मयीं तर्पयामि।
- षष्ठीश-मयीं तर्पयाम्युड्डीश-मयीं तर्पयामि।
- चर्यानाथ-मयीं तर्पयामि।
- लोपामुद्रा-मयीं तर्पयाम्यगस्त्य-मयीं तर्पयामि।
- काल-तापन-मयीं तर्पयामि।
- धर्माचार्य-मयीं तर्पयामि।
- मुक्तकेशीश्वर - मयीं तर्पयामि।
- दीप-कला-नाथ-मयीं तर्पयामि।
- विष्णु-देव-मयीं तर्पयामि।
- प्रभाकर-देव-मयीं तर्पयामि।
- तेजो-देव-मयीं तर्पयामि।
- मनोज-देव-मयीं तर्पयामि।
- कल्याण-देव-मयीं तर्पयामि।
- रत्न-देव-मयीं तर्पयामि।
- वासुदेव-मयीं तर्पयामि।।३८१
- श्रीरामानन्द-मयीं तर्पयाम्यणिमा-सिद्धिं तर्पयामि।
- लघिमा-सिद्धिं तर्पयामि।
- महिमा-सिद्धिं तर्पयामीशित्व-सिद्धिं तर्पयामि।
- वशित्व-सिद्धिं तर्पयामि।
- प्राकाम्य-सिद्धिं तर्पयामि।
- भुक्ति-सिद्धिं तर्पयामीच्छा-सिद्धिं तर्पयामि।
- प्राप्ति-सिद्धिं तर्पयामि।
- सर्व-काम-सिद्धिं तर्पयामि।।४७७
- ब्राह्मीं तर्पयामि।

- माहेश्वरीं तर्पयामि।
- कौमारीं तर्पयामि।
- वैष्णवीं तर्पयामि।
- वाराहीं तर्पयामि।
- माहेन्द्रीं तर्पयामि।
- चामुण्डां तर्पयामि।
- महा-लक्ष्मीं तर्पयामि।।५३४
- सर्व-संक्षोभिणीं तर्पयामि।
- सर्व-विद्राविणीं तर्पयामि।
- सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि।
- सर्व-वशङ्करीं तर्पयामि।
- सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि।
- सर्व-महांकुशां तर्पयामि।
- सर्व-खेचरीं तर्पयामि।
- सर्व-वीजां तर्पयामि।
- सर्व-योनिं तर्पयामि।
- सर्व-त्रिखण्डां तर्पयामि।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि।
- प्रकट-योगिनीं तर्पयामि।।६५१
- कामाकर्षिणीं तर्पयामि।
- बुद्ध्याकर्षिणीं तर्पयाम्याहङ्काराकर्षिणीं तर्पयामि।
- शब्दाकर्षिणीं तर्पयामि।
- स्पर्शाकर्षिणीं तर्पयामि।
- रूपाकर्षिणीं तर्पयामि।
- रसाकर्षिणीं तर्पयामि।
- गन्धाकर्षिणीं तर्पयामि।
- चित्ताकर्षिणीं तर्पयामि।
- धैर्याकर्षिणीं तर्पयामि।
- स्मृत्याकर्षिणीं तर्पयामि।
- नामाकर्षिणीं तर्पयामि।
- बीजाकर्षिणीं तर्पयाम्यात्माकर्षिणीं तर्पयाम्यमृताकर्षिणीं तर्पयामि।
- शरीराकर्षिणीं तर्पयामि।
- सर्वाशा - परि - पूरक - चक्र - स्वामिनीं तर्पयामि।।८१३
- गुप्त - योगिनीं तर्पयाम्यनङ्ग - कुसुमां तर्पयाम्यनङ्ग-मेखलां तर्पयाम्यनङ्ग-मदनां तर्पयाम्यनङ्ग-मदनातुरां तर्पयाम्यनङ्ग-रेखां तर्पयाम्यनङ्ग-वेगिनीं तर्पयाम्यनङ्गांकुशां तर्पयाम्यनङ्ग-मालिनीं तर्पयामि।
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि।
- गुप्ततर-योगिनीं तर्पयामि।।९२०
- सर्व-संक्षोभिणीं तर्पयामि।
- सर्व-विद्राविणीं तर्पयामि।
- सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि।
- सर्वाह्लादिनीं तर्पयामि।
- सर्व-सम्मोहिनीं तर्पयामि।
- सर्व-स्तम्भिनीं तर्पयामि।
- सर्व-जृम्भिणीं तर्पयामि।
- सर्व-वशङ्करीं तर्पयामि।
- सर्व-रञ्जिनीं तर्पयामि।

- सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि।
- सर्वार्थ-साधिनीं तर्पयामि।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरणीं तर्पयामि।
- सर्व-मन्त्र-मयीं तर्पयामि।
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करीं तर्पयामि।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि।
- सम्प्रदाय-योगिनीं तर्पयामि।।१०८६
- सर्व-सिद्धि-प्रदां तर्पयामि।
- सर्व-सम्पत्प्रदां तर्पयामि।
- सर्व-प्रियङ्करीं तर्पयामि।
- सर्व-मङ्गल-कारिणीं तर्पयामि।
- सर्व-काम-प्रदां तर्पयामि।
- सर्व-दुःख-विमोचिनीं तर्पयामि।
- सर्व-मृत्यु-प्रशमनीं तर्पयामि।
- सर्व-विघ्न-निवारिणीं तर्पयामि।
- सर्वाङ्ग-सुन्दरीं तर्पयामि।
- सर्व-सौभाग्य-दायिनीं तर्पयामि।
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि।
- कुलोत्तीर्ण-योगिनीं तर्पयामि।।१२२२
- सर्वज्ञां तर्पयामि।
- सर्व-शक्तिं तर्पयामि।
- सर्वैश्वर्य-प्रदां तर्पयामि।
- सर्व-ज्ञान-मयीं तर्पयामि।
- सर्व-व्याधि-विनाशिनीं तर्पयामि।
- सर्वाधार-स्वरूपां तर्पयामि।
- सर्व-पाप-हरां तर्पयामि।
- सर्वानन्द-मयीं तर्पयामि।
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिणीं तर्पयामि।
- सर्वेप्सित-प्रदां तर्पयामि।
- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि।
- निगर्भ-योगिनीं तर्पयामि।।१३४७
- वशिनीं तर्पयामि।
- कामेश्वरीं तर्पयामि।
- मोदिनीं तर्पयामि।
- विमलां तर्पयाम्यरुणां तर्पयामि।
- जयिनीं तर्पयामि।
- सर्वेश्वरीं तर्पयामि।
- कौलिनीं तर्पयामि।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि।
- रहस्य-योगिनीं तर्पयामि।।१४२९
- बाणिनीं तर्पयामि।
- चापिनीं तर्पयामि।
- पाशिनीं तर्पयाम्यंकुशिनीं तर्पयामि।।१४५७
- महा-कामेश्वरीं तर्पयामि।
- महा-वज्रेश्वरीं तर्पयामि।
- महा-भग-मालिनीं तर्पयामि।
- महा-श्रीसुन्दरीं तर्पयामि।
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिनीं तर्पयाम्यति-रहस्य-योगिनीं तर्पयामि।।१५२४
- श्रीश्री-महा-भट्टारिकां तर्पयामि।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि।

- परापर-रहस्य-योगिनीं तर्पयामि।।१५६५
- त्रिपुरां तर्पयामि।
- त्रिपुरेशीं तर्पयामि।
- त्रिपुर-सुन्दरीं तर्पयामि।
- त्रिपुर-वासिनीं तर्पयामि।
- त्रिपुरा-श्रियं तर्पयामि।
- त्रिपुर-मालिनीं तर्पयामि।
- त्रिपुरा-सिद्धां तर्पयामि।
- त्रिपुराम्बां तर्पयामि।
- महा-त्रिपुर-सुन्दरीं तर्पयामि।।१६४८
- महा-महेश्वरीं तर्पयामि।
- महा-महा-राज्ञीं तर्पयामि।
- महा-महा-शक्तिं तर्पयामि।
- महा-महा-गुप्तां तर्पयामि।
- महा-महा-ज्ञप्तिं तर्पयामि।
- महा-महा-नन्दां तर्पयामि।
- महा-महा-स्पन्दां तर्पयामि।
- महा-महाशयां तर्पयामि।
- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-साम्राज्ञीं तर्पयामि।
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।। १७५४

•••

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा–

श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रसादेन मम बिल-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शक्ति-तर्पणान्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् कराङ्ग-न्यास और षडङ्ग-न्यास कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका मानस-पूजन करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

आरक्ताभां त्रि-नेत्रां मणि-मुकुट-वतीं रत्न-ताटङ्क-रम्याम्,
हस्ताम्भोजैः स-पाशांकुश-मदन-धनुः-सायकैः विस्फुरन्तीम्।

आपीनोत्तुङ्ग-वक्षोरुह-युग-विलुठत्-तार हारोज्ज्वलाङ्गीम्,
ध्यायेदाम्भोरुहस्थामरुण-सु-वसनामीश्वरीमीश्वराणाम्।।

।।सकाम ध्यान।।

बिल-द्वारमपावृत्य, पाताल - तल - योगिनः।
वीक्ष्य तेभ्यो लब्ध-सिद्धः, तव भक्तः सुखी भवेत्।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललित-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीललिता-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे–

(१) गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-तर्पणान्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं 'श्रीललित'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीललिता'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-तर्पणान्त'-माला-मन्त्र-जपेन 'श्रीललित'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीललिता'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) 'श्रीललित'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीललिता'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रसादेन 'बिल'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् पृथिवी–हमारे लिए शान्ति–दायिनी हो, अन्तरिक्ष और दिव्याकाश–कल्याणकारी हों, देव-गण–अभय देनेवाले हों, दिशाएँ, विदिशाएँ और ऊर्ध्व दिशाएँ–मङ्गल-मय हों तथा जल-राशियाँ (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या एक सहस्र सात सौ चौवन है।

यह 'तर्पणान्त-माला' है अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में तर्पयामि है।

अतः मन्त्र-जप के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति

कुल-कुण्डलिनी में तर्पण की भावना करता जाए।

बाह्य-पूजन में प्रति तर्पयामि पर

जिह्वाग्र-स्थित कुल-कुण्डलिनी को अमृत का तर्पण कराता जाए।

(५)

शुद्ध-शक्ति-जयान्त-माला

पञ्चमी (शुक्ल-पक्ष)	'ह्लीं'	एकादशी (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध-शक्ति-जयान्त-माला-मन्त्रस्य वागिन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीअंशु-मदादित्य ऋषिः। पंक्तिः छन्दः। सात्त्विक-ह्लीङ्कार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया श्रीहृल्लेखा-ललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्लीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्लीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्लीं कीलकं। वाक्-सिद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

वागिन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीअंशु-मदादित्य-ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। सात्त्विक-ह्लीङ्कार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलयायै श्रीहृल्लेखा-ललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्लीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्लीं कीलकाय नमः नाभौ। वाक्-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्लौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्लः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्लां हृदयाय नमः। ह्लीं शिरसे स्वाहा। ह्लूं शिखायै वषट्। ह्लैं कवचाय हुम्। ह्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्लः अस्त्राय फट्।

।निष्काम ध्यान।।

आरक्ताभां त्रि-नेत्रां मणि-मुकुट-वतीं रत्न-ताटङ्क-रम्याम्,
हस्ताम्भोजैः स-पाशांकुश-मदन-धनुः-सायकैः विस्फुरन्तीम्।
आपीनोत्तुङ्ग-वक्षोरुह-युग-विलुठत्-तार हारोज्ज्वलाङ्गीम्,
ध्यायेदाम्भोरुहस्थामरुण-सु-वसनामीश्वरीमीश्वराणाम्।।

।।सकाम ध्यान।।

वाक्-सिद्धिः द्विविधा प्रोक्ता, शापानुग्रह-कारिणी।
महा-कवित्व-रूपा च, भक्तस्तेन द्वयास्पदः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः, अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२

ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दरि जय जय।।१६
- हृदय-देवि जय जय।
- शिरो-देवि जय जय।
- शिखा-देवि जय जय।
- कवच-देवि जय जय।
- नेत्र-देवि जय जयास्त्र-देवि जय जय।।६५
- कामेश्वरि जय जय।
- भग-मालिनि जय जय।
- नित्य-क्लिन्ने जय जय।
- भेरुण्डे जय जय।
- वह्नि-वासिनि जय जय।
- महा-वज्रेश्वरि जय जय।
- शिवा-दूति जय जय।
- त्वरिते जय जय।
- कुल-सुन्दरि जय जय।
- नित्ये जय जय।
- नील-पताके जय जय।
- विजये जय जय।
- सर्व-मङ्गले जय जय।
- ज्वाला-मालिनि जय जय।
- चित्रे जय जय।
- महा-नित्ये जय जय।।१९४
- परमेश्वर-परमेश्वरि जय जय।
- मित्रेश-मयि जय जय।
- षष्ठीश-मयि जय जयोड्डीश-मयि जय जय।
- चर्यानाथ-मयि जय जय।
- लोपामुद्रा-मयि जय जयागस्त्य-मयि जय जय।
- काल-तापन-मयि जय जय।
- धर्माचार्य-मयि जय जय।
- मुक्तकेशीश्वर-मयि जय जय।
- दीप-कला-नाथ-मयि जय जय।
- विष्णु-देव-मयि जय जय।
- प्रभाकर-देव-मयि जय जय।
- तेजो-देव-मयि जय जय।
- मनोज-देव-मयि जय जय।
- कल्याण-देव-मयि जय जय।
- रत्न-देव-मयि जय जय।
- वासुदेव-मयि जय जय।।३८१
- श्रीरामानन्द-मयि जय जयाणिमा-सिद्धे जय जय।
- लघिमा-सिद्धे जय जय।
- महिमा-सिद्धे जय जयेशित्व-सिद्धे जय जय।
- वशित्व-सिद्धे जय जय।
- प्राकाम्य-सिद्धे जय जय।
- भुक्ति-सिद्धे जय जयेच्छा-सिद्धे जय जय।
- प्राप्ति-सिद्धे जय जय।
- सर्व-काम-सिद्धे जय जय।।४७७
- ब्राह्मि जय जय।
- माहेश्वरि जय जय।

- कौमारि जय जय।
- वैष्णवि जय जय।
- वाराहि जय जय।
- माहेन्द्रि जय जय।
- चामुण्डे जय जय।
- महा-लक्ष्मि जय जय।।५३४
- सर्व-संक्षोभिणि जय जय।
- सर्व-विद्राविणि जय जय।
- सर्वाकर्षिणि जय जय।
- सर्व-वशङ्करि जय जय।
- सर्वोन्मादिनि जय जय।
- सर्व-महांकुशे जय जय।
- सर्व-खेचरि जय जय।
- सर्व-बीजे जय जय।
- सर्व-योने जय जय।
- सर्व-त्रिखण्डे जय जय।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिनि जय जय।
- प्रकट-योगिनि जय जय।।६५१
- कामाकर्षिणि जय जय।
- बुद्ध्याकर्षिणि जय जयाहङ्काराकर्षिणि जय जय।
- शब्दाकर्षिणि जय जय।
- स्पर्शाकर्षिणि जय जय।
- रूपाकर्षिणि जय जय।
- रसाकर्षिणि जय जय।
- गन्धाकर्षिणि जय जय।
- चित्ताकर्षिणि जय जय।
- धैर्याकर्षिणि जय जय।
- स्मृत्याकर्षिणि जय जय।
- नामाकर्षिणि जय जय।
- बीजाकर्षिणि जय जयात्माकर्षिणि जय जयामृताकर्षिणि जय जय।
- शरीराकर्षिणि जय जय।
- सर्वाशा-परि-पूरक-चक्र-स्वामिनि जय जय।।८१३
- गुप्त-योगिनि जय जयानङ्ग-कुसुमे जय जयानङ्ग-मेखले जय जयानङ्ग-मदने जय जयानङ्ग-मदनातुरे जय जयानङ्ग-रेखे जय जयानङ्ग-वेगिनि जय जयानङ्गांकुशे जय जयानङ्ग-मालिनि जय जय।
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनि जय जय।
- गुप्ततर-योगिनि जय जय।।।९२०
- सर्व-संक्षोभिणि जय जय।
- सर्व-विद्राविणि जय जय।
- सर्वाकर्षिणि जय जय।
- सर्वाह्लादिनि जय जय।
- सर्व-सम्मोहिनि जय जय।
- सर्व-स्तम्भिनि जय जय।
- सर्व-जृम्भिणि जय जय।
- सर्व-वशङ्करि जय जय।
- सर्व-रञ्जिनि जय जय।
- सर्वोन्मादिनि जय जय।
- सर्वार्थ-साधिनि जय जय।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरणि जय जय।

- सर्व-मन्त्र-मयि जय जय।
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करि जय जय।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिनि जय जय।
- सम्प्रदाय-योगिनि जय जय।।१०८६
- सर्व-सिद्धि-प्रदे जय जय।
- सर्व-सम्पत्प्रदे जय जय।
- सर्व-प्रियङ्करि जय जय।
- सर्व-मङ्गल-कारिणि जय जय।
- सर्व-काम-प्रदे जय जय।
- सर्व-दुःख-विमोचिनि जय जय।
- सर्व-मृत्यु-प्रशमनि जय जय।
- सर्व-विघ्न-निवारिणि जय जय।
- सर्वाङ्ग-सुन्दरि जय जय।
- सर्व-सौभाग्य-दायिनि जय जय।
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनि जय जय।
- कुलोत्तीर्ण-योगिनि जय जय।।१२२२
- सर्वज्ञे जय जय।
- सर्व-शक्ते जय जय।
- सर्वैश्वर्य-प्रदे जय जय।
- सर्व-ज्ञान-मयि जय जय।
- सर्व-व्याधि-विनाशिनि जय जय।
- सर्वाधार-स्वरूपे जय जय।
- सर्व-पाप-हरे जय जय।
- सर्वानन्द-मयि जय जय।
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिणि जय जय।
- सर्वेप्सित-प्रदे जय जय।
- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिनि जय जय।
- निगर्भ-योगिनि जय जय।।१३४७
- वशिनि जय जय।
- कामेश्वरि जय जय।
- मोदिनि जय जय।
- विमले जय जयारुणे जय जय।
- जयिनि जय जय।
- सर्वेश्वरि जय जय।
- कौलिनि जय जय।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिनि जय जय।
- रहस्य-योगिनि जय जय।।१४२९
- बाणिनि जय जय।
- चापिनि जय जय।
- पाशिनि जय जयांकुशिनि जय जय।।१४५७
- महा-कामेश्वरि जय जय।
- महा-वज्रेश्वरि जय जय।
- महा-भग-मालिनि जय जय।
- महा-श्रीसुन्दरि जय जय।
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिनि जय जयाति-रहस्य-योगिनि जय जय।।१५२४
- श्रीश्री-महा-भट्टारिके जय जय।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनि जय जय।
- परापर-रहस्य-योगिनि जय जय।।१५६५
- त्रिपुरे जय जय।
- त्रिपुरेशि जय जय।
- त्रिपुर-सुन्दरि जय जय।
- त्रिपुर-वासिनि जय जय।

- त्रिपुरा-श्रीः जय जय।
- त्रिपुर-मालिनि जय जय।
- त्रिपुरा-सिद्धे जय जय।
- त्रिपुराम्बे जय जय।
- महा-त्रिपुर-सुन्दरि जय जय।।१६४७
- महा-महेश्वरि जय जय।
- महा-महा-राज्ञि जय जय।
- महा-महा-शक्ते जय जय।
- महा-महा-गुप्ते जय जय।
- महा-महा-ज्ञप्ते जय जय।
- महा-महा-नन्दे जय जय।
- महा-महा-स्पन्दे जय जय।
- महा-महाशये जय जय।
- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-साम्राज्ञि जय जय।१७४४
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।। १७५३

•••

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा–

श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रसादेन मम वाक्-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शक्ति-जयान्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् कराङ्ग-न्यास और षडङ्ग-न्यास कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका मानस-पूजन करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

आरक्ताभां त्रि-नेत्रां मणि-मुकुट-वतीं रत्न-ताटङ्क-रम्याम्,
हस्ताम्भोजैः स-पाशांकुश-मदन-धनुः-सायकैः विस्फुरन्तीम्।
आपीनोत्तुङ्ग-वक्षोरुह-युग-विलुठत्-तार हारोज्ज्वलाङ्गीम्,
ध्यायेदाम्भोरुहस्थामरुण-सु-वसनामीश्वरीमीश्वराणाम्।।

।।सकाम ध्यान।।

वाक्-सिद्धिः द्विविधा प्रोक्ता, शापानुग्रह-कारिणी।
महा-कवित्व-रूपा च, भक्तस्तेन द्वयास्पदः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीहृदय-कामेश्वराङ्क-निलया-श्रीहृल्लेखा-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे–

(१) गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-जयान्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं 'श्रीहृदय'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीहृल्लेखा'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-जयान्त'-माला-मन्त्र-जपेन 'श्रीहृदय'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीहृल्लेखा'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) 'श्रीहृदय'-कामेश्वराङ्क-निलया-'श्रीहृल्लेखा'-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रसादेन 'वाक्'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् पृथिवी–हमारे लिए शान्ति–दायिनी हो, अन्तरिक्ष और दिव्याकाश–कल्याणकारी हों, देव-गण–अभय देनेवाले हों, दिशाएँ, विदिशाएँ और ऊर्ध्व दिशाएँ–मङ्गल-मय हों तथा जल-राशियाँ (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-ऊसंख्या एक सहस्त्र सात सौ चौवन है।
यह 'जयान्त-माला' है अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में जय जय है।
अतः मन्त्र-जप के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति
जय-जयकार की भावना करता जाए।
बाह्य-पूजन में जय जय पर पुष्पाञ्जलि छोड़ता जाए।

(६)

शुद्ध-शिव-सम्बुद्ध्यन्त-माला

षष्ठी (शुक्ल-पक्ष)	'ह'	दशमी (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध-शिव-सम्बुद्ध्यन्त-माला-मन्त्रस्य घ्राणेन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीभगादित्य ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। भोगद-हकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-महा-भट्टारक देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। देह-शुद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

घ्राणेन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीभगादित्य-ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। भोगद-हकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-महा-भट्टारकाय देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। देह-शुद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

ललितारुण - सुस्मेर - द्युमन् मधुरकोष्णमा।
मूर्त्या दृशा च वीट्या च, संरक्तं श्रीशिवं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

तथा सिद्ध्यति ते भक्तो, यच्छरीरस्य पार्वति!।
तप्त-काञ्चन-गौरस्य, कदापि क्वापि न क्षयः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२

ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दर।।१२
- हृदय-देव।
- शिरो-देव।
- शिखा-देव।
- कवच-देव।
- नेत्र-देवास्त्र-देव।।३७
- कामेश्वर।
- भग-मालिन्।
- नित्य-क्लिन्न।
- भेरुण्ड।
- वह्नि-वासिन्।
- महा-वज्रेश्वर।
- शिवा-दूत।
- त्वरित।
- कुल-सुन्दर।
- नित्य।
- नील-पताक।
- विजय।
- सर्व-मङ्गल।
- ज्वाला-मालिन्।
- चित्र।
- महा-नित्य।।९९
- परमेश्वर-परमेश्वर।
- मित्रेश-मय।
- षष्ठीश-मय्युड्डीश-मय।
- चर्यानाथ-मय।
- लोपामुद्रा-मयागस्त्य-मय।
- काल-तापन-मय।
- धर्माचार्य-मय।
- मुक्तकेशीश्वर-मय।
- दीप-कला-नाथ-मय।
- विष्णु-देव-मय।
- प्रभाकर-देव-मय।
- तेजो-देव-मय।
- मनोज-देव-मय।
- कल्याण-देव-मय।
- रत्न-देव-मय।
- वासुदेव-मय।।२१४
- श्रीरामानन्द - मयाणिमा-सिद्ध।
- लघिमा-सिद्ध।
- महिमा-सिद्ध।
- ईशित्व-सिद्ध।
- वशित्व-सिद्ध।
- प्राकाम्य-सिद्ध।
- भुक्ति-सिद्ध।
- इच्छा-सिद्ध।
- प्राप्ति-सिद्ध।
- सर्व-काम-सिद्ध।।२६८
- ब्राह्म।
- माहेश्वर।

- कौमार।
- वैष्णव।
- वाराह।
- माहेन्द्र।
- चामुण्ड।
- महा-लक्ष्मि।।२९३
- सर्व-संक्षोभिन्।
- सर्व-विद्राविन्।
- सर्वाकर्षिन्।
- सर्व-वशङ्कर।
- सर्वोन्मादिन्।
- सर्व-महांकुश।
- सर्व-खेचर।
- सर्व-बीज।
- सर्व-योने।
- सर्व-त्रिखण्ड।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिन्।
- प्रकट-योगिन्।।३५६
- कामाकर्षण।
- बुद्ध्याकर्षणाहङ्काराकर्षण।
- शब्दाकर्षण।
- स्पर्शाकर्षण।
- रूपाकर्षण।
- रसाकर्षण।
- गन्धाकर्षण।
- चित्ताकर्षण।
- धैर्याकर्षण।
- स्मृत्याकर्षण।
- नामाकर्षण।
- बीजाकर्षणात्माकर्षणामृताकर्षण।
- शरीराकर्षण।
- सर्वाशापरि-पूरक-चक्र-स्वामिन्।।४४९
- गुप्त-योगिन्ननङ्ग-कुसुमानङ्ग-मेखलानङ्ग-मदनानङ्ग - मदनातुरानङ्ग-रेखानङ्ग-वेगिननङ्गांकुशानङ्ग-मालिन्।
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिन्।
- गुप्ततर-योगिन्।।५०९
- सर्व-संक्षोभिन्।
- सर्व-विद्राविन्।
- सर्वाकर्षिन्।
- सर्वाह्लादिन्।
- सर्व-सम्मोहिन्।
- सर्व-स्तम्भिन्।
- सर्व-जृम्भिन्।
- सर्व-वशङ्कर।
- सर्व-रञ्जिन्।
- सर्वोन्मादिन्।
- सर्वार्थ-साधिन्।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरण।
- सर्व-मन्त्र-मय।
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्कर।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिन्।
- सम्प्रदाय-योगिन्।।५९९
- सर्व-सिद्धि-प्रद।

- सर्व-सम्पत्प्रद।
- सर्व-प्रियङ्कर।
- सर्व-मङ्गल-कारिन्।
- सर्व-काम-प्रद।
- सर्व-दुःख-विमोचिन्।
- सर्व-मृत्यु-प्रशमन।
- सर्व-विघ्न-निवारिन्।
- सर्वाङ्ग-सुन्दर।
- सर्व-सौभाग्य-दायिन्।
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिन्।
- कुलोत्तीर्ण-योगिन्।।६८१
- सर्वज्ञ।
- सर्व-शक्ते।
- सर्वैश्वर्य-प्रद।
- सर्व-ज्ञान-मय।
- सर्व-व्याधि-विनाशिन्।
- सर्वाधार-स्वरूप।
- सर्व-पाप-हर।
- सर्वानन्द-मय।
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिन्।
- सर्वेप्सित-प्रद।
- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिन्।
- निगर्भ-योगिन्।।७५४
- वशिन्।
- कामेश्वर।
- मोदिन्।
- विमलारुण।
- जयिन्।
- सर्वेश्वर।
- कौलिन्।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिन्।
- रहस्य-योगिन्।।७९०
- बाणिन्।
- चापिन्।
- पाशिन्नंकुशिन्।।७९९
- महा-कामेश्वर।
- महा-वज्रेश्वर।
- महा-भग-मालिन्।
- महा-श्रीसुन्दर।
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिनति-रहस्य-योगिन् ।।८४०
- श्रीश्री-महा-भट्टारक।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिन्।
- परापर-रहस्य-योगिन्।।८६७
- त्रिपुर।
- त्रिपुरेश।
- त्रिपुर-सुन्दर।
- त्रिपुर-वासिन्।
- त्रिपुराश्रीस्त्रिपुर-मालिन्।
- त्रिपुरा-सिद्ध।
- त्रिपुराम्ब।
- महा-त्रिपुर-सुन्दर ।।९११
- महा-महेश्वर।
- महा-महा-राज।

- महा-महा-शक्ते
- महा-महा-गुप्त।
- महा-महा-ज्ञप्ते।
- महा-महानन्द।
- महा-महा-स्पन्द।
- महा-महाशय।
- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-सम्राज।९७२
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।।९८१

•••

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा–

।।विनियोग।।

श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता-प्रसादेन मम देह-शुद्धौ-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शिव-सम्बुद्ध्यन्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् कराङ्ग-न्यास और षडङ्ग-न्यास कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका मानस-पूजन करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

ललितारुण - सुस्मेर - द्युमन् मधुरकोष्णमा।
मूर्त्या दृशा च वीट्या च, संरक्तं श्रीशिवं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

तथा सिद्ध्यति ते भक्तो, यच्छरीरस्य पार्वति!।
तप्त-काञ्चन-गौरस्य, कदापि क्वापि न क्षयः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे-

(१) गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शिव-सम्बुद्ध्यन्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शिव-सम्बुद्ध्यन्त'-माला-मन्त्र-जपेन श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) श्रीहलिनी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता-प्रसादेन 'देह-शुद्धौ'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् पृथिवी–हमारे लिए शान्ति–दायिनी हो, अन्तरिक्ष और दिव्याकाश–कल्याणकारी हों, देव-गण–अभय देनेवाले हों, दिशाएँ, विदिशाएँ और ऊर्ध्व दिशाएँ–मङ्गल-मय हों तथा जल-राशियाँ (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या नौ सौ इक्यासी है।

यह **'सम्बुद्ध्यन्त-माला'** है।

अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में **सम्बोधन** (आवाहन) की विभक्ति है।

अतः **मन्त्र-जप** के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता का मैं **आवाहन** कर रहा हूँ,

यह भावना मन में करता जाए।

बाह्य-पूजन में प्रति सम्बोधन पर देवता के प्रति हाथ जोड़ता जाए।

(७)

शुद्ध-शिव-नमोऽन्त-माला

सप्तमी (शुक्ल-पक्ष)	'स'	नवमी (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध-शिव-नमोऽन्त-माला-मन्त्रस्य जिह्वेन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीइन्द्रादित्य ऋषिः। जगती छन्दः। भोगद-सकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-महा-भट्टारक देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। लोह-सिद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

जिह्वेन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीइन्द्रादित्य-ऋषये नमः शिरसि। जगती-छन्दसे नमः मुखे। भोगद-सकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। लोह-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

ललितारुण - सुस्मेर - द्युमन् मधुरकोष्णमा।
मूर्त्या दृशा च वीट्या च, संरक्तं श्रीशिवं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

त्वद्-भक्त-हस्त-स्पर्शेन, लोहोऽप्यष्ट-विधः शिवे!।
काञ्चनी-भावमाप्नोति, यथा स्याच्छिव-तुल्यता।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२

ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि।।२२
- हृदय-देवाय नमः पादुकां पूजयामि।
- शिरो-देवाय नमः पादुकां पूजयामि।
- शिखा-देवाय नमः पादुकां पूजयामि।
- कवच-देवाय नमः पादुकां पूजयामि।
- नेत्र-देवाय नमः पादुकां पूजयाम्यस्त्र-देवाय नमः पादुकां पूजयामि।।१०७
- कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- भग-मालिने नमः पादुकां पूजयामि।
- नित्य-क्लिन्नाय नमः पादुकां पूजयामि।
- भेरुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि।
- वह्नि-वासिने नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-वज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- शिवा-दूताय नमः पादुकां पूजयामि।
- त्वरिताय नमः पादुकां पूजयामि।
- कुल-सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि।
- नित्याय नमः पादुकां पूजयामि।
- नील-पताकाय नमः पादुकां पूजयामि।
- विजयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-मङ्गलाय नमः पादुकां पूजयामि।
- ज्वाला-मालिने नमः पादुकां पूजयामि।
- चित्राय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-नित्याय नमः पादुकां पूजयामि।।३२९
- परमेश्वर-परमेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- मित्रेश-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- षष्ठीश-मयाय नमः पादुकां पूजयाम्युड्डीश-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- चर्यानाथ-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- लोपामुद्रा - मयाय नमः पादुकां पूजयाम्यगस्त्य - मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- काल-तापन-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- धर्माचार्य-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- मुक्तकेशीश्वर - मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- दीप-कला-नाथ-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- विष्णु-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- प्रभाकर - देव - मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- तेजो-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- मनोज-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- कल्याण - देव - मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- रत्न - देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- वासुदेव - मयाय नमः पादुकां पूजयामि।।६२४
- श्रीरामानन्द - मयाय नमः पादुकां पूजयाम्यणिमा-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।
- लघिमा-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।

- महिमा - सिद्धये नमः पादुकां पूजयामीशित्व-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।
- वशित्व-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।
- प्राकाम्य-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।
- भुक्ति-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामीच्छा-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।
- प्राप्ति-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व - काम - सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।।७८६
- ब्राह्माय नमः पादुकां पूजयामि।
- माहेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- कौमाराय नमः पादुकां पूजयामि।
- वैष्णवाय नमः पादुकां पूजयामि।
- वाराहाय नमः पादुकां पूजयामि।
- माहेन्द्राय नमः पादुकां पूजयामि।
- चामुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-लक्ष्म्ये नमः पादुकां पूजयामि।।८९०
- सर्व-संक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-विद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाकर्षिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-वशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-महांकुशाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-खेचराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-बीजाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-योनये नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-त्रिखण्डाय नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।
- प्रकट - योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।१०७३
- कामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- बुद्ध्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयाम्यहङ्काराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- शब्दाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- स्पर्शाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- रूपाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- रसाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- गन्धाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- चित्ताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- धैर्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- स्मृत्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- नामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- बीजाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयाम्यात्माकर्षणाय नमः पादुकां पूजयाम्यमृताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- शरीराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाशा-परि-पूरक-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।।१३३६
- गुप्त-योगिने नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-कुसुमाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मेखलाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मदनाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मदनातुराय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-रेखाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-वेगिने नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्गांकुशाय नमः

पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मालिने नमः पादुकां पूजयामि।

- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।
- गुप्ततर - योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।१५०४
- सर्व-संक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-विद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाकर्षिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाह्लादिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सम्मोहिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-स्तम्भिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-जृम्भिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-वशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-रञ्जिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वार्थ-साधिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-मन्त्र-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व - द्वन्द्व - क्षयङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सम्प्रदाय - योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।१७५४
- सर्व-सिद्धि-प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सम्पत्प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-प्रियङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-मङ्गल-कारिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-काम-प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व - दुःख - विमोचिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व - मृत्यु - प्रशमनाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व - विघ्न - निवारिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाङ्ग-सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व - सौभाग्य - दायिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।
- कुलोत्तीर्ण - योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।१९५६
- सर्वज्ञाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-शक्तये नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वैश्वर्य-प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-ज्ञान-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-व्याधि-विनाशिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाधार-स्वरूपाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-पाप-हराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वानन्द-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व - रक्षा - स्वरूपिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वेप्सित-प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि।

- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।
- निगर्भ - योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।२१४९
- वशिने नमः पादुकां पूजयामि।
- कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- मोदिने नमः पादुकां पूजयामि।
- विमलाय नमः पादुकां पूजयाम्यरुणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- जयिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- कौलिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।
- रहस्य - योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।२२८५
- बाणिने नमः पादुकां पूजयामि।
- चापिने नमः पादुकां पूजयामि।
- पाशिने नमः पादुकां पूजयाम्यंकुशिने नमः पादुकां पूजयामि।।२३३३
- महा-कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-वज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-भग-मालिने नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-श्रीसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयाम्यति-रहस्य-योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।२४३३
- श्रीश्री-महा-भट्टारकाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।
- परापर - रहस्य - योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।२४९०
- त्रिपुराय नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुरेशाय नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुर-सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुर-वासिने नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुरा-श्रिये नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुर-मालिने नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुरा-सिद्धाय नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुराम्बाय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा - त्रिपुर - सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि।।२६२४
- महा-महेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-राजाय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-शक्तये नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-गुप्ताय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-ज्ञप्तये नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-नन्दाय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-स्पन्दाय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महाशयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-सम्राजाय नमः पादुकां पूजयामि।।२७७५
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।। २७८४

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में **जप-समर्पण** करे। यथा–

श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता-प्रसादेन मम लोह-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शिव-नमोऽन्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् **कराङ्ग-न्यास** और **षडङ्ग-न्यास** कर देवता का पुनः **ध्यान** कर पूर्व-वत् उनका **मानस-पूजन** करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

ललितारुण - सुस्मेर - द्युमन् मधुरकोष्णमा।
मूर्त्या दृशा च वीट्या च, संरक्तं श्रीशिवं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

त्वद्-भक्त-हस्त-स्पर्शेन, लोहोऽप्यष्ट-विधः शिवे!।
काञ्चनी-भावमाप्नोति, यथा स्याच्छिव-तुल्यता।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे–

(१) गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।

सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शिव-नमोऽन्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शिव-नमोऽन्त'-माला-मन्त्र-जपेन श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) श्रीसरस्वती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीसर्वज्ञ-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता-प्रसादेन 'लोह'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् पृथिवी–हमारे लिए शान्ति-दायिनी हो, अन्तरिक्ष और दिव्याकाश–कल्याणकारी हों, देव-गण–अभय देनेवाले हों, दिशाएँ, विदिशाएँ और ऊर्ध्व दिशाएँ–मङ्गल-मय हों तथा जल-राशियाँ (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या दो सहस्र सात सौ चौरासी है। यह 'नमोऽन्त-माला' है अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में नमः पादुकां पूजयामि है। अतः मन्त्र-जप के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति मन में नमस्कार की भावना करता जाए। बाह्य-पूजन में प्रति नमः पादुकां पूजयामि पर देवता के प्रति पुष्पाञ्जलि देता जाए।

(८)

शुद्ध-शिव-स्वाहान्त-माला

अष्टमी (शुक्ल-पक्ष)	'क'	अष्टमी (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध - शिव - स्वाहान्त - माला - मन्त्रस्य चक्षुरिन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीविवस्वदादित्य ऋषिः। अति-जगती छन्दः। तामस-ककार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-महा-भट्टारक देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। अणिमाद्यष्टैश्वर्य-सिद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

चक्षुरिन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीविवस्वदादित्य-ऋषये नमः शिरसि। अति-जगती-छन्दसे नमः मुखे। तामस-ककार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। अणिमाद्यष्टैश्वर्य-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

ललितारुण - सुस्मेर - द्युमन् मधुरकोष्णमा।
मूर्त्या दृशा च वीट्या च, संरक्तं श्रीशिवं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

येऽष्टाणुत्व-महत्त्वाद्याः, स्वेच्छा-मात्र प्रकल्पिताः।
तव भक्त-शरीराणां, ते स्युर्नैसर्गिका गुणाः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१
ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२
ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३
ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दराय स्वाहा।।१५
- हृदय-देवाय स्वाहा।
- शिरो-देवाय स्वाहा।
- शिखा-देवाय स्वाहा।
- कवच-देवाय स्वाहा।
- नेत्र-देवाय स्वाहास्त्र-देवाय स्वाहा।।५८
- कामेश्वराय स्वाहा।
- भग-मालिने स्वाहा।
- नित्य-क्लिन्नाय स्वाहा।
- भेरुण्डाय स्वाहा।
- वह्नि-वासिने स्वाहा।
- महा-वज्रेश्वराय स्वाहा।
- शिवा-दूताय स्वाहा।
- त्वरिताय स्वाहा।
- कुल-सुन्दराय स्वाहा।
- नित्याय स्वाहा।
- नील-पताकाय स्वाहा।
- विजयाय स्वाहा।
- सर्व-मङ्गलाय स्वाहा।
- ज्वाला-मालिने स्वाहा।
- चित्राय स्वाहा।
- महा-नित्याय स्वाहा।।१६८
- परमेश्वर-परमेश्वराय स्वाहा।
- मित्रेश-मयाय स्वाहा।
- षष्ठीश-मयाय स्वाहोड्डीश-मयाय स्वाहा।
- चर्यानाथ-मयाय स्वाहा।
- लोपामुद्रा-मयाय स्वाहागस्त्य-मयाय स्वाहा।
- काल-तापन-मयाय स्वाहा।
- धर्माचार्य-मयाय स्वाहा।
- मुक्तकेशीश्वर-मयाय स्वाहा।
- दीप-कला-नाथ-मयाय स्वाहा।
- विष्णु-देव-मयाय स्वाहा।
- प्रभाकर-देव-मयाय स्वाहा।
- तेजो-देव-मयाय स्वाहा।
- मनोज-देव-मयाय स्वाहा।
- कल्याण-देव-मयाय स्वाहा।
- रत्न-देव-मयाय स्वाहा।
- वासुदेव-मयाय स्वाहा।।३३७
- श्रीरामानन्द-मयाय स्वाहाणिमा-सिद्धये स्वाहा।
- लघिमा-सिद्धये स्वाहा।
- महिमा-सिद्धये स्वाहेशित्व-सिद्धये स्वाहा।
- वशित्व-सिद्धये स्वाहा।
- प्राकाम्य-सिद्धये स्वाहा।
- भुक्ति-सिद्धये स्वाहेच्छा-सिद्धये स्वाहा।
- प्राप्ति-सिद्धये स्वाहा।
- सर्व-काम-सिद्धये स्वाहा।।४२२
- ब्राह्माय स्वाहा।
- माहेश्वराय स्वाहा।
- कौमाराय स्वाहा।
- वैष्णवाय स्वाहा।
- वाराहाय स्वाहा।
- माहेन्द्राय स्वाहा।

- चामुण्डाय स्वाहा।
- महा-लक्ष्म्यै स्वाहा।।४७०
- सर्व-संक्षोभिणे स्वाहा।
- सर्व-विद्राविणे स्वाहा।
- सर्वाकर्षिणे स्वाहा।
- सर्व-वशङ्कराय स्वाहा।
- सर्वोन्मादिने स्वाहा।
- सर्व-महांकुशाय स्वाहा।
- सर्व-खेचराय स्वाहा।
- सर्व-बीजाय स्वाहा।
- सर्व-योनये स्वाहा।
- सर्व-त्रिखण्डाय स्वाहा।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिने स्वाहा।
- प्रकट-योगिने स्वाहा।।५६९
- कामाकर्षणाय स्वाहा।
- बुद्ध्याकर्षणाय स्वाहाहङ्काराकर्षणाय स्वाहा।
- शब्दाकर्षणाय स्वाहा।
- स्पर्शाकर्षणाय स्वाहा।
- रूपाकर्षणाय स्वाहा।
- रसाकर्षणाय स्वाहा।
- गन्धाकर्षणाय स्वाहा।
- चित्ताकर्षणाय स्वाहा।
- धैर्याकर्षणाय स्वाहा।
- स्मृत्याकर्षणाय स्वाहा।
- नामाकर्षणाय स्वाहा।
- बीजाकर्षणाय स्वाहात्माकर्षणाय स्वाहामृताकर्षणाय स्वाहा।
- शरीराकर्षणाय स्वाहा।
- सर्वाशा-परि-पूरक-चक्र-स्वामिने स्वाहा।।
- गुप्त-योगिने स्वाहानङ्ग-कुसुमाय स्वाहानङ्ग-मेखलाय स्वाहानङ्ग-मदनाय स्वाहानङ्ग-मदनातुराय स्वाहानङ्ग-रेखाय स्वाहानङ्ग-वेगिने स्वाहानङ्गांकुशाय स्वाहानङ्ग-मालिने स्वाहा।
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिने स्वाहा।
- गुप्ततर-योगिने स्वाहा।।८०४
- सर्व-संक्षोभिणे स्वाहा।
- सर्व-विद्राविणे स्वाहा।
- सर्वाकर्षिणे स्वाहा।
- सर्वाह्लादिने स्वाहा।
- सर्व-सम्मोहिने स्वाहा।
- सर्व-स्तम्भिने स्वाहा।
- सर्व-जृम्भिणे स्वाहा।
- सर्व-वशङ्कराय स्वाहा।
- सर्व-रञ्जिने स्वाहा।
- सर्वोन्मादिने स्वाहा।
- सर्वार्थ-साधिने स्वाहा।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरणाय स्वाहा।
- सर्व-मन्त्र-मयाय स्वाहा।
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्कराय स्वाहा।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिने स्वाहा।
- सम्प्रदाय-योगिने स्वाहा।।९४२
- सर्व-सिद्धि-प्रदाय स्वाहा।
- सर्व-सम्पत्प्रदाय स्वाहा।
- सर्व-प्रियङ्कराय स्वाहा।

- सर्व-मङ्गल-कारिणे स्वाहा।
- सर्व-काम-प्रदाय स्वाहा।
- सर्व-दुःख-विमोचिने स्वाहा।
- सर्व-मृत्यु-प्रशमनाय स्वाहा।
- सर्व-विघ्न-निवारिणे स्वाहा।
- सर्वाङ्ग-सुन्दराय स्वाहा।
- सर्व-सौभाग्य-दायिने स्वाहा।
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिने स्वाहा।
- कुलोत्तीर्ण-योगिने स्वाहा।।१०६०
- सर्वज्ञाय स्वाहा।
- सर्व-शक्तये स्वाहा।
- सर्वैश्वर्य-प्रदाय स्वाहा।
- सर्व-ज्ञान-मयाय स्वाहा।
- सर्व-व्याधि-विनाशिने स्वाहा।
- सर्वाधार-स्वरूपाय स्वाहा।
- सर्व-पाप-हराय स्वाहा।
- सर्वानन्द-मयाय स्वाहा।
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिणे स्वाहा।
- सर्वेप्सित-प्रदाय स्वाहा।
- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिने स्वाहा।
- निगर्भ-योगिने स्वाहा।।११६९
- वशिने स्वाहा।
- कामेश्वराय स्वाहा।
- मोदिने स्वाहा।
- विमलाय स्वाहारुणाय स्वाहा।
- जयिने स्वाहा।
- सर्वेश्वराय स्वाहा।
- कौलिने स्वाहा।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिने स्वाहा।
- रहस्य-योगिने स्वाहा।।१२३५
- बाणिने स्वाहा।
- चापिने स्वाहा।
- पाशिने स्वाहांकुशिने स्वाहा।।१२५५
- महा-कामेश्वराय स्वाहा।
- महा-वज्रेश्वराय स्वाहा।
- महा-भग-मालिने स्वाहा।
- महा-श्रीसुन्दराय स्वाहा।
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिने स्वाहाति-रहस्य-योगिने स्वाहा।।१३१३
- श्रीश्री-महा-भट्टारकाय स्वाहा।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिने स्वाहा।
- परापर-रहस्य-योगिने स्वाहा।।१३४९
- त्रिपुराय स्वाहा।
- त्रिपुरेशाय स्वाहा।
- त्रिपुर-सुन्दराय स्वाहा।
- त्रिपुर-वासिने स्वाहा।
- त्रिपुरा-श्रियै स्वाहा।
- त्रिपुर-मालिने स्वाहा।
- त्रिपुरा-सिद्धाय स्वाहा।
- त्रिपुराम्बाय स्वाहा।
- महा-त्रिपुर-सुन्दराय स्वाहा।।१४२०
- महा-महेश्वराय स्वाहा।
- महा-महा-राजाय स्वाहा।
- महा-महा-शक्तये स्वाहा।

- महा-महा-गुप्ताय स्वाहा।
- महा-महा-ज्ञप्तये स्वाहा।
- महा-महा-नन्दाय स्वाहा।
- महा-महा-स्पन्दाय स्वाहा।
- महा-महाशयाय स्वाहा।
- महा - महा - श्रीचक्र-नगर-सम्राजाय स्वाहा।।१५०८
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।। १५१७

•••

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा–

।।विनियोग।।

श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-देवता-प्रसादेन मम अणिमाद्यष्टैश्वर्य-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शिव-स्वाहान्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् कराङ्ग-न्यास और षडङ्ग-न्यास कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका मानस-पूजन करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

ललितारुण - सुस्मेर - द्युमन् मधुरकोष्णमा।
मूर्त्या दृशा च वीट्या च, संरक्तं श्रीशिवं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

येऽष्टाणुत्व-महत्त्वाद्याः, स्वेच्छा-मात्र प्रकल्पिताः।
तव भक्त-शरीराणां, ते स्युर्नैसर्गिका गुणाः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे-

(१) गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शिव-स्वाहान्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शिव-स्वाहान्त'-माला-मन्त्र-जपेन श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) 'श्रीकमला-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता-प्रसादेन 'अणिमाद्यष्टैश्वर्य'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् पृथिवी–हमारे लिए शान्ति–दायिनी हो, अन्तरिक्ष और दिव्याकाश–कल्याणकारी हों, देव-गण–अभय देनेवाले हों, दिशाएँ, विदिशाएँ और ऊर्ध्व दिशाएँ–मङ्गल-मय हों तथा जल-राशियाँ (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या एक सहस्त्र पाँच सौ सत्रह है।

यह 'स्वाहान्त-माला' है ।

अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में स्वाहा है।

अतः मन्त्र-जप के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति

चित्-कुण्ड में हवन की भावना करता जाए।

बाह्य-पूजन में प्रति स्वाहा पर

हवन-कुण्ड में देवता के प्रति घृत की आहुतियाँ देता जाए।

(९)

शुद्ध-शिव-तर्पणान्त-माला

नवमी (शुक्ल-पक्ष)	'ह'	सप्तमी (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध-शिव-तर्पणान्त-माला-मन्त्रस्य त्वगिन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीपूषादित्य ऋषिः। शक्वरी छन्दः। मोक्षद-हकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-महा-भट्टारक देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं।सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः।क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। सर्व-वश्य-सिद्धौः विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

त्वगिन्द्रियाधिष्ठायि श्रीपूषादित्य-ऋषये नमः शिरसि। शक्वरी-छन्दसे नमः मुखे। मोक्षद-हकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। सर्व-वश्य-सिद्धौः विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

ललितारुण - सुस्मेर - द्युमन् मधुरकोष्णमा।
मूर्त्या दृशा च वीट्या च, संरक्तं श्रीशिवं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

शरीरमर्थं प्राणांश्च, निवेद्य निज-भृत्य-वत्।
तव भक्तान् निषेवन्ते, वशी-भूता नृपादयः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीहर-वल्लभा--ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२

ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दरं तर्पयामि।।१६
- हृदय-देवं तर्पयामि।
- शिरो-देवं तर्पयामि।
- शिखा-देवं तर्पयामि।
- कवच-देवं तर्पयामि।
- नेत्र-देवं तर्पयाम्यस्त्र-देवं तर्पयामि।।६५
- कामेश्वरं तर्पयामि।
- भग-मालिनं तर्पयामि।
- नित्य-क्लिन्नं तर्पयामि।
- भेरुण्डं तर्पयामि।
- वह्नि-वासिनं तर्पयामि।
- महा-वज्रेश्वरं तर्पयामि।
- शिवा-दूतं तर्पयामि।
- त्वरितं तर्पयामि।
- कुल-सुन्दरं तर्पयामि।
- नित्यं तर्पयामि।
- नील-पताकं तर्पयामि।
- विजयं तर्पयामि।
- सर्व-मङ्गलं तर्पयामि।
- ज्वाला-मालिनं तर्पयामि।
- चित्रं तर्पयामि।
- महा-नित्यं तर्पयामि।।१९४
- परमेश्वर-परमेश्वरं तर्पयामि।
- मित्रेश-मयं तर्पयामि।
- षष्ठीश-मयं तर्पयाम्युड्डीश-मयं तर्पयामि।
- चर्यानाथ-मयं तर्पयामि।
- लोपामुद्रा-मयं तर्पयाम्यगस्त्य-मयं तर्पयामि।
- काल-तापन-मयं तर्पयामि।
- धर्माचार्य-मयं तर्पयामि।
- मुक्त-केशीश्वर-मयं तर्पयामि।
- दीप-कला-नाथ-मयं तर्पयामि।
- विष्णु-देव-मयं तर्पयामि।
- प्रभाकर-देव-मयं तर्पयामि।
- तेजो-देव-मयं तर्पयामि।
- मनोज-देव-मयं तर्पयामि।
- कल्याण-देव-मयं तर्पयामि।
- रत्न-देव-मयं तर्पयामि।
- वासुदेव-मयं तर्पयामि।।३८१
- श्रीरामानन्द-मयं तर्पयाम्यणिमा-सिद्धिं तर्पयामि।
- लघिमा-सिद्धिं तर्पयामि।
- महिमा-सिद्धिं तर्पयामीशित्व-सिद्धं तर्पयामि।
- वशित्व-सिद्धिं तर्पयामि।
- प्राकाम्य-सिद्धिं तर्पयामि।
- भुक्ति-सिद्धिं तर्पयामीच्छा-सिद्धिं तर्पयामि।
- प्राप्ति-सिद्धिं तर्पयामि।
- सर्व-काम-सिद्धिं तर्पयामि।४७७
- ब्राह्मं तर्पयामि।
- माहेश्वरं तर्पयामि।
- कौमारं तर्पयामि।

- वैष्णवं तर्पयामि।
- वाराहं तर्पयामि।
- माहेन्द्रं तर्पयामि।
- चामुण्डं तर्पयामि।
- महा-लक्ष्मीं तर्पयामि।।५३४
- सर्व-संक्षोभिणं तर्पयामि।
- सर्व-विद्राविणं तर्पयामि।
- सर्वाकर्षिणं तर्पयामि।
- सर्व-वशङ्करं तर्पयामि।
- सर्वोन्मादिनं तर्पयामि।
- सर्व-महांकुशं तर्पयामि।
- सर्व-खेचरं तर्पयामि।
- सर्व-बीजं तर्पयामि।
- सर्व-योनिं तर्पयामि।
- सर्व-त्रिखण्डं तर्पयामि।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- प्रकट-योगिनं तर्पयामि।।६५१
- कामाकर्षणं तर्पयामि।
- बुद्ध्याकर्षणं तर्पयाम्यहङ्काराकर्षणं तर्पयामि।
- शब्दाकर्षणं तर्पयामि।
- स्पर्शाकर्षणं तर्पयामि।
- रूपाकर्षणं तर्पयामि।
- रसाकर्षणं तर्पयामि।
- गन्धाकर्षणं तर्पयामि।
- चित्ताकर्षणं तर्पयामि।
- धैर्याकर्षणं तर्पयामि।
- स्मृत्याकर्षणं तर्पयामि।
- नामाकर्षणं तर्पयामि।
- बीजाकर्षणं तर्पयाम्यात्माकर्षणं तर्पयाम्यमृताकर्षणं तर्पयामि।
- शरीराकर्षणं तर्पयामि।
- सर्वाशा - परि - पूरक - चक्र - स्वामिनं तर्पयामि।।८१३
- गुप्त-योगिनं तर्पयाम्यनङ्ग-कुसुमं तर्पयाम्यनङ्ग-मेखलं तर्पयाम्यनङ्ग-मदनं तर्पयाम्यनङ्ग-मदनातुरं तर्पयाम्यनङ्ग - रेखं तर्पयाम्यनङ्ग - वेगिनं तर्पयाम्यनङ्गांकुशं तर्पयाम्यनङ्ग-मालिनं तर्पयामि।
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- गुप्ततर-योगिनं तर्पयामि।।९२०
- सर्व-संक्षोभिणं तर्पयामि।
- सर्व-विद्राविणं तर्पयामि।
- सर्वाकर्षिणं तर्पयामि।
- सर्वाह्लादिनं तर्पयामि।
- सर्व-सम्मोहिनं तर्पयामि।
- सर्व-स्तम्भिनं तर्पयामि।
- सर्व-जृम्भिणं तर्पयामि।
- सर्व-वशङ्करं तर्पयामि।
- सर्व-रञ्जिनं तर्पयामि।
- सर्वोन्मादिनं तर्पयामि।
- सर्वार्थ-साधिनं तर्पयामि।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरणं तर्पयामि।
- सर्व-मन्त्र-मयं तर्पयामि।
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करं तर्पयामि।

- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- सम्प्रदाय-योगिनं तर्पयामि।।१०८६
- सर्व-सिद्धि-प्रदं तर्पयामि।
- सर्व-सम्पत्प्रदं तर्पयामि।
- सर्व-प्रियङ्करं तर्पयामि।
- सर्व-मङ्गल-कारिणं तर्पयामि।
- सर्व-काम-प्रदं तर्पयामि।
- सर्व-दुःख-विमोचिनं तर्पयामि।
- सर्व-मृत्यु-प्रशमनं तर्पयामि।
- सर्व-विघ्न-निवारिणं तर्पयामि।
- सर्वाङ्ग-सुन्दरं तर्पयामि।
- सर्व-सौभाग्य-दायिनं तर्पयामि।
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- कुलोत्तीर्ण-योगिनं तर्पयामि।।१२२२
- सर्वज्ञं तर्पयामि।
- सर्व-शक्तिं तर्पयामि।
- सर्वैश्वर्य-प्रदं तर्पयामि।
- सर्व-ज्ञान-मयं तर्पयामि।
- सर्व-व्याधि-विनाशिनं तर्पयामि।
- सर्वाधार-स्वरूपं तर्पयामि।
- सर्व-पाप-हरं तर्पयामि।
- सर्वानन्द-मयं तर्पयामि।
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिणं तर्पयामि।
- सर्वेप्सित-प्रदं तर्पयामि।
- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- निगर्भ-योगिनं तर्पयामि।।१३४७
- वशिनं तर्पयामि।
- कामेश्वरं तर्पयामि।
- मोदिनं तर्पयामि।
- विमलं तर्पयाम्यरुणं तर्पयामि।
- जयिनं तर्पयामि।
- सर्वेश्वरं तर्पयामि।
- कौलिनं तर्पयामि।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- रहस्य-योगिनं तर्पयामि।।१४२९
- बाणिनं तर्पयामि।
- चापिनं तर्पयामि।
- पाशिनं तर्पयाम्यंकुशिनं तर्पयामि।।१४५७
- महा-कामेश्वरं तर्पयामि।
- महा-वज्रेश्वरं तर्पयामि।
- महा-भग-मालिनं तर्पयामि।
- महा-श्रीसुन्दरं तर्पयामि।
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिनं तर्पयाम्यति-रहस्य-योगिनं तर्पयामि।।१५२४
- श्रीश्री-महा-भट्टारकं तर्पयामि।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- परापर-रहस्य-योगिनं तर्पयामि।।१५६५
- त्रिपुरं तर्पयामि।
- त्रिपुरेशं तर्पयामि।
- त्रिपुर-सुन्दरं तर्पयामि।
- त्रिपुर-वासिनं तर्पयामि।
- त्रिपुरा-श्रियं तर्पयामि।
- त्रिपुर-मालिनं तर्पयामि।

- त्रिपुरा-सिद्धं तर्पयामि।
- त्रिपुराम्बं तर्पयामि।
- महा-त्रिपुर-सुन्दरं तर्पयामि।।१६४८
- महा-महेश्वरं तर्पयामि।
- महा-महा-राजं तर्पयामि।
- महा-महा-शक्तिं तर्पयामि।
- महा-महा-गुप्तं तर्पयामि।
- महा-महा-ज्ञप्तिं तर्पयामि।
- महा-महा-नन्दं तर्पयामि।
- महा-महा-स्पन्दं तर्पयामि।
- महा-महाशयं तर्पयामि।
- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-सम्राजं तर्पयामि।
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।।१७५४

•••

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में **जप-समर्पण** करे। यथा–

।।विनियोग।।

श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता-प्रसादेन मम सर्व-वश्य-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शिव-तर्पणान्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् **कराङ्ग-न्यास** और **षडङ्ग-न्यास** कर देवता का पुनः **ध्यान** कर पूर्व-वत् उनका **मानस-पूजन** करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

ललितारुण - सुस्मेर - द्युमन् मधुरकोष्णमा।
मूर्त्या दृशा च वीट्या च, संरक्तं श्रीशिवं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

शरीरमर्थं प्राणांश्च, निवेद्य निज-भृत्य-वत्।
तव भक्तान् निषेवन्ते, वशी-भूता नृपादयः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीहर-वल्लभा--ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे—

(१) गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।

सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शिव-तर्पणान्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शिव-तर्पणान्त'-माला-मन्त्र-जपेन श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) श्रीहर-वल्लभा-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीहरनाथ-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता-प्रसादेन 'सर्व-वश्य'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् **पृथिवी**–हमारे लिए शान्ति–दायिनी हो, **अन्तरिक्ष और दिव्याकाश**–कल्याणकारी हों, **देव-गण**–अभय देनेवाले हों, **दिशाएँ, विदिशाएँ** और **ऊर्ध्व दिशाएँ**–मङ्गल-मय हों तथा जल-राशियाँ (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। **ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति** हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या **एक सहस्त्र सात सौ चौवन** है।
यह '**तर्पणान्त-माला**' है अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में **तर्पयामि** है।
अतः **मन्त्र-जप** के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति
कुल-कुण्डलिनी में **तर्पण** की भावना करता जाए।
बाह्य-पूजन में प्रति **तर्पयामि** पर
कुल-कुण्डलिनी में
अमृत का तर्पण कराता जाए।

(१०)

शुद्ध-शिव-जयान्त-माला

दशमी (शुक्ल-पक्ष)	'ल'	षष्ठी (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध-शिव-जयान्त-माला-मन्त्रस्य श्रोत्रेन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीसवित्रादित्य ऋषिः। अति-शक्वरी छन्दः। तामस-लकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-महा-भट्टारक देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। सर्वाकर्षण-सिद्धौः विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

श्रोत्रेन्द्रियाधिष्ठायि-श्रीसवित्रादित्य-ऋषये नमः शिरसि। अति-शक्वरी-छन्दसे नमः मुखे। तामस-लकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-महा-भट्टारक- देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। सर्वाकर्षण-सिद्धौः विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

ललितारुण - सुस्मेर - द्युमन् मधुरकोष्णमा।
मूर्त्या दृशा च वीट्या च, संरक्तं श्रीशिवं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

लोह - प्राकार - संगुप्ता, निगडैर्यन्त्रिता अपि।
त्वद्भक्तैः कृष्यमाणाश्च समायान्त्येव योषितः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१
ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२
ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३
ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दर जय जय।।१६
- हृदय-देव जय जय।
- शिरो-देव जय जय।
- शिखा-देव जय जय।
- कवच-देव जय जय।
- नेत्र-देव जय जयास्त्र-देव जय जय।।६५
- कामेश्वर जय जय।
- भग-मालिन् जय जय।
- नित्य-क्लिन्न जय जय।
- भेरुण्ड जय जय।
- वह्नि-वासिन् जय जय।
- महा-वज्रेश्वर जय जय।
- शिवा-दूत जय जय।
- त्वरित जय जय।
- कुल-सुन्दर जय जय।
- नित्य जय जय।
- नील-पताक जय जय।
- विजय जय जय।
- सर्व-मङ्गल जय जय।
- ज्वाला-मालिन् जय जय।
- चित्र जय जय।
- महा-नित्य जय जय।।१९१
- परमेश्वर-परमेश्वर जय जय।
- मित्रेश-मय जय जय।
- षष्ठीश-मय जय जयोड्डीश-मय जय जय।
- चर्यानाथ-मय जय जय।
- लोपामुद्रा-मय जय जयागस्त्य-मय जय जय।
- काल-तापन-मय जय जय।
- धर्माचार्य-मय जय जय।
- मुक्तकेशीश्वर-मय जय जय।
- दीप-कला-नाथ-मय जय जय।
- विष्णु-देव-मय जय जय।
- प्रभाकर-देव-मय जय जय।
- तेजो-देव-मय जय जय।
- मनोज-देव-मय जय जय।
- कल्याण-देव-मय जय जय।
- रत्न-देव-मय जय जय।
- वासुदेव-मय जय जय।।३७८
- श्रीरामानन्द-मय जय जयाणिमा-सिद्धे जय जय।
- लघिमा-सिद्धे जय जय।
- महिमा-सिद्धे जय जयेशित्व-सिद्धे जय जय।
- वशित्व-सिद्धे जय जय।
- प्राकाम्य-सिद्धे जय जय।
- भुक्ति-सिद्धे जय जयेच्छा-सिद्धे जय जय।
- प्राप्ति-सिद्धे जय जय।
- सर्व-काम-सिद्धे जय जय।।४७४
- ब्राह्म जय जय।
- माहेश्वर जय जय।

- कौमार जय जय।
- वैष्णव जय जय।
- वाराह जय जय।
- माहेन्द्र जय जय।
- चामुण्ड जय जय।
- महा-लक्ष्मि जय जय।।५३१
- सर्व-संक्षोभिन् जय जय।
- सर्व-विद्राविन् जय जय।
- सर्वाकर्षिन् जय जय।
- सर्व-वशङ्कर जय जय।
- सर्वोन्मादिन् जय जय।
- सर्व-महांकुश जय जय।
- सर्व-खेचर जय जय।
- सर्व-बीज जय जय।
- सर्व-योने जय जय।
- सर्व-त्रिखण्ड जय जय।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- प्रकट-योगिन् जय जय।।६४२
- कामाकर्षण जय जय।
- बुद्ध्याकर्षण जय जयाहङ्काराकर्षण जय जय।
- शब्दाकर्षण जय जय।
- स्पर्शाकर्षण जय जय।
- रूपाकर्षण जय जय।
- रसाकर्षण जय जय।
- गन्धाकर्षण जय जय।
- चित्ताकर्षण जय जय।
- धैर्याकर्षण जय जय।
- स्मृत्याकर्षण जय जय।
- नामाकर्षण जय जय।
- बीजाकर्षण जय जयात्माकर्षण जय जयामृताकर्षण जय जय।
- शरीराकर्षण जय जय।
- सर्वाशापरि-पूरक-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- गुप्त-योगिन् जय जय।।८११
- अनङ्ग-कुसुम जय जयानङ्ग-मेखल जय जयानङ्ग-मदन जय जयानङ्ग-मदनातुर जय जयानङ्ग-रेख जय जयानङ्ग-वेगिन् जय जय।।८६६
- अनङ्गांकुश जय जयानङ्ग-मालिन् जय जय।
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- गुप्ततर-योगिन् जय जय।।९०७
- सर्व-संक्षोभिन् जय जय।
- सर्व-विद्राविन् जय जय।
- सर्वाकर्षिन् जय जय।
- सर्वाह्लादिन् जय जय।
- सर्व-सम्मोहिन् जय जय।
- सर्व-स्तम्भिन् जय जय।
- सर्व-जृम्भिन् जय जय।
- सर्व-वशङ्कर जय जय।
- सर्व-रञ्जिन् जय जय।
- सर्वोन्मादिन् जय जय।
- सर्वार्थ-साधिन् जय जय।

- सर्व-सम्पत्ति-पूरण जय जय।
- सर्व-मन्त्र-मय जय जय।
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्कर जय जय।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- सम्प्रदाय-योगिन् जय जय।।१०६१
- सर्व-सिद्धि-प्रद जय जय।
- सर्व-सम्पत्प्रद जय जय।
- सर्व-प्रियङ्कर जय जय।
- सर्व-मङ्गल-कारिन् जय जय।
- सर्व-काम-प्रद जय जय।
- सर्व-दुःख-विमोचिन् जय जय।
- सर्व-मृत्यु-प्रशमन जय जय।
- सर्व-विघ्न-निवारिन् जय जय।
- सर्वाङ्ग-सुन्दर जय जय।
- सर्व-सौभाग्य-दायिन् जय जय।
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- कुलोत्तीर्ण-योगिन् जय जय।।११९१
- सर्वज्ञ जय जय।
- सर्व-शक्ते जय जय।
- सर्वैश्वर्य-प्रद जय जय।
- सर्व-ज्ञान-मय जय जय।
- सर्व-व्याधि-विनाशिन् जय जय।
- सर्वाधार-स्वरूप जय जय।
- सर्व-पाप-हर जय जय।
- सर्वानन्द-मय जय जय।
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिन् जय जय।
- सर्वेप्सित-प्रद जय जय।
- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- निगर्भ-योगिन् जय जय।।१३१२
- वशिन् जय जय।
- कामेश्वर जय जय।
- मोदिन् जय जय।
- विमल जय जयारुण जय जय।
- जयिन् जय जय।
- सर्वेश्वर जय जय।
- कौलिन् जय जय।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- रहस्य-योगिन् जय जय।।१३८८
- बाणिन् जय जय।
- चापिन् जय जय।
- पाशिन् जय जय।
- अंकुशिन् जय जय।।१४१३
- महा-कामेश्वर जय जय।
- महा-वज्रेश्वर जय जय।
- महा-भग-मालिन् जय जय।
- महा-श्रीसुन्दर जय जय।
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- अति-रहस्य-योगिन् जय जय।।१४७८
- श्रीश्री-महा-भट्टारक जय जय।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- परापर-रहस्य-योगिन् जय जय।।१५१७

- त्रिपुर जय जय।
- त्रिपुरेश जय जय।
- त्रिपुर-सुन्दर जय जय।
- त्रिपुर-वासिन् जय जय।
- त्रिपुरा-श्रीः जय जय।
- त्रिपुर-मालिन् जय जय।
- त्रिपुरा-सिद्ध जय जय।
- त्रिपुराम्ब जय जय।
- महा-त्रिपुर-सुन्दर जय जय।।१५९७
- महा-महेश्वर जय जय।
- महा-महा-राज जय जय।
- महा-महा-शक्ते जय जय।
- महा-महा-गुप्त जय जय।
- महा-महा-ज्ञप्ते जय जय।
- महा-महा-नन्द जय जय।
- महा-महा-स्पन्द जय जय।
- महा-महाशय जय जय।
- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-सम्राज जय जय।।१६९४
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ।।१७०३

•••

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा–

।।विनियोग।।

"श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता-प्रसादेन मम सर्वाकर्षण-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शिव-जयान्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् कराङ्ग-न्यास और षडङ्ग-न्यास कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका मानस-पूजन करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

ललितारुण - सुस्मेर - द्युमन् मधुरकोष्णमा।
मूर्त्या दृशा च वीट्या च, संरक्तं श्रीशिवं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

लोह - प्राकार - संगुप्ता, निगडैर्यन्त्रिता अपि।
त्वद्भक्तैः कृष्यमाणाश्च समायान्त्येव योषितः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे–

(१) गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शिव-जयान्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शिव-जयान्त'-माला-मन्त्र-जपेन श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) श्रीलक्ष्मी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीललज्जिह्वा-कामेश्वर-महा-भट्टारक-देवता-प्रसादेन 'सर्वाकर्षण'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् पृथिवी–हमारे लिए शान्ति–दायिनी हो, अन्तरिक्ष और दिव्याकाश–कल्याणकारी हों, देव-गण–अभय देनेवाले हों, दिशाएँ, विदिशाएँ और ऊर्ध्व दिशाएँ–मङ्गल-मय हों तथा जल-राशियाँ (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या एक सहस्त्र सात सौ तीन है।
यह 'जयान्त-माला' है अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में जय जय है।
अतः मन्त्र-जप के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति
जय-जयकार की भावना करता जाए।
बाह्य-पूजन में प्रति जय जय पर पुष्पाञ्जलि छोड़ता जाए।

(११)

शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-सम्बुद्ध्यन्त-माला

एकादशी (शुक्ल-पक्ष)	'ह्रीं'	पञ्चमी (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-सम्बुद्ध्यन्त-माला-मन्त्रस्य अहङ्कार-तत्त्वाधिष्ठायि-श्रीत्वष्ट्रादित्य ऋषिः। अष्टिच्छन्दः। तामस-ह्रीङ्कार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीहिरण्या-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। सर्व-सम्मोहन-सिद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

अहङ्कार-तत्त्वाधिष्ठायि-श्रीत्वष्ट्रादित्य-ऋषये नमः शिरसि। अष्टिच्छन्दसे नमः मुखे। तामस-ह्रीङ्कार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीहिरण्या-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। सर्व-सम्मोहन-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

कुलाकुलाग्नीषोमात्म - क्रिया - ज्ञानैक - रस्यतः,
नित्य - निष्पन्द - संरम्भ - निर्भरानन्द - चिद् - घने।
महा - बिन्दु - महः पीठे, नव्य-दिव्य-रसोज्ज्वलम्,
शिव - शक्त्यात्मकं किञ्चिदद्वैतं दैवतं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

अम्बिके! तव भक्तानामवलोकन - मात्रतः।
कृत्याकृत्य - विमूढाः स्युर्नरा नार्यो नृपादयः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अंनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१
ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२
ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३
ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दरि त्रिपुर-सुन्दर।।१८
- हृदय-देवि हृदय-देव।
- शिरो-देवि शिरो-देव।
- शिखा-देवि शिखा-देव।
- कवच-देवि कवच-देव।
- नेत्र-देवि नेत्र-देवास्त्र-देव्यस्त्र-देव।।६८
- कामेश्वरि कामेश्वर।
- भग-मालिनि भग-मालिन्।
- नित्य-क्लिन्ने नित्य-क्लिन्न।
- भेरुण्डे भेरुण्ड।
- वह्नि-वासिनि वह्नि-वासिन्।
- महा-वज्रेश्वरि महा-वज्रेश्वर।
- शिवा-दूति शिवा-दूत।
- त्वरिते त्वरित।
- कुल-सुन्दरि कुल-सुन्दर।
- नित्ये नित्य।
- नील-पताके नील-पताक।
- विजये विजय।
- सर्व-मङ्गले सर्व-मङ्गल।
- ज्वाला-मालिनि ज्वाला-मालिन्।
- चित्रे चित्र।
- महा-नित्ये महा-नित्य।।१९५
- परमेश्वर-परमेश्वरि परमेश्वरि-परमेश्वर।
- मित्रेश-मयि मित्रेश-मय।
- षष्ठीशमयि षष्ठीश-मयोड्डीशमय्युड्डीश-मय।
- चर्यानाथ-मयि चर्यानाथ-मय।
- लोपामुद्रा-मयि लोपामुद्रा-मयागस्त्यमय्यगस्त्य-मय।
- काल-तापन-मयि काल-तापन-मय।
- धर्माचार्य-मयि धर्माचार्य-मय।
- मुक्तकेशीश्वर-मयि मुक्तकेशीश्वर-मय।
- दीप-कला-नाथ-मयि दीप-कला-नाथ-मय।
- विष्णु-देव-मयि विष्णु-देव-मय।
- प्रभाकर-देव-मयि प्रभाकर-देव-मय।
- तेजो-देव-मयि तेजो-देव-मय।
- मनोज-देव-मयि मनोज-देव-मय।
- कल्याण-देव-मयि कल्याण-देव-मय।
- रत्न-देव-मयि रत्न-देव-मय।
- वासुदेव-मयि वासुदेव-मय।।४२५
- श्रीरामानन्द-मयि श्रीरामानन्द-मयाणिमा-सिद्धेऽणिमा-सिद्ध।
- लघिमा-सिद्धे लघिमा-सिद्ध।
- महिमा-सिद्धे महिमा-सिद्ध।
- ईशित्व-सिद्धे ईशित्व-सिद्ध।
- वशित्व-सिद्धे वशित्व-सिद्ध।
- प्राकाम्य-सिद्धे प्राकाम्य-सिद्ध।
- भुक्ति-सिद्धे भुक्ति-सिद्ध।
- इच्छा-सिद्धे इच्छा-सिद्ध।
- प्राप्ति-सिद्धे प्राप्ति-सिद्ध।

- सर्व-काम-सिद्धे सर्व-काम-सिद्ध।।५३३
- ब्राह्मि ब्राह्म।
- माहेश्वरि माहेश्वर।
- कौमारि कौमार।
- वैष्णवि वैष्णव।
- वाराहि वाराह।
- माहेन्द्रि माहेन्द्र।
- चामुण्डे चामुण्ड।
- महा-लक्ष्मि महा-लक्ष्मि।।५८३
- सर्व-संक्षोभिणि सर्व-संक्षोभिन्।
- सर्व-विद्राविणि सर्व-विद्राविन्।
- सर्वाकर्षिणि सर्वाकर्षिन्।
- सर्व-वशङ्करि सर्व-वशङ्कर।
- सर्वोन्मादिनि सर्वोन्मादिन्।
- सर्व-महांकुशे सर्व-महांकुश।
- सर्व-खेचरि सर्व-खेचर।
- सर्व-बीजे सर्व-बीज।
- सर्व-योने सर्व-योने।
- सर्व-त्रिखण्डे सर्व-त्रिखण्ड।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिनि त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिन्।
- प्रकट-योगिनि प्रकट-योगिन्।।७१५
- कामाकर्षिणि कामाकर्षण।
- बुद्ध्याकर्षिणि बुद्ध्याकर्षणाहङ्काराकर्षिण्यहङ्काराकर्षण।
- शब्दाकर्षिणि शब्दाकर्षण।
- स्पर्शाकर्षिणि स्पर्शाकर्षण।
- रूपाकर्षिणि रूपाकर्षण।
- रसाकर्षिणि रसाकर्षण।
- गन्धाकर्षिणि गन्धाकर्षण।
- चित्ताकर्षिणि चित्ताकर्षण।
- धैर्याकर्षिणि धैर्याकर्षण।
- स्मृत्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षण।
- नामाकर्षिणि नामाकर्षण।
- बीजाकर्षिणि बीजाकर्षणात्माकर्षिण्यात्माकर्षणामृताकर्षिण्यमृताकर्षण।
- शरीराकर्षिणि शरीराकर्षण।
- सर्वाशा-परि-पूरक-चक्र-स्वामिनि सर्वाशा-परि-पूरक-चक्र-स्वामिन्।।९०२
- गुप्त-योगिनि गुप्त-योगिन्ननङ्ग-कुसुमेऽनङ्ग-कुसुमानङ्ग - मेखलेऽनङ्ग - मेखलानङ्ग-मदनेऽनङ्ग - मदनानङ्ग - मदनातुरेऽनङ्ग-मदनातुराऽनङ्ग-रेखेऽनङ्ग-रेखानङ्गवेगिन्यनङ्ग-वेगिन्ननङ्गांकुशेऽनङ्गांकुशानङ्ग-मालिन्यनङ्ग-मालिन्।
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनि सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिन्।
- गुप्ततर-योगिनि गुप्ततर-योगिन्।।१०२५
- सर्व-संक्षोभिणि सर्व-संक्षोभिन्।
- सर्व-विद्राविणि सर्व-विद्राविन्।
- सर्वाकर्षिणि सर्वाकर्षिन्।
- सर्वाह्लादिनि सर्वाह्लादिन्।
- सर्व-सम्मोहिनि सर्व-सम्मोहिन्।
- सर्व-स्तम्भिनि सर्व-स्तम्भिन्।

- सर्व-जृम्भिणि सर्व-जृम्भिन्।
- सर्व-वशङ्करि सर्व-वशङ्कर।
- सर्व-रञ्जिनि सर्व-रञ्जिन्।
- सर्वोन्मादिनि सर्वोन्मादिन्।
- सर्वार्थ-साधिनि सर्वार्थ-साधिन्।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरणि सर्व-सम्पत्ति-पूरण।
- सर्व-मन्त्र-मयि सर्व-मन्त्र-मय।
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करि सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्कर।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिनि सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिन्।
- सम्प्रदाय-योगिनि सम्प्रदाय-योगिन्।।१२१७
- सर्व-सिद्धि-प्रदे सर्व-सिद्धि-प्रद।
- सर्व-सम्पत्प्रदे सर्व-सम्पत्प्रद।
- सर्व-प्रियङ्करि सर्व-प्रियङ्कर।
- सर्व-मङ्गल-कारिणि सर्व-मङ्गल-कारिन्।
- सर्व-काम-प्रदे सर्व-काम-प्रद।
- सर्व-दुःख-विमोचिनि सर्व-दुःख-विमोचिन्।
- सर्व-मृत्यु-प्रशमनि सर्व-मृत्यु-प्रशमन।
- सर्व-विघ्न-निवारिणि सर्व-विघ्न-निवारिन्।
- सर्वाङ्ग-सुन्दरि सर्वाङ्ग-सुन्दर।
- सर्व-सौभाग्य-दायिनि सर्व-सौभाग्य-दायिन्।
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनि सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिन्।
- कुलोत्तीर्ण - योगिनि कुलोत्तीर्ण-योगिन्।।१३८७
- सर्वज्ञे सर्वज्ञ।
- सर्व-शक्ते सर्व-शक्ते।
- सर्वैश्वर्य-प्रदे सर्वैश्वर्य-प्रद।
- सर्व-ज्ञान-मयि सर्व-ज्ञान-मय।
- सर्व-व्याधि-विनाशिनि सर्व-व्याधि-विनाशिन्।
- सर्वाधार-स्वरूपे सर्वाधार-स्वरूप।
- सर्व-पाप-हरे सर्व-पाप-हर।
- सर्वानन्द-मयि सर्वानन्द-मय।
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिणि सर्व-रक्षा-स्वरूपिन्।
- सर्वेप्सित-प्रदे सर्वेप्सित-प्रद।
- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिनि सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिन्।
- निगर्भ-योगिनि निगर्भ-योगिन्।।१५३७
- वशिनि वशिन्।
- कामेश्वरि कामेश्वर।
- मोदिनि मोदिन्।
- विमले विमलारुणेऽरुण।
- जयिनि जयिन्।
- सर्वेश्वरि सर्वेश्वर।
- कौलिनि कौलिन्।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिनि सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिन्।
- रहस्य-योगिनि रहस्य-योगिन्।।१६१५
- बाणिनि बाणिन्।
- चापिनि चापिन्।
- पाशिनि पाशिनंकुशिन्यंकुशिन्।।१६३६
- महा-कामेश्वरि महा-कामेश्वर।
- महा-वज्रेश्वरि महा-वज्रेश्वर।
- महा-भग-मालिनि महा-भग-मालिन्।

- महा-श्रीसुन्दरि महा-श्रीसुन्दर।
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिनि सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिन्।
- अति - रहस्य - योगिन्यतिरहस्य-योगिन्।।१७२०
- श्रीश्री-महा-भट्टारिके श्रीश्री-महा-भट्टारक।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनि सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिन्।
- परापर - रहस्य - योगिनि परापर - रहस्य-योगिन्।।१७७६
- त्रिपुरे त्रिपुर।
- त्रिपुरेशि त्रिपुरेश।
- त्रिपुर-सुन्दरि त्रिपुर-सुन्दर।
- त्रिपुर-वासिनि त्रिपुर-वासिन्।
- त्रिपुरा-श्रीस्त्रिपुरा-श्रीस्त्रिपुर-मालिनि-त्रिपुर-मालिन्।
- त्रिपुरा-सिद्धे त्रिपुरा-सिद्ध।
- त्रिपुराम्ब त्रिपुराम्ब।
- महा-त्रिपुर-सुन्दरि महा-त्रिपुर-सुन्दर ।।१८६६
- महा-महेश्वरि महा-महेश्वर।
- महा-महा-राज्ञि महा-महा-राज।
- महा-महा-शक्ते महा-महा-शक्ते।
- महा-महा-गुप्ते महा-महा-गुप्त।
- महा-महा-ज्ञप्ते महा-महा-ज्ञप्ते।
- महा-महा-नन्दे महा-महा-नन्द।
- महा-महा-स्पन्दे महा-महा-स्पन्द।
- महा-महाशये महा-महाशय।
- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-साम्राज्ञि महा-महा-श्रीचक्र-नगर-सम्राज।।१९८८
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।। १९९७

•••

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में **जप-समर्पण** करे। यथा–

श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता-प्रसादेन मम सर्व-सम्मोहन-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-सम्बुद्ध्यन्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् **कराङ्ग-न्यास** और **षडङ्ग-न्यास** कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका **मानस-पूजन** करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

कुलाकुलाग्नीषोमात्म - क्रिया - ज्ञानैक - रस्यतः,
नित्य - निष्पन्द - संरम्भ - निर्भरानन्द - चिद् - घने।
महा - बिन्दु - महः पीठे, नव्य-दिव्य-रसोज्ज्वलम्,
शिव - शक्त्यात्मकं किञ्चिदद्वैतं दैवतं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

अम्बिके! तव भक्तानामवलोकन - मात्रतः।
कृत्याकृत्य - विमूढाः स्युर्नरा नार्यो नृपादयः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्ध श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे–

(१) गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-सम्बुद्ध्यन्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-सम्बुद्ध्यन्त'-माला-मन्त्र-जपेन श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) श्रीहिरण्या-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहृदयेश्वर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता-प्रसादेन 'सर्व-सम्मोहन'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्‌गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् पृथिवी–हमारे लिए शान्ति–दायिनी हो, अन्तरिक्ष और दिव्याकाश–कल्याणकारी हों, देव-गण–अभय देनेवाले हों, दिशाएँ, विदिशाएँ और ऊर्ध्व दिशाएँ–मङ्गल-मय हों तथा जल-राशियाँ (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या एक सहस्त्र नौ सौ सत्तानबे है।

यह '**सम्बुद्ध्यन्त-माला**' है।

अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में **सम्बोधन** (आवाहन) की विभक्ति है।

अतः **मन्त्र-जप** के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता का मैं आवाहन कर रहा हूँ, यह भावना करता जाए।

बाह्य-पूजन में प्रति सम्बोधन पर देवता के प्रति हाथ जोड़ता जाए।

(१२)

शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-नमोऽन्त-माला

द्वादशी (शुक्ल-पक्ष) 'स' चतुर्थी (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-नमोऽन्त-माला-मन्त्रस्य बुद्धि-तत्त्वाधिष्ठायि-श्रीविष्णवादित्य ऋषिः। अत्यष्टिच्छन्दः। मोक्षद-सकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीसकल-जननी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। सर्व-स्तम्भन-सिद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

बुद्धि-तत्त्वाधिष्ठायि-श्रीविष्णवादित्य-ऋषये नमः शिरसि। अत्यष्टिच्छन्दसे नमः मुखे। मोक्षद-सकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीसकल-जननी-ललिता-श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। सर्व-स्तम्भन-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

कुलाकुलाग्नीषोमात्म - क्रिया - ज्ञानैक - रस्यतः,
नित्य - निष्यन्द - संरम्भ - निर्भरानन्द - चिद् - घने।
महा - बिन्दु - महः पीठे, नव्य-दिव्य-रसोज्ज्वलम्,
शिव - शक्त्यात्मकं किञ्चिदद्वैतं दैवतं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

देवि त्वद् - भक्तमालोक्य, शरीरेन्द्रिय-चेतसाम्।
स्तम्भनाद् वैरिणः स्तब्धाः, स्व-स्व-कार्य-पराङ्मुखाः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२

ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि त्रिपुर-सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि।३७
- हृदय-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि हृदय-देवाय नमः पादुकां पूजयामि।
- शिरो-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि शिरो-देवाय नमः पादुकां पूजयामि।
- शिखा-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि शिखा-देवाय नमः पादुकां पूजयामि।
- कवच-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि कवच-देवाय नमः पादुकां पूजयामि।
- नेत्र-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि नेत्र-देवाय नमः पादुकां पूजयाम्यस्त्र-देव्यै नमः पादुकां पूजयाम्यस्त्र - देवाय नमः पादुकां पूजयामि।।२०१
- कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- भग-मालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि भग-मालिने नमः पादुकां पूजयामि।
- नित्य-क्लिन्नायै नमः पादुकां पूजयामि नित्य-क्लिन्नाय नमः पादुकां पूजयामि।
- भेरुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि भेरुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि।।३१०
- वह्नि-वासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि वह्नि-वासिने नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-वज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि महा-वज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- शिवा-दूत्यै नमः पादुकां पूजयामि शिवा-दूताय नमः पादुकां पूजयामि।
- त्वरितायै नमः पादुकां पूजयामि त्वरिताय नमः पादुकां पूजयामि।
- कुल-सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि कुल-सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि।।४५१
- नित्यायै नमः पादुकां पूजयामि नित्याय नमः पादुकां पूजयामि।
- नील-पताकायै नमः पादुकां पूजयामि नील-पताकाय नमः पादुकां पूजयामि।
- विजयायै नमः पादुकां पूजयामि विजयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-मङ्गलायै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-मङ्गलाय नमः पादुकां पूजयामि।
- ज्वाला-मालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ज्वाला-मालिने नमः पादुकां पूजयामि।
- चित्रायै नमः पादुकां पूजयामि चित्राय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-नित्यायै नमः पादुकां पूजयामि महा-नित्याय नमः पादुकां पूजयामि।।६४१
- परमेश्वर-परमेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि परमेश्वरि-परमेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।

- मित्रेश-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
मित्रेश-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- षष्ठीश-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
षष्ठीश-मयाय नमः पादुकां पूजयाम्युड्डीश-मय्यै नमः पादुकां पूजयाम्युड्डीश-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- चर्यानाथ-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
चर्यानाथ-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- लोपामुद्रा-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
लोपामुद्रा-मयाय नमः पादुकां पूजयाम्यगस्त्य-मय्यै नमः पादुकां पूजयाम्यगस्त्य-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।।८५४
- काल-तापन-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
काल-तापन-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- धर्माचार्य-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
धर्माचार्य-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- मुक्त-केशीश्वर-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
मुक्त-केशीश्वर-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- दीप-कला-नाथ-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
दीप-कला-नाथ-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- विष्णु-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
विष्णु-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- प्रभाकर-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
प्रभाकर-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- तेजो-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
तेजो-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- मनोज-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
मनोज-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- कल्याण-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
कल्याण-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- रत्न-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
रत्न-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- वासुदेव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
वासुदेव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।१२१३
- श्रीरामानन्द-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि
श्रीरामानन्द - मयाय नमः पादुकां पूजयाम्यणिमा - सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयाम्यणिमा-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।
- लघिमा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि लघिमा-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।
- महिमा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि महिमा-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामीशित्व-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामीशित्व-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।
- वशित्व-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि वशित्व-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।
- प्राकाम्य-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि प्राकाम्य-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।

- भुक्ति-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि भुक्ति-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामीच्छा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामीच्छा-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।
- प्राप्ति-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि प्राप्ति-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-काम-सिद्ध्यै (*सिद्धये) नमः पादुकां पूजयामि सर्व - काम - सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि।।१५२६ (*१५३६)
- ब्राह्मयै नमः पादुकां पूजयामि ब्राह्माय नमः पादुकां पूजयामि।
- माहेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि माहेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- कौमार्यै नमः पादुकां पूजयामि कौमाराय नमः पादुकां पूजयामि।
- वैष्णव्यै नमः पादुकां पूजयामि वैष्णवाय नमः पादुकां पूजयामि।
- वाराह्यै नमः पादुकां पूजयामि वाराहाय नमः पादुकां पूजयामि।
- माहेन्द्र्यै नमः पादुकां पूजयामि माहेन्द्राय नमः पादुकां पूजयामि।
- चामुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि चामुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-लक्ष्म्यै नमः पादुकां पूजयामि महा-लक्ष्म्यै नमः पादुकां पूजयामि।।१७२८
- सर्व-संक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-संक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-विद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-विद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्वाकर्षिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-वशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-वशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-महांकुशायै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-महांकुशाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-खेचर्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-खेचराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-बीजायै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-बीजाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-योन्यै (*योनये) नमः पादुकां पूजयामि सर्व-योनये नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-त्रिखण्डायै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-त्रिखण्डाय नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।
- प्रकट-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि प्रकट-योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।२०९१ (*२१०२)
- कामाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि कामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।

- बुद्ध्याकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि बुद्ध्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयाम्यहङ्काराकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयाम्यहङ्काराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- शब्दाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि शब्दाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- स्पर्शाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि स्पर्शाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- रूपाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि रूपाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- रसाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि रसाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- गन्धाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि गन्धाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- चित्ताकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि चित्ताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- धैर्याकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि धैर्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- स्मृत्याकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि स्मृत्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- नामाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि नामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- बीजाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि बीजाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयाम्यात्माकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयाम्यात्माकर्षणाय नमः पादुकां पूजयाम्यमृताकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयाम्यमृताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- शरीराकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि शरीराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाशा-परि-पूरक-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्वाशा-परि-पूरक-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।२६०१ (*२६१२)
- गुप्त-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि गुप्त-योगिने नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-कुसुमायै नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-कुसुमाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मेखलायै नमः पादुकां पूजयाम्यऽनङ्ग - मेखलाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग - मदनायै नमः पादुकां पूजयाम्यऽनङ्ग - मदनाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग - मदनातुरायै नमः पादुकां पूजयाम्यऽनङ्ग - मदनातुराय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग - रेखायै नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग - रेखाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग - वेगिन्यै नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग - वेगिने नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्गांकुशायै नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्गांकुशाय नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग - मालिन्यै नमः पादुकां पूजयाम्यनङ्ग-मालिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।

- गुप्ततर-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि गुप्ततर-योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।२९३७ (*२९४८)
- सर्व-संक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-संक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-विद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-विद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्वाकर्षिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाह्लादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्वाह्लादिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सम्मोहिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-सम्मोहिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-स्तम्भिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-स्तम्भिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-जृम्भिण्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-जृम्भिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-वशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-वशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-रञ्जिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-रञ्जिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वार्थ-साधिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्वार्थ-साधिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरण्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-सम्पत्ति-पूरणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-मन्त्र-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-मन्त्र-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सम्प्रदाय-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सम्प्रदाय - योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।३४३३ (*३४४४)
- सर्व-सिद्धि-प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-सिद्धि-प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सम्पत्-प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-सम्पत्-प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-प्रियङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-प्रियङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-मङ्गल-कारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-मङ्गल-कारिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-काम-प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-काम-प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-दुःख-विमोचिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-दुःख-विमोचिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-मृत्यु-प्रशमन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-मृत्यु-प्रशमनाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-विघ्न-निवारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-विघ्न-निवारिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाङ्ग-सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्वाङ्ग-सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि।

- सर्व-सौभाग्य-दायिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-सौभाग्य-दायिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।
- कुलोत्तीर्ण-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि कुलोत्तीर्ण - योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।३८३४ (*३८४५)
- सर्वज्ञायै नमः पादुकां पूजयामि। सर्वज्ञाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-शक्त्यै (*शक्तये) नमः पादुकां पूजयामि सर्व-शक्तये नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वैश्वर्य-प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि सर्वैश्वर्य-प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-ज्ञान-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-ज्ञान-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-व्याधि-विनाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-व्याधि-विनाशिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वाधार-स्वरूपायै नमः पादुकां पूजयामि सर्वाधार-स्वरूपाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-पाप-हरायै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-पाप-हराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वानन्द-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्वानन्द-मयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिण्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-रक्षा-स्वरूपिणे नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वेप्सित-प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि सर्वेप्सित-प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।
- निगर्भ-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि निगर्भ-योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।४२१७ (*४२२९)
- वशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि वशिने नमः पादुकां पूजयामि।
- कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- मोदिन्यै नमः पादुकां पूजयामि मोदिने नमः पादुकां पूजयामि।
- विमलायै नमः पादुकां पूजयामि विमलाय नमः पादुकां पूजयाम्यरुणायै नमः पादुकां पूजयाम्यरुणाय नमः पादुकां पूजयामि।
- जयिन्यै नमः पादुकां पूजयामि जयिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्वेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- कौलिन्यै नमः पादुकां पूजयामि कौलिने नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।

- रहस्य-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
  रहस्य-योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।४४८७ (*४४९९)
- बाणिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
  बाणिने नमः पादुकां पूजयामि।
- चापिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
  चापिने नमः पादुकां पूजयामि।
- पाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
  पाशिने नमः पादुकां पूजयाम्यंकुशिन्यै नमः पादुकां पूजयाम्यंकुशिने नमः पादुकां पूजयामि।।४५८३ (*४५९५)
- महा-कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
  महा-कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-वज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
  महा-वज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-भग-मालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
  महा-भग-मालिने नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-श्रीसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
  महा-श्रीसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयाम्यति-रहस्य-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयाम्यतिरहस्य-योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।४७८०
- श्रीश्री-महा-भट्टारिकायै नमः पादुकां पूजयामि
  श्रीश्री - महा - भट्टारकाय नमः पादुकां पूजयामि।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि।
- परापर-रहस्य-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
  परापर - रहस्य - योगिने नमः पादुकां पूजयामि।।४८९४ (*४९०६)
- त्रिपुरायै नमः पादुकां पूजयामि
  त्रिपुराय नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुरेश्यै नमः पादुकां पूजयामि
  त्रिपुरेशाय नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
  त्रिपुर-सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुर-वासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
  त्रिपुर-वासिने नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुरा-श्रियै नमः पादुकां पूजयामि
  त्रिपुरा-श्रिये नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुर-मालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
  त्रिपुर-मालिने नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुरा-सिद्धायै नमः पादुकां पूजयामि
  त्रिपुरा-सिद्धाय नमः पादुकां पूजयामि।
- त्रिपुराम्बायै नमः पादुकां पूजयामि
  त्रिपुराम्बाय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
  महा-त्रिपुर-सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि ।।५१५९ (*५१७१)
- महा-महेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
  महा-महेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि।

- महा-महा-राज्ञ्यै नमः पादुकां पूजयामि
  महा-महा-राजाय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-शक्त्यै (*शक्तये) नमः पादुकां पूजयामि
  महा-महा-शक्तये नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-गुप्तायै नमः पादुकां पूजयामि
  महा-महा-गुप्ताय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-ज्ञप्त्यै (*ज्ञप्तये) नमः पादुकां पूजयामि
  महा-महा-ज्ञप्तये नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-नन्दायै नमः पादुकां पूजयामि
  महा-महा-नन्दाय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-स्पन्दायै नमः पादुकां पूजयामि
  महा-महा-स्पन्दाय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महाशयायै नमः पादुकां पूजयामि
  महा-महाशयाय नमः पादुकां पूजयामि।
- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-साम्राज्ञ्यै नमः पादुकां पूजयामि महा-महा-श्रीचक्र-नगर-सम्राजाय नमः पादुकां पूजयामि।।५४५६ (*५४७०)
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।। ५४६५ (*५४७९)

•••

: विशेष :

काम्य-साधना हेतु (*) चिह्नाङ्कित प्रकार से 'जप' किया जाता है। ऐसा करने पर १४ अक्षर बढ़ जाते हैं और माला की कुल संख्या ५४७९ हो जाती है।

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा–

।।विनियोग।।

श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता-प्रसादेन मम सर्व-स्तम्भन-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-नमोऽन्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् कराङ्ग-न्यास और षडङ्ग-न्यास कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका मानस-पूजन करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

॥षडङ्ग-न्यास॥

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

॥निष्काम ध्यान॥

कुलाकुलाग्नीषोमात्म - क्रिया - ज्ञानैक - रस्यतः,
नित्य - निष्पन्द - संरम्भ - निर्भरानन्द - चिद् - घने।
महा - बिन्दु - महः पीठे, नव्य-दिव्य-रसोज्ज्वलम्,
शिव - शक्त्यात्मकं किञ्चिदद्वैतं दैवतं भजे॥

॥सकाम ध्यान॥

देवि त्वद् - भक्तमालोक्य, शरीरेन्द्रिय-चेतसाम्।
स्तम्भनाद् वैरिणः स्तब्धाः, स्व-स्व-कार्य-पराङ्मुखाः॥

॥मानस-पूजा॥

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे—

(१) गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि॥

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-नमोऽन्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-नमोऽन्त'-माला-मन्त्र-जपेन श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) श्रीसकल-जननी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीसकलेश्वर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता-प्रसादेन 'सर्व-स्तम्भन'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् पृथिवी–हमारे लिए शान्ति–दायिनी हो, अन्तरिक्ष और दिव्याकाश–कल्याणकारी हों, देव-गण–अभय देनेवाले हों, दिशाएँ, विदिशाएँ और ऊर्ध्व दिशाएँ–मङ्गल-मय हों तथा जल-राशियाँ (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या **पाँच सहस्त्र चार सौ पैसठ** (*५४७९) है।

यह 'नमोऽन्त-माला' है।

अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में **नमः पादुकां पूजयामि** है।

अतः मन्त्र-जप के साथ उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति

मन में नमस्कार की भावना करता जाए।

बाह्य-पूजन में प्रति **नमः पादुकां पूजयामि** पर पुष्पाञ्जलि देता जाए।

(१३)

शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-स्वाहान्त-माला

त्रयोदशी (शुक्ल-पक्ष)	'क'	तृतीया (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-स्वाहान्त-माला-मन्त्रस्य मनः-तत्त्वाधिष्ठायि-ब्रह्मात्मन् श्रीप्रातरादित्य ऋषिः। धृतिच्छन्दः। राजस-ककार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीकामकोटि-ललिता-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। मम धर्मार्थ-काम-मोक्ष-सिद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

मनस्तत्त्वाधिष्ठायि-ब्रह्मात्मने-श्रीप्रातरादित्य-ऋषये नमः शिरसि। धृतिच्छन्दसे नमः मुखे। राजस-ककार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीकामकोटि-ललिता-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। मम धर्मार्थ-काम-मोक्ष-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

कुलाकुलाग्नीषोमात्म - क्रिया - ज्ञानैक - रस्यतः,
नित्य - निष्पन्द - संरम्भ - निर्भरानन्द - चिद् - घने।
महा - बिन्दु - महः पीठे, नव्य-दिव्य-रसोज्ज्वलम्,
शिव - शक्त्यात्मकं किञ्चिदद्वैतं दैवतं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

धर्मश्चार्थश्च कामश्च, मोक्षश्चेति चतुष्टयम्।
तव भक्तः स्व-भक्तेभ्यः, प्रयच्छत्य - प्रयासतः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१
ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२
ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३
ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दर्यै स्वाहा त्रिपुर-सुन्दराय स्वाहा।।२३
- हृदय-देव्यै स्वाहा हृदय-देवाय स्वाहा।
- शिरो-देव्यै स्वाहा शिरो-देवाय स्वाहा।
- शिखा-देव्यै स्वाहा शिखा-देवाय स्वाहा।
- कवच-देव्यै स्वाहा कवच-देवाय स्वाहा।
- नेत्र-देव्यै स्वाहा नेत्र-देवाय स्वाहास्त्र-देव्यै स्वाहास्त्र-देवाय स्वाहा।।१०३
- कामेश्वर्यै स्वाहा कामेश्वराय स्वाहा।
- भग-मालिन्यै स्वाहा भग-मालिने स्वाहा।
- नित्य-क्लिन्नायै स्वाहा नित्य-क्लिन्नाय स्वाहा।
- भेरुण्डायै स्वाहा भेरुण्डाय स्वाहा।
- वह्नि-वासिन्यै स्वाहा वह्नि-वासिने स्वाहा।
- महा-वज्रेश्वर्यै स्वाहा महा-वज्रेश्वराय स्वाहा।
- शिवा-दूत्यै स्वाहा शिवा-दूताय स्वाहा।
- त्वरितायै स्वाहा त्वरिताय स्वाहा।
- कुल-सुन्दर्यै स्वाहा कुल-सुन्दराय स्वाहा।
- नित्यायै स्वाहा नित्याय स्वाहा।
- नील-पताकायै स्वाहा नील-पताकाय स्वाहा।
- विजयायै स्वाहा विजयाय स्वाहा।
- सर्व-मङ्गलायै स्वाहा सर्व-मङ्गलाय स्वाहा।
- ज्वाला-मालिन्यै स्वाहा ज्वाला-मालिने स्वाहा।
- चित्रायै स्वाहा चित्राय स्वाहा।
- महा-नित्यायै स्वाहा महा-नित्याय स्वाहा।।३१९
- परमेश्वर-परमेश्वर्यै स्वाहा परमेश्वर-परमेश्वराय स्वाहा।
- मित्रेश-मय्यै स्वाहा मित्रेश-मयाय स्वाहा।
- षष्ठीश - मय्यै स्वाहा षष्ठीश - मयाय स्वाहोड्डीश-मय्यै स्वाहोड्डीश-मयाय स्वाहा।
- चर्यानाथ-मय्यै स्वाहा चर्यानाथ-मयाय स्वाहा।
- लोपामुद्रा-मय्यै स्वाहा लोपामुद्रा-मयाय स्वाहागस्त्य-मय्यै स्वाहागस्त्य-मयाय स्वाहा।
- काल-तापन-मय्यै स्वाहा काल-तापन-मयाय स्वाहा।
- धर्माचार्य-मय्यै स्वाहा धर्माचार्य-मयाय स्वाहा।
- मुक्त-केशीश्वर-मय्यै स्वाहा मुक्त-केशीश्वर-मयाय स्वाहा।
- दीप-कला-नाथ-मय्यै स्वाहा दीप-कला-नाथ-मयाय स्वाहा।
- विष्णु-देव-मय्यै स्वाहा विष्णु-देव-मयाय स्वाहा।
- प्रभाकर-देव-मय्यै स्वाहा प्रभाकर-देव-मयाय स्वाहा।
- तेजो-देव-मय्यै स्वाहा तेजो-देव-मयाय स्वाहा।
- मनोज-देव-मय्यै स्वाहा मनोज-देव-मयाय स्वाहा।
- कल्याण-देव-मय्यै स्वाहा कल्याण-देव-मयाय स्वाहा।

- रत्न-देव-मय्यै स्वाहा रत्न-देव-मयाय स्वाहा।
- वासुदेव-मय्यै स्वाहा
  वासुदेव-मयाय स्वाहा।।६३९
- श्रीरामानन्द-मय्यै स्वाहा श्रीरामानन्द-मयाय स्वाहाणिमा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहाणिमा-सिद्धये स्वाहा।
- लघिमा-सिद्ध्यै (*सिद्धये)स्वाहा
  लघिमा-सिद्धये स्वाहा।
- महिमा-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा महिमा-सिद्धये स्वाहेशित्व-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहेशित्व-सिद्धये स्वाहा।
- वशित्व-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा
  वशित्व-सिद्धये स्वाहा।
- प्राकाम्य-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा
  प्राकाम्य-सिद्धये स्वाहा।
- भुक्ति-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा भुक्ति-सिद्धये स्वाहेच्छा - सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहेच्छा-सिद्धये स्वाहा।
- प्राप्ति-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा
  प्राप्ति-सिद्धये स्वाहा।
- सर्व-काम-सिद्ध्यै (*सिद्धये) स्वाहा
  सर्व-काम-सिद्धये स्वाहा।।७९८ (*८०८)
- ब्राह्म्यै स्वाहा ब्राह्माय स्वाहा।
- माहेश्वर्यै स्वाहा माहेश्वराय स्वाहा।
- कौमार्यै स्वाहा कौमाराय स्वाहा।
- वैष्णव्यै स्वाहा वैष्णवाय स्वाहा।
- वाराह्यै स्वाहा वाराहाय स्वाहा।
- माहेन्द्र्यै स्वाहा माहेन्द्राय स्वाहा।
- चामुण्डायै स्वाहा चामुण्डाय स्वाहा।
- महा-लक्ष्म्यै स्वाहा
  महा-लक्ष्म्यै स्वाहा।।८८८ (*८९८)
- सर्व-संक्षोभिण्यै स्वाहा सर्व-संक्षोभिणे स्वाहा।
- सर्व-विद्राविण्यै स्वाहा सर्व-विद्राविणे स्वाहा।
- सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा सर्वाकर्षिणे स्वाहा।
- सर्व-वशङ्कर्यै स्वाहा सर्व-वशङ्कराय स्वाहा।
- सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा सर्वोन्मादिने स्वाहा।
- सर्व-महांकुशायै स्वाहा
  सर्व-महांकुशाय स्वाहा।
- सर्व-खेचर्यै स्वाहा सर्व-खेचराय स्वाहा।
- सर्व-बीजायै स्वाहा सर्व-बीजाय स्वाहा।
- सर्व-योन्यै (*योनये) स्वाहा
  सर्व-योनये स्वाहा।
- सर्व-त्रिखण्डायै स्वाहा
  सर्व-त्रिखण्डाय स्वाहा।
- त्रैलोक्य - मोहन - चक्र - स्वामिन्यै स्वाहा त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिने स्वाहा।
- प्रकट-योगिन्यै स्वाहा
  प्रकट-योगिने स्वाहा।।१०८३ (*१०९४)
- कामाकर्षिण्यै स्वाहा कामाकर्षणाय स्वाहा।
- बुद्ध्याकर्षिण्यै स्वाहा बुद्ध्याकर्षणाय

स्वाहाहङ्काराकर्षिण्यै स्वाहाहङ्काराकर्षणाय स्वाहा।

- शब्दाकर्षिण्यै स्वाहा शब्दाकर्षणाय स्वाहा।
- स्पर्शाकर्षिण्यै स्वाहा स्पर्शाकर्षणाय स्वाहा।
- रूपाकर्षिण्यै स्वाहा रूपाकर्षणाय स्वाहा।
- रसाकर्षिण्यै स्वाहा रसाकर्षणाय स्वाहा।
- गन्धाकर्षिण्यै स्वाहा गन्धाकर्षणाय स्वाहा।
- चित्ताकर्षिण्यै स्वाहा चित्ताकर्षणाय स्वाहा।
- धैर्याकर्षिण्यै स्वाहा धैर्याकर्षणाय स्वाहा।
- स्मृत्याकर्षिण्यै स्वाहा स्मृत्याकर्षणाय स्वाहा।
- नामाकर्षिण्यै स्वाहा नामाकर्षणाय स्वाहा।
- बीजाकर्षिण्यै स्वाहा बीजाकर्षणाय स्वाहात्मा-कर्षिण्यै स्वाहात्मा-कर्षणाय स्वाहामृता-कर्षिण्यै स्वाहामृता-कर्षणाय स्वाहा।
- शरीराकर्षिण्यै स्वाहा शरीराकर्षणाय स्वाहा।
- सर्वाशापरि-पूरक-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा सर्वाशापरि - पूरक - चक्र - स्वामिने स्वाहा।१३५५ (*१३६६)
- गुप्त-योगिन्यै स्वाहा गुप्त-योगिने स्वाहानङ्ग-कुसुमायै स्वाहानङ्ग-कुसुमाय स्वाहानङ्ग-मेखलायै स्वाहानङ्ग-मेखलाय स्वाहानङ्ग-मदनायै स्वाहानङ्ग-मदनाय स्वाहानङ्ग-मदनातुरायै स्वाहानङ्ग - मदनातुराय स्वाहानङ्ग - रेखायै स्वाहानङ्ग - रेखाय स्वाहानङ्ग - वेगिन्यै स्वाहानङ्ग - वेगिने स्वाहानङ्गांकुशायै स्वाहानङ्गांकुशाय स्वाहानङ्ग - मालिन्यै स्वाहानङ्ग-मालिने स्वाहा।
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिने स्वाहा।
- गुप्ततर - योगिन्यै स्वाहा गुप्ततर - योगिने स्वाहा।।१५३७(*१५४८)
- सर्व-संक्षोभिण्यै स्वाहा सर्व-संक्षोभिणे स्वाहा।
- सर्व-विद्राविण्यै स्वाहा सर्व-विद्राविणे स्वाहा।
- सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा सर्वाकर्षिणे स्वाहा।
- सर्वाह्लादिन्यै स्वाहा सर्वाह्लादिने स्वाहा।
- सर्व-सम्मोहिन्यै स्वाहा सर्व-सम्मोहिने स्वाहा।
- सर्व-स्तम्भिन्यै स्वाहा सर्व-स्तम्भिने स्वाहा।
- सर्व-जृम्भिण्यै स्वाहा सर्व-जृम्भिणे स्वाहा।
- सर्व-वशङ्कर्यै स्वाहा सर्व-वशङ्कराय स्वाहा।
- सर्व-रञ्जिन्यै स्वाहा सर्व-रञ्जिने स्वाहा।
- सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा सर्वोन्मादिने स्वाहा।
- सर्वार्थ-साधिन्यै स्वाहा सर्वार्थ-साधिने स्वाहा।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरण्यै स्वाहा सर्व-सम्पत्ति-पूरणाय स्वाहा।
- सर्व-मन्त्र-मय्यै स्वाहा सर्व-मन्त्र-मयाय स्वाहा।
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्कर्यै स्वाहा सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्कराय स्वाहा।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिने स्वाहा।

• सम्प्रदाय-योगिन्यै स्वाहा सम्प्रदाय-योगिने स्वाहा।।१८०९ (*१८२०)

• सर्व-सिद्धि-प्रदायै स्वाहा सर्व-सिद्धि-प्रदाय स्वाहा।

• सर्व-सम्पत्प्रदायै स्वाहा सर्व-सम्पत्प्रदाय स्वाहा।

• सर्व-प्रियङ्कर्यै स्वाहा सर्व-प्रियंङ्कराय स्वाहा।

• सर्व-मङ्गल-कारिण्यै स्वाहा सर्व-मङ्गल-कारिणे स्वाहा।

• सर्व-काम-प्रदायै स्वाहा सर्व-काम-प्रदाय स्वाहा।

• सर्व-दुःख-विमोचिन्यै स्वाहा सर्व-दुःख-विमोचिने स्वाहा।

• सर्व-मृत्यु-प्रशमन्यै स्वाहा सर्व-मृत्यु-प्रशमनाय स्वाहा।

• सर्व-विघ्न-निवारिण्यै स्वाहा सर्व-विघ्न-निवारिणे स्वाहा।

• सर्वाङ्ग-सुन्दर्यै स्वाहा सर्वाङ्ग-सुन्दराय स्वाहा।

• सर्व-सौभाग्य-दायिन्यै स्वाहा सर्व-सौभाग्य-दायिने स्वाहा।

• सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिने स्वाहा।

• कुलोत्तीर्ण-योगिन्यै स्वाहा कुलोत्तीर्ण-योगिने स्वाहा।।२०४२ (*२०५३)

• सर्वज्ञायै स्वाहा सर्वज्ञाय स्वाहा।

• सर्व-शक्त्यै (*शक्तये) स्वाहा सर्व-शक्तये स्वाहा।

• सर्वैश्वर्य-प्रदायै स्वाहा सर्वैश्वर्य-प्रदाय स्वाहा।

• सर्व-ज्ञान-मय्यै स्वाहा सर्व-ज्ञान-मयाय स्वाहा।

• सर्व-व्याधि-विनाशिन्यै स्वाहा सर्व-व्याधि-विनाशिने स्वाहा।

• सर्वाधार-स्वरूपायै स्वाहा सर्वाधार-स्वरूपाय स्वाहा।

• सर्व-पाप-हरायै स्वाहा सर्व-पाप-हराय स्वाहा।

• सर्वानन्द-मय्यै स्वाहा सर्वानन्द-मयाय स्वाहा।

• सर्व-रक्षा-स्वरूपिण्यै स्वाहा सर्व-रक्षा-स्वरूपिणे स्वाहा।

• सर्वेप्सित-प्रदायै स्वाहा सर्वेप्सित-प्रदाय स्वाहा।

• सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिने स्वाहा।

• निगर्भ - योगिन्यै स्वाहा निगर्भ - योगिने स्वाहा।।२२५७(*२२६९)

• वशिन्यै स्वाहा वशिने स्वाहा।

• कामेश्वर्यै स्वाहा कामेश्वराय स्वाहा।

• मोदिन्यै स्वाहा मोदिने स्वाहा।

• विमलायै स्वाहा विमलाय स्वाहारुणायै स्वाहारुणाय स्वाहा।

• जयिन्यै स्वाहा जयिने स्वाहा।

- सर्वेश्वर्यै स्वाहा सर्वेश्वराय स्वाहा।
- कौलिन्यै स्वाहा कौलिने स्वाहा।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिने स्वाहा।
- रहस्य - योगिन्यै स्वाहा रहस्य - योगिने स्वाहा।।२३८७ (*२३९९)
- बाणिन्यै स्वाहा बाणिने स्वाहा।
- चापिन्यै स्वाहा चापिने स्वाहा।
- पाशिन्यै स्वाहा पाशिने स्वाहांकुशिन्यै स्वाहांकुशिने स्वाहा।।२४२७ (*२४३९)
- महा-कामेश्वर्यै स्वाहा महा-कामेश्वराय स्वाहा।
- महा-वज्रेश्वर्यै स्वाहा महा-वज्रेश्वराय स्वाहा।
- महा-भग-मालिन्यै स्वाहा महा-भग-मालिने स्वाहा।
- महा-श्रीसुन्दर्यै स्वाहा महा-श्रीसुन्दराय स्वाहा।
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिने स्वाहाति-रहस्य-योगिन्यै स्वाहातिरहस्य-योगिने स्वाहा।।२५४० (*२५५२)
- श्रीश्री-महा-भट्टारिकायै स्वाहा श्रीश्री-महा-भट्टारकाय स्वाहा।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिन्यै स्वाहा सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिने स्वाहा।
- परापर-रहस्य-योगिन्यै स्वाहा परापर-रहस्य-योगिने स्वाहा।।२६१२
- त्रिपुरायै स्वाहा त्रिपुराय स्वाहा।
- त्रिपुरेश्यै स्वाहा त्रिपुरेशाय स्वाहा।
- त्रिपुर-सुन्दर्यै स्वाहा त्रिपुर-सुन्दराय स्वाहा।
- त्रिपुर-वासिन्यै स्वाहा त्रिपुर-वासिने स्वाहा।
- त्रिपुरा-श्रियै स्वाहा त्रिपुरा-श्रिये स्वाहा।
- त्रिपुर-मालिन्यै स्वाहा त्रिपुर-मालिने स्वाहा।
- त्रिपुरा-सिद्धायै स्वाहा त्रिपुरा-सिद्धाय स्वाहा।
- त्रिपुराम्बायै स्वाहा त्रिपुराम्बाय स्वाहा।
- महा-त्रिपुर-सुन्दर्यै स्वाहा महा-त्रिपुर-सुन्दराय स्वाहा ।।२७५१ (*२७६३)
- महा-महेश्वर्यै स्वाहा महा-महेश्वराय स्वाहा।
- महा-महा-राज्यै स्वाहा महा-महा-राजाय स्वाहा।
- महा-महा-शक्त्यै (*शक्तये) स्वाहा महा-महा-शक्तये स्वाहा।
- महा-महा-गुप्तायै स्वाहा महा-महा-गुप्ताय स्वाहा।
- महा-महा-ज्ञप्त्यै (*ज्ञप्तये) स्वाहा महा-महा-ज्ञप्तये स्वाहा।
- महा-महा-नन्दायै स्वाहा महा-महा-नन्दाय स्वाहा।
- महा-महा-स्पन्दायै स्वाहा महा-महा-स्पन्दाय स्वाहा।
- महा-महाशयायै स्वाहा महा-महाशयाय स्वाहा।

- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-साम्राज्यै स्वाहा

महा-महा-श्रीचक्र-नगर-सम्राजाय स्वाहा।।२९२२ (*२९३६)

- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।। २९३१ (*२९४५)

•••

: विशेष :

काम्य-साधना हेतु (*) चिह्नाङ्कित प्रकार से 'जप' किया जाता है। ऐसा करने पर १४ अक्षर बढ़ जाते हैं और माला की कुल संख्या २९४५ हो जाती है।

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा-

।।विनियोग।।

श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता-प्रसादेन मम धर्मार्थ-काम-मोक्ष-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-स्वाहान्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् कराङ्ग-न्यास और षडङ्ग-न्यास कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका मानस-पूजन करे। यथा-

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

कुलाकुलाग्नीषोमात्म - क्रिया - ज्ञानैक - रस्यतः,

नित्य - निष्पन्द - संरम्भ - निर्भरानन्द - चिद् - घने।

महा - बिन्दु - महः पीठे, नव्य-दिव्य-रसोज्ज्वलम्,

शिव - शक्त्यात्मकं किञ्चिदद्वैतं दैवतं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

धर्मश्चार्थश्च कामश्च, मोक्षश्चेति चतुष्टयम्।

तव भक्तः स्व - भक्तेभ्यः, प्रयच्छत्य - प्रयासतः।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे—

(१) गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।

सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-स्वाहान्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-स्वाहान्त'-माला-मन्त्र-जपेन श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) श्रीकाम-कोटि-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीकरुणाकर-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता-प्रसादेन मम 'धर्मार्थ-काम-मोक्ष'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् पृथिवी–हमारे लिए शान्ति-दायिनी हो, अन्तरिक्ष और दिव्याकाश–कल्याणकारी हों, देव-गण–अभय देनेवाले हों, दिशाएँ, विदिशाएँ और ऊर्ध्व दिशाएँ–मङ्गल-मय हों तथा जल-राशियाँ (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या दो सहस्त्र नौ सौ इकतीस है।

यह '**स्वाहान्त-माला**' है।

अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में **स्वाहा** है।

अतः मन्त्र-जप के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति
चित्-कुण्ड में **हवन** की भावना करता जाए।

बाह्य-पूजन में प्रति स्वाहा पर हवन-कुण्ड में घृत की आहुतियाँ देता जाए।

(१४)

शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-तर्पणान्त-माला

चतुर्दशी (शुक्ल-पक्ष)	'ल'	द्वितीया (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-तर्पणान्त-माला-मन्त्रस्य प्रकृति-तत्त्वाधिष्ठायि-विष्ण्वात्मक-श्रीमध्याह्लादित्य ऋषिः। अति-धृतिच्छन्दः। राजस-लकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। मम सर्व-नित्यानन्द-सिद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

प्रकृति-तत्त्वाधिष्ठायि-विष्ण्वात्मने-श्रीमध्याह्लादित्य-ऋषये नमः शिरसि। अति-धृतिच्छन्दसे नमः मुखे। राजस-लकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। मम सर्व-नित्यानन्द-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

कुलाकुलाग्नीषोमात्म - क्रिया - ज्ञानैक - रस्यतः,
नित्य - निष्पन्द - संरम्भ - निर्भरानन्द - चिद् - घने।
महा - बिन्दु - महः पीठे, नव्य-दिव्य-रसोज्ज्वलम्,
शिव - शक्त्यात्मकं किञ्चिदद्वैतं दैवतं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

अलौकिकं लौकिकं, चेत्यानन्द-द्वितयं सदा।
सुलभं परमेशानि!, त्वत्-पादौ भजतां नृणाम्।।

।।मानस्-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२

ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दरीं तर्पयामि त्रिपुर-सुन्दरं तर्पयामि।२६
- हृदय-देवीं तर्पयामि हृदय-देवं तर्पयामि।
- शिरो-देवीं तर्पयामि शिरो-देवं तर्पयामि।
- शिखा-देवीं तर्पयामि शिखा-देवं तर्पयामि।
- कवच-देवीं तर्पयामि कवच-देवं तर्पयामि।
- नेत्र-देवीं तर्पयामि नेत्र-देवं तर्पयाम्यस्त्र-देवीं तर्पयाम्यस्त्र-देवं तर्पयामि।।१२४
- कामेश्वरीं तर्पयामि कामेश्वरं तर्पयामि।
- भग-मालिनीं तर्पयामि भग-मालिनं तर्पयामि।
- नित्य-क्लिन्नां तर्पयामि नित्य-क्लिन्नं तर्पयामि।
- भेरुण्डां तर्पयामि भेरुण्डं तर्पयामि।
- वह्नि-वासिनीं तर्पयामि वह्नि-वासिनं तर्पयामि।
- महा-वज्रेश्वरीं तर्पयामि महा-वज्रेश्वरं तर्पयामि।
- शिवा-दूतीं तर्पयामि शिवा-दूतं तर्पयामि।
- त्वरितां तर्पयामि त्वरितं तर्पयामि।
- कुल-सुन्दरीं तर्पयामि कुल-सुन्दरं तर्पयामि।
- नित्यां तर्पयामि नित्यं तर्पयामि।
- नील-पताकां तर्पयामि नील-पताकं तर्पयामि।
- विजयां तर्पयामि विजयं तर्पयामि।
- सर्व-मङ्गलां तर्पयामि सर्व-मङ्गलं तर्पयामि।
- ज्वाला-मालिनीं तर्पयामि ज्वाला-मालिनं तर्पयामि।
- चित्रां तर्पयामि चित्रं तर्पयामि।
- महा-नित्यां तर्पयामि महा-नित्यं तर्पयामि।।३८२
- परमेश्वर-परमेश्वरीं तर्पयामि परमेश्वर-परमेश्वरं तर्पयामि।
- मित्रेश-मयीं तर्पयामि मित्रेश-मयं तर्पयामि।
- षष्ठीश - मयीं तर्पयामि षष्ठीश - मयं तर्पयाम्युड्डीश - मयीं तर्पयाम्युड्डीश - मयं तर्पयामि।
- चर्यानाथ-मयीं तर्पयामि चर्यानाथ-मयं तर्पयामि।
- लोपामुद्रा-मयीं तर्पयामि लोपामुद्रा-मयं तर्पयाम्यगस्त्य-मयीं तर्पयाम्यगस्त्य-मयं तर्पयामि।
- काल-तापन-मयीं तर्पयामि काल-तापन-मयं तर्पयामि।
- धर्माचार्य-मयीं तर्पयामि धर्माचार्य-मयं तर्पयामि।
- मुक्त-केशीश्वर-मयीं तर्पयामि मुक्त-केशीश्वर-मयं तर्पयामि।
- दीप-कला-नाथ-मयीं तर्पयामि दीप-कला-नाथ-मयं तर्पयामि।
- विष्णु-देव-मयीं तर्पयामि विष्णु-देव-मयं तर्पयामि।
- प्रभाकर-देव-मयीं तर्पयामि प्रभाकर-देव-मयं तर्पयामि।

- तेजो-देव-मयीं तर्पयामि
  तेजो-देव-मयं तर्पयामि।
- मनोज-देव-मयीं तर्पयामि
  मनोज-देव-मयं तर्पयामि।
- कल्याण-देव-मयीं तर्पयामि
  कल्याण-देव-मयं तर्पयामि।
- रत्न-देव-मयीं तर्पयामि रत्न-देव-मयं तर्पयामि।
- वासुदेव-मयीं तर्पयामि
  वासुदेव-मयं तर्पयामि।।७५६
- श्रीरामानन्द-मयीं तर्पयामि श्रीरामानन्द-मयं तर्पयाम्यणिमा-सिद्धिं तर्पयाम्यणिमा-सिद्धं तर्पयामि।
- लघिमा-सिद्धिं तर्पयामि
  लघिमा-सिद्धं तर्पयामि।
- महिमा-सिद्धिं तर्पयामि महिमा-सिद्धं तर्पयामीशित्व-सिद्धिं तर्पयामीशित्व-सिद्धं तर्पयामि।
- वशित्व-सिद्धिं तर्पयामि
  वशित्व-सिद्धं तर्पयामि।
- प्राकाम्य-सिद्धिं तर्पयामि
  प्राकाम्य-सिद्धं तर्पयामि।
- भुक्ति - सिद्धिं तर्पयामि भुक्ति - सिद्धं तर्पयामीच्छा - सिद्धिं तर्पयामीच्छा - सिद्धं तर्पयामि।
- प्राप्ति-सिद्धिं तर्पयामि प्राप्ति-सिद्धं तर्पयामि।
- सर्व-काम-सिद्धिं तर्पयामि
  सर्व-काम-सिद्धं तर्पयामि।।९४८
- ब्राह्मीं तर्पयामि ब्राह्मं तर्पयामि।
- माहेश्वरीं तर्पयामि माहेश्वरं तर्पयामि।
- कौमारीं तर्पयामि कौमारं तर्पयामि।
- वैष्णवीं तर्पयामि वैष्णवं तर्पयामि।
- वाराहीं तर्पयामि वाराहं तर्पयामि।
- माहेन्द्रीं तर्पयामि माहेन्द्रं तर्पयामि।
- चामुण्डां तर्पयामि चामुण्डं तर्पयामि।
- महा-लक्ष्मीं तर्पयामि
  महा-लक्ष्मीं तर्पयामि।।१०६२
- सर्व-संक्षोभिणीं तर्पयामि
  सर्व-संक्षोभिणं तर्पयामि।
- सर्व-विद्राविणीं तर्पयामि
  सर्व-विद्राविणं तर्पयामि।
- सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि सर्वाकर्षिणं तर्पयामि।
- सर्व-वशङ्करीं तर्पयामि सर्व-वशङ्करं तर्पयामि।
- सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि सर्वोन्मादिनं तर्पयामि।
- सर्व-महांकुशां तर्पयामि सर्व-महांकुशं तर्पयामि।
- सर्व-खेचरीं तर्पयामि सर्व-खेचरं तर्पयामि।
- सर्व-बीजां तर्पयामि सर्व-बीजं तर्पयामि।
- सर्व-योनिं तर्पयामि सर्व-योनिं तर्पयामि।
- सर्व-त्रिखण्डां तर्पयामि सर्व-त्रिखण्डं तर्पयामि।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
  त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- प्रकट - योगिनीं तर्पयामि
  प्रकट - योगिनं तर्पयामि।।१२९६
- कामाकर्षिणीं तर्पयामि कामाकर्षणं तर्पयामि।

- बुद्ध्याकर्षिणीं तर्पयामि बुद्ध्याकर्षणं तर्पयाम्यहङ्काराकर्षिणीं तर्पयाम्यहङ्काराकर्षणं तर्पयामि।
- शब्दाकर्षिणीं तर्पयामि शब्दाकर्षणं तर्पयामि।
- स्पर्शाकर्षिणीं तर्पयामि स्पर्शाकर्षणं तर्पयामि।
- रूपाकर्षिणीं तर्पयामि रूपाकर्षणं तर्पयामि।
- रसाकर्षिणीं तर्पयामि रसाकर्षणं तर्पयामि।
- गन्धाकर्षिणीं तर्पयामि गन्धाकर्षणं तर्पयामि।
- चित्ताकर्षिणीं तर्पयामि चित्ताकर्षणं तर्पयामि।
- धैर्याकर्षिणीं तर्पयामि धैर्याकर्षणं तर्पयामि।
- स्मृत्याकर्षिणीं तर्पयामि स्मृत्याकर्षणं तर्पयामि।
- नामाकर्षिणीं तर्पयामि नामाकर्षणं तर्पयामि।
- बीजाकर्षिणीं तर्पयामि बीजाकर्षणं तर्पयाम्यात्माकर्षिणीं तर्पयाम्यात्माकर्षणं तर्पयाम्यमृताकर्षिणीं तर्पयाम्यमृताकर्षणं तर्पयामि।
- शरीराकर्षिणीं तर्पयामि शरीराकर्षणं तर्पयामि।
- सर्वाशा-परि-पूरक-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि सर्वाशा - परि - पूरक - चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।१६२०
- गुप्त - योगिनीं तर्पयामि गुप्त - योगिनं तर्पयाम्यनङ्ग-कुसुमां तर्पयाम्यनङ्ग-कुसुमं तर्पयाम्यनङ्ग-मेखलां तर्पयाम्यनङ्ग-मेखलं तर्पयाम्यनङ्ग-मदनां तर्पयाम्यनङ्ग-मदनं तर्पयाम्यनङ्ग-मदनातुरां तर्पयाम्यनङ्ग-मदनातुरं तर्पयाम्यनङ्ग - रेखां तर्पयाम्यनङ्ग - रेखं तर्पयाम्यनङ्ग-वेगिनीं तर्पयाम्यनङ्ग-वेगिनं तर्पयाम्यनङ्गांकुशां तर्पयाम्यनङ्गांकुशं तर्पयाम्यनङ्ग-मालिनीं तर्पयाम्यनङ्ग-मालिनं तर्पयामि।
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- गुप्ततर-योगिनीं तर्पयामि गुप्ततर-योगिनं तर्पयामि।।१८३४
- सर्व-संक्षोभिणीं तर्पयामि सर्व-संक्षोभिणं तर्पयामि।
- सर्व-विद्राविणीं तर्पयामि सर्व-विद्राविणं तर्पयामि।
- सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि सर्वाकर्षिणं तर्पयामि।
- सर्वाह्लादिनीं तर्पयामि सर्वाह्लादिनं तर्पयामि।
- सर्व-सम्मोहिनीं तर्पयामि सर्व-सम्मोहिनं तर्पयामि।
- सर्व-स्तम्भिनीं तर्पयामि सर्व-स्तम्भिनं तर्पयामि।
- सर्व-जृम्भिणीं तर्पयामि सर्व-जृम्भिणं तर्पयामि।
- सर्व-वशङ्करीं तर्पयामि सर्व-वशङ्करं तर्पयामि।
- सर्व-रञ्जिनीं तर्पयामि सर्व-रञ्जिनं तर्पयामि।
- सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि सर्वोन्मादिनं तर्पयामि।
- सर्वार्थ-साधिनीं तर्पयामि सर्वार्थ-साधिनं तर्पयामि।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरणां तर्पयामि सर्व-सम्पत्ति-पूरणं तर्पयामि।
- सर्व-मन्त्र-मयीं तर्पयामि सर्व-मन्त्र-मयं तर्पयामि।

- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करीं तर्पयामि
  सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करं तर्पयामि।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
  सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- सम्प्रदाय-योगिनीं तर्पयामि
  सम्प्रदाय-योगिनं तर्पयामि।।२१६६
- सर्व-सिद्धि-प्रदां तर्पयामि
  सर्व-सिद्धि-प्रदं तर्पयामि।
- सर्व-सम्पत्प्रदां तर्पयामि सर्व-सम्पत्प्रदं तर्पयामि।
- सर्व-प्रियङ्करीं तर्पयामि सर्व-प्रियङ्करं तर्पयामि।
- सर्व-मङ्गल-कारिणीं तर्पयामि
  सर्व-मङ्गल-कारिणं तर्पयामि।
- सर्व-काम-प्रदां तर्पयामि
  सर्व-काम-प्रदं तर्पयामि।
- सर्व-दुःख-विमोचिनीं तर्पयामि
  सर्व-दुःख-विमोचिनं तर्पयामि।
- सर्व-मृत्यु-प्रशमनीं तर्पयामि
  सर्व-मृत्यु-प्रशमनं तर्पयामि।
- सर्व-विघ्न-निवारिणीं तर्पयामि
  सर्व-विघ्न-निवारिणं तर्पयामि।
- सर्वाङ्ग-सुन्दरीं तर्पयामि सर्वाङ्ग-सुन्दरं तर्पयामि।
- सर्व-सौभाग्य-दायिनीं तर्पयामि
  सर्व-सौभाग्य-दायिनं तर्पयामि।
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
  सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- कुलोत्तीर्ण-योगिनीं तर्पयामि
  कुलोत्तीर्ण-योगिनं तर्पयामि।।२४३८
- सर्वज्ञां तर्पयामि सर्वज्ञं तर्पयामि।
- सर्व-शक्तिं तर्पयामि सर्व-शक्तिं तर्पयामि।
- सर्वैश्वर्य-प्रदां तर्पयामि सर्वैश्वर्य-प्रदं तर्पयामि।
- सर्व-ज्ञान-मयीं तर्पयामि
  सर्व-ज्ञान-मयं तर्पयामि।
- सर्व-व्याधि-विनाशिनीं तर्पयामि
  सर्व-व्याधि-विनाशिनं तर्पयामि।
- सर्वाधार-स्वरूपां तर्पयामि
  सर्वाधार-स्वरूपं तर्पयामि।
- सर्व-पाप-हरां तर्पयामि सर्व-पाप-हरं तर्पयामि।
- सर्वानन्द-मयीं तर्पयामि सर्वानन्द-मयं तर्पयामि।
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिणीं तर्पयामि
  सर्व-रक्षा-स्वरूपिणं तर्पयामि।
- सर्वेप्सित-प्रदां तर्पयामि सर्वेप्सित-प्रदं तर्पयामि।
- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
  सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- निगर्भ-योगिनीं तर्पयामि
  निगर्भ-योगिनं तर्पयामि।।२६८८
- वशिनीं तर्पयामि वशिनं तर्पयामि।
- कामेश्वरीं तर्पयामि कामेश्वरं तर्पयामि।
- मोदिनीं तर्पयामि मोदिनं तर्पयामि।
- विमलां तर्पयामि विमलं तर्पयाम्यरुणां
  तर्पयाम्यरुणं तर्पयामि।
- जयिनीं तर्पयामि जयिनं तर्पयामि।

- सर्वेश्वरीं तर्पयामि सर्वेश्वरं तर्पयामि।
- कौलिनीं तर्पयामि कौलिनं तर्पयामि।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- रहस्य - योगिनीं तर्पयामि रहस्य - योगिनं तर्पयामि।।२८५२
- बाणिनीं तर्पयामि बाणिनं तर्पयामि।
- चापिनीं तर्पयामि चापिनं तर्पयामि।
- पाशिनीं तर्पयामि पाशिनं तर्पयाम्यंकुशिनीं तर्पयाम्यंकुशिनं तर्पयामि।।२९०८
- महा-कामेश्वरीं तर्पयामि महा-कामेश्वरं तर्पयामि।
- महा-वज्रेश्वरीं तर्पयामि महा-वज्रेश्वरं तर्पयामि।
- महा-भग-मालिनीं तर्पयामि महा-भग-मालिनं तर्पयामि।
- महा-श्रीसुन्दरीं तर्पयामि महा-श्रीसुन्दरं तर्पयामि।
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि सर्व - सिद्धि - प्रद - चक्र - स्वामिनं तर्पयाम्यतिरहस्य-योगिनीं तर्पयाम्यतिरहस्य-योगिनं तर्पयामि।।३०४२
- श्रीश्री-महा-भट्टारिकां तर्पयामि श्रीश्री-महा-भट्टारकं तर्पयामि।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि।
- परापर-रहस्य-योगिनीं तर्पयामि परापर-रहस्य-योगिनं तर्पयामि।।३१२४
- त्रिपुरां तर्पयामि त्रिपुरं तर्पयामि।
- त्रिपुरेशीं तर्पयामि त्रिपुरेशं तर्पयामि।
- त्रिपुर-सुन्दरीं तर्पयामि त्रिपुर-सुन्दरं तर्पयामि।
- त्रिपुर-वासिनीं तर्पयामि त्रिपुर-वासिनं तर्पयामि।
- त्रिपुरा-श्रियं तर्पयामि त्रिपुरा-श्रियं तर्पयामि।
- त्रिपुर-मालिनीं तर्पयामि त्रिपुर-मालिनं तर्पयामि।
- त्रिपुरा-सिद्धां तर्पयामि त्रिपुरा-सिद्धं तर्पयामि।
- त्रिपुराम्बां तर्पयामि त्रिपुराम्बं तर्पयामि।
- महा-त्रिपुर-सुन्दरीं तर्पयामि महा-त्रिपुर-सुन्दरं तर्पयामि ।।३२९०
- महा-महेश्वरीं तर्पयामि महा-महेश्वरं तर्पयामि।
- महा-महा-राज्ञीं तर्पयामि महा-महा-राजं तर्पयामि।
- महा-महा-शक्तिं तर्पयामि महा-महा-शक्तिं तर्पयामि।
- महा-महा-गुप्तां तर्पयामि महा-महा-गुप्तं तर्पयामि।
- महा-महा-ज्ञप्तिं तर्पयामि महा-महा-ज्ञप्तिं तर्पयामि।
- महा-महा-नन्दां तर्पयामि महा-महा-नन्दं तर्पयामि।
- महा-महा-स्पन्दां तर्पयामि महा-महा-स्पन्दं तर्पयामि।

- महा-महाशयां तर्पयामि
  महा-महाशयं तर्पयामि।
- महा-महा-श्रीचक्र-नगर-साम्राज्ञीं तर्पयामि
  महा - महा - श्रीचक्र - नगर - सम्राजं तर्पयामि।।३४८४
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।। ३४९३

•••

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा–

।।विनियोग।।

श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता-प्रसादेन मम सर्व-नित्यानन्द-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-तर्पणान्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् कराङ्ग-न्यास और षडङ्ग-न्यास कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका मानस-पूजन करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।निष्काम ध्यान।।

कुलाकुलाग्नीषोमात्म - क्रिया - ज्ञानैक - रस्यतः,
नित्य - निष्पन्द - संरम्भ - निर्भरानन्द - चिद् - घने।
महा - बिन्दु - महः पीठे, नव्य-दिव्य-रसोज्ज्वलम्,
शिव - शक्त्यात्मकं किञ्चिदद्वैतं दैवतं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

अलौकिकं लौकिकं, चेत्यानन्द - द्वितयं सदा।
सुलभं परमेशानि!, त्वत् - पादौ भजतां नृणाम्।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे–

(१) गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-तर्पणान्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-तर्पणान्त'-माला-मन्त्र-जपेन श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) श्रीलीलावती-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीलावण्य-नायक-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता-प्रसादेन मम 'सर्व-नित्यानन्द'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् **पृथिवी**–हमारे लिए शान्ति-दायिनी हो, **अन्तरिक्ष** और **दिव्याकाश**–कल्याणकारी हों, **देव-गण**–अभय देनेवाले हों, **दिशाएँ, विदिशाएँ** और **ऊर्ध्व दिशाएँ**–मङ्गल-मय हों तथा **जल-राशियाँ (सागर)**–चारों ओर से रक्षा करें। **ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति** हो।

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या **तीन सहस्त्र चार सौ तिरानबे** है।

यह '**तर्पणान्त-माला**' है अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में **तर्पयामि** है।

अतः **मन्त्र-जप** के साथ उस-उस मन्त्र में निर्दिष्ट देवता के प्रति

कुल-कुण्डलिनी के मुख में **तर्पण** की भावना करता जाए।

बाह्य-पूजन में प्रति तर्पयामि पर

जिह्वाग्र-स्थित **कुल-कुण्डलिनी** को **तर्पण** कराता जाए।

(१५)

शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-जयान्त-माला

पूर्णिमा (शुक्ल-पक्ष)	'ह्रीं'	प्रतिपदा (कृष्ण-पक्ष)

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीशुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-जयान्त-माला-मन्त्रस्य पुरुष-तत्त्वाधिष्ठायि-शिवात्मक-श्रीसायमादित्य ऋषिः। कृतिच्छन्दः। राजस-ह्रीङ्कार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन देवता। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजं। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तिः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकं। भोग-मोक्ष-सिद्धौ विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

पुरुष-तत्त्वाधिष्ठायि-शिवात्मक-श्रीसायमादित्य-ऋषये नमः शिरसि। कृतिच्छन्दसे नमः मुखे। राजस-ह्रीङ्कार-भट्टारक-पीठ-स्थित-श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवतायै नमः हृदि। ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सौः स-क-ल-ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। भोग-मोक्ष-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

कुलाकुलाग्नीषोमात्म - क्रिया - ज्ञानैक - रस्थतः,
नित्य - निष्पन्द - संरम्भ - निर्भरानन्द - चिद् - घने।
महा - बिन्दु - महः पीठे, नव्य-दिव्य-रसोज्ज्वलम्,
शिव - शक्त्यात्मकं किञ्चिदद्वैतं दैवतं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

या भोग-दायिनी देवी, जीवनमुक्ति-प्रदा न सा।
मोक्षदा तु न भोगाय, ललिता तूभय-प्रदा।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

।।गुरु-वन्दना।।

ॐ श्वेतं श्वेत - विलेप - माल्य - वसनं वामेन रक्तोत्पलम्।
विभ्रत्या प्रियया चोत्तरेण सहसाऽऽश्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भु-स्वरूपं गुरुम्।
हाला-लोहित-लोचनोत्पल-युगं ध्याये शिरस्थं पदम्।।१

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर-ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२

ॐ अज्ञान - तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन - शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् - पदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४

।।भगवान् महा-गणपति-पूजन।।

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्री पादुकां पूजयामि नमः।

माला-पारायण

- ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दरि जय जय त्रिपुर-सुन्दर जय जय।।२६
- हृदय-देवि जय जय हृदय-देव जय जय।
- शिरो-देवि जय जय शिरो-देव जय जय।
- शिखा-देवि जय जय शिखा-देव जय जय।
- कवच-देवि जय जय कवच-देव जय जय।
- नेत्र-देवि जय जय नेत्र-देव जय-जयास्त्र-देवि जय-जयास्त्र-देव जय जय।।१२४
- कामेश्वरि जय जय कामेश्वर जय जय।
- भग-मालिनि जय जय भग-मालिन् जय जय।
- नित्य-क्लिन्ने जय जय नित्य-क्लिन्न जय जय।
- भेरुण्डे जय जय भेरुण्ड जय जय।
- वह्नि-वासिनि जय जय वह्नि-वासिन् जय जय।
- महा-वज्रेश्वरि जय जय महा-वज्रेश्वर जय जय।
- शिवा-दूति जय जय शिवा-दूत जय जय।
- त्वरिते जय जय त्वरित जय जय।
- कुल-सुन्दरि जय जय कुल-सुन्दर जय जय।
- नित्ये जय जय नित्य जय जय।
- नील-पताके जय जय नील-पताक जय जय।
- विजये जय जय विजय जय जय।
- सर्व-मङ्गले जय जय सर्व-मङ्गल जय जय।
- ज्वाला-मालिनि जय जय ज्वाला-मालिन् जय जय।
- चित्रे जय जय चित्र जय जय।
- महा-नित्ये जय जय महा-नित्य जय जय।।३७९
- परमेश्वर-परमेश्वरि जय जय परमेश्वर-परमेश्वर जय जय।
- मित्रेश-मयि जय जय मित्रेश-मय जय जय।
- षष्ठीश-मयि जय जय षष्ठीश-मय जय जयोड्डीश-मयि-जय जयोड्डीश-मय जय जय।
- चर्यानाथ-मयि जय जय चर्यानाथ-मय जय जय।
- लोपामुद्रा-मयि जय जय लोपामुद्रा-मय जय जयागस्त्य-मयि जय जयागस्त्य-मय जय जय।
- काल-तापन-मयि जय जय काल-तापन-मय जय जय।
- धर्माचार्य-मयि जय जय धर्माचार्य-मय जय जय।
- मुक्तकेशीश्वरि-मयि जय जय मुक्तकेशीश्वर-मय जय जय।
- दीप-कला-नाथ-मयि जय जय दीप-कला-नाथ-मय जय जय।
- विष्णु-देव-मयि जय जय विष्णु-देव-मय जय जय।
- प्रभाकर-देव-मयि जय जय प्रभाकर-देव-मय जय जय।
- तेजो-देव-मयि जय जय तेजो-देव-मय जय जय।

- मनोज-देव-मयि जय जय
  मनोज-देव-मय जय जय।
- कल्याण-देव-मयि जय जय
  कल्याण-देव-मय जय जय।
- रत्न-देव-मयि जय जय
  रत्न-देव-मय जय जय।
- वासुदेव-मयि जय जय
  वासुदेव-मय जय जय।।७५३
- श्रीरामानन्द-मयि जय जय श्रीरामानन्द-मय जय जयाणिमा-सिद्धे जय जयाणिमा-सिद्ध जय जय।
- लघिमा-सिद्धे जय जय
  लघिमा-सिद्ध जय जय।
- महिमा-सिद्धे जय जय महिमा-सिद्ध जय जयेशित्व-सिद्धे जय जयेशित्व-सिद्ध जय जय।
- वशित्व-सिद्धे जय जय
  वशित्व-सिद्ध जय जय।
- प्राकाम्य-सिद्धे जय जय
  प्राकाम्य-सिद्ध जय जय।
- भुक्ति-सिद्धे जय जय भुक्ति-सिद्ध जय जयेच्छा-सिद्धे जय जयेच्छा-सिद्ध जय जय।
- प्राप्ति-सिद्धे जय जय प्राप्ति-सिद्ध जय जय।
- सर्व-काम-सिद्धे जय जय
  सर्व-काम-सिद्ध जय जय।।९४५
- ब्राह्मि जय जय ब्राह्म जय जय।
- माहेश्वरि जय जय माहेश्वर जय जय।
- कौमारि जय जय कौमार जय जय।
- वैष्णवि जय जय वैष्णव जय जय।
- वाराहि जय जय वाराह जय जय।
- माहेन्द्रि जय जय माहेन्द्र जय जय।
- चामुण्डे जय जय चामुण्ड जय जय।
- महा-लक्ष्मि जय जय
  महा-लक्ष्मि जय जय।।१०५९
- सर्व-संक्षोभिणि जय जय
  सर्व-संक्षोभिन् जय जय।
- सर्व-विद्राविणि जय जय
  सर्व-विद्राविन् जय जय।
- सर्वाकर्षिणि जय जय सर्वाकर्षिन् जय जय।
- सर्व-वशङ्करि जय जय सर्व-वशङ्कर जय जय।
- सर्वोन्मादिनि जय जय सर्वोन्मादिन् जय जय।
- सर्व-महांकुशे जय जय
  सर्व-महांकुश जय जय।
- सर्व-खेचरि जय जय सर्व-खेचर जय जय।
- सर्व-बीजे जय जय सर्व-बीज जय जय।
- सर्व-योने जय जय सर्व-योने जय जय।
- सर्व-त्रिखण्डे जय जय
  सर्व-त्रिखण्ड जय जय।
- त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिनि जय जय त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- प्रकट-योगिनि जय जय
  प्रकट-योगिन् जय जय।।१२८७
- कामाकर्षिणि जय जय कामाकर्षण जय जय।

- बुद्ध्याकर्षिणि जय जय बुद्ध्याकर्षण जय जयाहङ्काराकर्षिणि जय जयाहङ्काराकर्षण जय जय।
- शब्दाकर्षिणि जय जय शब्दाकर्षण जय जय।
- स्पर्शाकर्षिणि जय जय स्पर्शाकर्षण जय जय।
- रूपाकर्षिणि जय जय रूपाकर्षण जय जय।
- रसाकर्षिणि जय जय रसाकर्षण जय जय।
- गन्धाकर्षिणि जय जय गन्धाकर्षण जय जय।
- चित्ताकर्षिणि जय जय चित्ताकर्षण जय जय।
- धैर्याकर्षिणि जय जय धैर्याकर्षण जय जय।
- स्मृत्याकर्षिणि जय जय स्मृत्याकर्षण जय जय।
- नामाकर्षिणि जय जय नामाकर्षण जय जय।
- बीजाकर्षिणि जय जय बीजाकर्षण जय जयात्माकर्षिणि जय जयात्माकर्षण जय जयामृताकर्षिणि जय जयामृताकर्षण जय जय।
- शरीराकर्षिणि जय जय शरीराकर्षण जय जय।
- सर्वाशापरि-पूरक-चक्र-स्वामिनि जय जय सर्वाशापरि - पूरक - चक्र - स्वामिन् जय जय।।१६१०
- गुप्त-योगिनि जय जय गुप्त-योगिन् जय जयानङ्ग-कुसुमे जय जयानङ्ग-कुसुम जय जयानङ्ग-मेखले जय जयानङ्ग-मेखल जय जयानङ्ग-मदने जय जयानङ्ग-मदन जय जयानङ्ग-मदनातुरे जय जयानङ्ग-मदनातुर जय जयानङ्ग - रेखे जय जयानङ्ग - रेख जय जयानङ्ग-वेगिनि जय जयानङ्ग-वेगिन् जय जयानङ्गांकुशे जय जयानङ्गांकुश जय जयानङ्ग-मालिनि जय जयानङ्ग-मालिन् जय जय।
- सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनि जय जय सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- गुप्त-तर-योगिनि जय जय गुप्त-तर-योगिन् जय जय।।१८१९
- सर्व-संक्षोभिणि जय जय सर्व-संक्षोभिन् जय जय।
- सर्व-विद्राविणि जय जय सर्व-विद्राविन् जय जय।
- सर्वाकर्षिणि जय जय सर्वाकर्षिन् जय जय।
- सर्वाह्लादिनि जय जय सर्वाह्लादिन् जय जय।
- सर्व-सम्मोहिनि जय जय सर्व-सम्मोहिन् जय जय।
- सर्व-स्तम्भिनि जय जय सर्व-स्तम्भिन् जय जय।
- सर्व-जृम्भिणि जय जय सर्व-जृम्भिन् जय जय।
- सर्व-वशङ्करि जय जय सर्व-वशङ्कर जय जय।
- सर्व-रञ्जिनि जय जय सर्व-रञ्जिन् जय जय।
- सर्वोन्मादिनि जय जय सर्वोन्मादिन् जय जय।
- सर्वार्थ-साधिनि जय जय सर्वार्थ-साधिन् जय जय।
- सर्व-सम्पत्ति-पूरणि जय जय सर्व-सम्पत्ति-पूरण जय जय।

- सर्व-मन्त्र-मयि जय जय
  सर्व-मन्त्र-मय जय जय।
- सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करि जय जय
  सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्कर जय जय।
- सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिनि जय जय सर्व-सौभाग्य-दायक-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- सम्प्रदाय-योगिनि जय जय
  सम्प्रदाय-योगिन् जय जय।।२१३९
- सर्व-सिद्धि-प्रदे जय जय
  सर्व-सिद्धि-प्रद जय जय।
- सर्व-सम्पत्प्रदे जय जय
  सर्व-सम्पत्प्रद जय जय।
- सर्व-प्रियङ्करि जय जय
  सर्व-प्रियङ्कर जय जय।
- सर्व-मङ्गल-कारिणि जय जय
  सर्व-मङ्गल-कारिन् जय जय।
- सर्व-काम-प्रदे जय जय
  सर्व-काम-प्रद जय जय।
- सर्व-दुःख-विमोचिनि जय जय
  सर्व-दुःख-विमोचिन् जय जय।
- सर्व-मृत्यु-प्रशमनि जय जय
  सर्व-मृत्यु-प्रशमन जय जय।
- सर्व-विघ्न-निवारिणि जय जय
  सर्व-विघ्न-निवारिन् जय जय।
- सर्वाङ्ग-सुन्दरि जय जय
  सर्वाङ्ग-सुन्दर जय जय।
- सर्व-सौभाग्य-दायिनि जय जय
  सर्व-सौभाग्य-दायिन् जय जय।
- सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनि जय जय
  सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- कुलोत्तीर्ण-योगिनि जय जय
  कुलोत्तीर्ण-योगिन् जय जय।।२४०५
- सर्वज्ञे जय जय सर्वज्ञ जय जय।
- सर्व-शक्ते जय जय सर्व-शक्ते जय जय।
- सर्वैश्वर्य-प्रदे जय जय सर्वैश्वर्य-प्रद जय जय।
- सर्व-ज्ञान-मयि जय जय
  सर्व-ज्ञान-मय जय जय।
- सर्व-व्याधि-विनाशिनि जय जय
  सर्व-व्याधि-विनाशिन् जय जय।
- सर्वाधार-स्वरूपे जय जय
  सर्वाधार-स्वरूप जय जय।
- सर्व-पाप-हरे जय जय
  सर्व-पाप-हर जय जय।
- सर्वानन्द-मयि जय जय
  सर्वानन्द-मय जय जय।
- सर्व-रक्षा-स्वरूपिणि जय जय
  सर्व-रक्षा-स्वरूपिन् जय जय।
- सर्वेप्सित-प्रदे जय जय
  सर्वेप्सित-प्रद जय जय।
- सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिनि जय जय
  सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- निगर्भ-योगिनि जय जय
  निगर्भ-योगिन् जय जय।।२६५१

- वशिनि जय जय वशिन् जय जय।
- कामेश्वरि जय जय कामेश्वर जय जय।
- मोदिनि जय जय मोदिन् जय जय।
- विमले जय जय विमल जय जय।
- अरुणे जय जय अरुण जय जय।
- जयिनि जय जय जयिन् जय जय।
- सर्वेश्वरि जय जय सर्वेश्वर जय जय।
- कौलिनि जय जय कौलिन् जय जय।
- सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिनि जय जय
  सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- रहस्य-योगिनि जय जय
  रहस्य-योगिन् जय जय।।२८११
- बाणिनि जय जय बाणिन् जय जय।
- चापिनि जय जय चापिन् जय जय।
- पाशिनि जय जय पाशिन् जय जय।
- अंकुशिनि जय जय अंकुशिन् जय जय।
- महा-कामेश्वरि जय जय
  महा-कामेश्वर जय जय।
- महा-वज्रेश्वरि जय जय
  महा-वज्रेश्वर जय जय।
- महा-भग-मालिनि जय जय
  महा-भग-मालिन् जय जय।
- महा-श्रीसुन्दरि जय जय
  महा-श्रीसुन्दर जय जय।
- सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिनि जय जय
  सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिन् जय जयाति-रहस्य-योगिनि जय जयाति-रहस्य-योगिन्
  जय जय।।२९९६
- श्रीश्री-महा-भट्टारिके जय जय
  श्रीश्री-महा-भट्टारक जय जय।
- सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनि जय जय
  सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिन् जय जय।
- परापर-रहस्य-योगिनि जय जय
  परापर-रहस्य-योगिन् जय जय।।३०७६
- त्रिपुरे जय जय त्रिपुर जय जय।
- त्रिपुरेशि जय जय त्रिपुरेश जय जय।
- त्रिपुर-सुन्दरि जय जय त्रिपुर-सुन्दर जय जय।
- त्रिपुर-वासिनि जय जय
  त्रिपुर-वासिन् जय जय।
- त्रिपुरा-श्रीर्जयजय त्रिपुरा-श्रीर्जयजय।
- त्रिपुर-मालिनि जय जय
  त्रिपुर-मालिन् जय जय।
- त्रिपुरा-सिद्धे जय जय त्रिपुरा-सिद्ध जय जय।
- त्रिपुराम्ब जय जय त्रिपुराम्ब जय जय।
- महा-त्रिपुर-सुन्दरि जय जय
  महा-त्रिपुर-सुन्दर जय जय ।।३२३८
- महा-महेश्वरि जय जय महा-महेश्वर जय जय।
- महा-महा-राज्ञि जय जय
  महा-महा-राज जय जय।
- महा-महा-शक्ते जय जय
  महा-महा-शक्ते जय जय।
- महा-महा-गुप्ते जय जय
  महा-महा-गुप्त जय जय।

- महा-महा-ज्ञप्ते जय जय
  महा-महा-ज्ञप्ते जय जय।
- महा-महा-नन्दे जय जय
  महा-महा-नन्द जय जय।
- महा-महा-स्पन्दे जय जय
  महा-महा-स्पन्द जय जय।
- महा-महाशये जय जय
  महा-महाशय जय जय।
- महा-महा-श्रीचक्रनगर-साम्राज्ञि जय जय
  महा - महा - श्रीचक्र - नगर - सम्राज जय जय।।३४३२
- नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।। ३४४१

•••

।।जप-समर्पण।।

उक्त प्रकार जप कर अन्त में जप-समर्पण करे। यथा–

।।विनियोग।।

श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता-प्रसादेन मम भोग-मोक्ष-सिद्धि-प्राप्त्यर्थे मया कृत शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-जयान्त-माला-मन्त्र-जप-समर्पणे विनियोगः।

इसके बाद पुनः पूर्व-वत् कराङ्ग-न्यास और षडङ्ग-न्यास कर देवता का पुनः ध्यान कर पूर्व-वत् उनका मानस-पूजन करे। यथा–

।।कराङ्ग-न्यास।।

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।।षडङ्ग-न्यास।।

ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

।।निष्काम ध्यान।।

कुलाकुलाग्नीषोमात्म - क्रिया - ज्ञानैक - रस्यतः,
नित्य - निष्पन्द - संरम्भ - निर्भरानन्द - चिद् - घने।
महा - बिन्दु - महः पीठे, नव्य-दिव्य-रसोज्ज्वलम्,
शिव - शक्त्यात्मकं किञ्चिदद्वैतं दैवतं भजे।।

।।सकाम ध्यान।।

या भोग-दायिनी देवी, जीवनमुक्ति-प्रदा न सा।
मोक्षदा तु न भोगाय, ललिता तूभय-प्रदा।।

।।मानस-पूजा।।

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ से)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख तर्जनी एवं अंगुष्ठ से)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख मध्यमा एवं अंगुष्ठ से)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख अनामा एवं अंगुष्ठ से)।

६. सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-मिथुन-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख सभी अंगुलियों से)।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से जप को समर्पित करे-

(१) गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिः भवतु मे देवि!, त्वत्-प्रसादान् महेश्वरि।।

(२) मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-जयान्त'-माला-मन्त्र-जपानुष्ठानं श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवतायै अर्पणमस्तु।

(३) अनेन मया कृतेन 'शुद्ध-शक्ति-शिव-मिथुन-जयान्त'-माला-मन्त्र-जपेन श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता सु-प्रीता सु-प्रसन्ना वरदा भवतु।

(४) श्रीहरेश्वरी-ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-श्रीहिरण्य-बाहु-कामेश्वर-महा-भट्टारक-मिथुन-देवता-प्रसादेन मम 'भोग-मोक्ष'-सिद्धि-प्राप्तिरस्तु।

(५) सर्वं श्रीसद्गुरु-परदेवता-परब्रह्मार्पणमस्तु।

शान्ति-पाठ

(३ बार पाठ)

ॐ शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं, द्यौर्नो देवमभयं नो अस्तु।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नः, आपो विश्वतः परिपान्तु सर्वतः।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् **पृथिवी**–हमारे लिए शान्ति–दायिनी हो, **अन्तरिक्ष** और **दिव्याकाश**–कल्याणकारी हों, **देव-गण**–अभय देनेवाले हों, **दिशाएँ, विदिशाएँ** और **ऊर्ध्व दिशाएँ**–मङ्गल-मय हों तथा **जल-राशियाँ** (सागर)–चारों ओर से रक्षा करें। **ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।**

•••

उक्त माला में कुल मन्त्राक्षर-संख्या **तीन सहस्त्र चार सौ इकतालीस** है।

यह '**जयान्त-माला**' है अर्थात् प्रत्येक मन्त्र के अन्त में **जय जय** है।

अतः मन्त्र-जप के साथ उस मन्त्र में

निर्दिष्ट देवता के प्रति मन में **नमस्कार** की भावना करता जाए।

बाह्य-पूजन में प्रति जय जय पर देवता के प्रति **पुष्पाञ्जलि** देता जाए।

परिशिष्ट

१. सौभाग्य-वर्द्धक पुष्पाञ्जलि

माला-पारायण के बाद निम्न-लिखित प्रकार से भगवती श्री श्रीविद्या (श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी) के प्रति सुगन्धित पुष्पाञ्जलि अर्पित करनी चाहिए। यथा–

०१. ॐ कामेश्वर्यै नमः।
०२. ॐ काम-शक्त्यै नमः।
०३. ॐ काम-सौभाग्य-दायिन्यै नमः।
०४. ॐ काम-रूपायै नमः।
०५. ॐ काम-कलायै नमः।
०६. ॐ कामिन्यै नमः।
०७. ॐ कमलासनायै नमः।
०८. ॐ कमलायै नमः।
०९. ॐ कल्पना-हीनायै नमः।
१०. ॐ कमनीय-कलावत्यै।
११. ॐ कमला-भारती-सेव्यायै नमः।
१२. ॐ कल्पिताशेष-संस्थितायै नमः।
१३. ॐ अनुत्तरायै नमः।
१४. ॐ अनघायै नमः।
१५. ॐ अनन्तायै नमः।
१६. ॐ अद्भुत-रूपायै नमः।
१७. ॐ अनलोद्भवायै नमः।
१८. ॐ अति-लोक-चरित्रायै नमः।
१९. ॐ अति-सुन्दर्यै नमः।
२०. ॐ अति-शुभ-प्रदायै नमः।
२१. ॐ अघ-हन्त्र्यै नमः।
२२. ॐ अति-विस्तारायै नमः।
२३. ॐ अर्चन-तुष्टायै नमः।
२४. ॐ अमित-प्रभायै नमः।
२५. ॐ एकार-रूपायै नमः।
२६. ॐ एक-वीरायै नमः।
२७. ॐ एक-नाथायै नमः।
२८. ॐ एकान्तार्चन-प्रियायै नमः।
२९. ॐ एकस्यै नमः।
३०. ॐ एक-भाव-तुष्टायै नमः।
३१. ॐ एक-रसायै नमः।
३२. ॐ एकान्त-जन-प्रियायै नमः।
३३. ॐ एध-मान-प्रभावायै नमः।
३४. ॐ एक-भक्त-पातक-नाशिन्यै नमः।
३५. ॐ एलामोद-लसन्मुख्ये नमः।
३६. ॐ एनोद्रि-शक्रायुध-स्थित्यै नमः।
३७. ॐ ईहा-शून्यायै नमः।
३८. ॐ ईप्सितायै नमः।
३९. ॐ ईशादि-सेव्यायै नमः।
४०. ॐ ईशान-वराङ्गनायै नमः।
४१. ॐ ईश्वराज्ञापिकायै नमः।
४२. ॐ ईकार-भाव्यायै नमः।
४३. ॐ ईप्सित-फल-प्रदायै नमः।
४४. ॐ ईशानायै नमः।
४५. ॐ ईति-हरायै नमः।
४६. ॐ ईशायै नमः।
४७. ॐ ईषदरुणाक्ष्यै नमः।
४८. ॐ ईश्वरेश्वर्यै नमः।
४९. ॐ ललितायै नमः।
५०. ॐ ललना-रूपायै नमः।

५१. ॐ लय-हीनायै नमः।
५२. ॐ लसत्तनवे नमः।
५३. ॐ लय-सर्वायै नमः।
५४. ॐ लय-क्षोण्यै नमः।
५५. ॐ लय-कर्त्र्यै नमः।
५६. ॐ लयात्मिकायै नमः।
५७. ॐ लघिमायै नमः।
५८. ॐ लघु-मध्याढ्यायै नमः।
५९. ॐ ललमानायै नमः।
६०. ॐ लघु-द्रुतायै नमः।
६१. ॐ हयारूढायै नमः।
६२. ॐ हतामित्रायै नमः।
६३. ॐ हर-कान्तायै नमः।
६४. ॐ हरि-स्थितायै नमः।
६५. ॐ हयग्रीवेष्टदायै नमः।
६६. ॐ हाला-प्रियायै नमः।
६७. ॐ हर्ष-समुद्धतायै नमः।
६८. ॐ हर्षणायै नमः।
६९. ॐ हल्लकाभाङ्ग्यै नमः।
७०. ॐ हस्त्यन्तैश्वर्य-दायिन्यै नमः।
७१. ॐ हल-हस्तार्चित-पदायै नमः।
७२. ॐ हविर्दान-प्रसादिन्यै नमः।
७३. ॐ रमायै नमः।
७४. ॐ रमार्चितायै नमः।
७५. ॐ राज्यै नमः।
७६. ॐ रम्यायै नमः।
७७. ॐ रव-मय्यै नमः।
७८. ॐ रत्यै नमः।
७९ ॐ रक्षिण्यै नमः।
८०. ॐ रमण्यै नमः।
८१. ॐ राकायै नमः।
८२. ॐ रमणी-मण्डल-प्रियायै नमः।
८३. ॐ रक्षिताखिल-लोकेशायै नमः।
८४. ॐ रक्षोगण-निषूदिन्यै नमः।
८५. ॐ अंहाऽन्त-कारिण्यै नमः।
८६. ॐ अम्भोज-प्रियायै नमः।
८७. ॐ अन्तक-भयङ्कर्यै नमः।
८८. ॐ अम्बु-रूपायै नमः।
८९. ॐ अम्बुज-करायै नमः।
९०. ॐ अम्बुज-जात-वर-प्रदायै नमः।
९१. ॐ अन्तः-पूजा-प्रियायै नमः।
९२. ॐ अन्तःस्थायै नमः।
९३. ॐ अरूपिण्यै नमः।
९४. ॐ अन्तर्वचो-मय्यै नमः।
९५. ॐ अन्तकाराति-वामाङ्क-स्थितायै नमः।
९६. ॐ अन्तःसुख-रूपिण्यै नमः।
९७. ॐ सर्वज्ञायै नमः।
९८. ॐ सर्वगायै नमः।
९९. ॐ सारायै नमः।
१००. ॐ समायै नमः।
१०१. ॐ सम-सुखायै नमः।
१०२. ॐ सत्यै नमः।
१०३. ॐ सन्तत्यै नमः।
१०४. ॐ सन्ततायै नमः।
१०५. ॐ सोमायै नमः।
१०६. ॐ सर्वस्यै नमः।
१०७. ॐ संख्यायै नमः।
१०८. ॐ सनातन्यै।।

उक्त १०८ नाम-मन्त्रों से भगवती श्री श्रीविद्या (श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी) के विविध स्वरूपों के प्रति श्रद्धा-भक्ति के साथ जो भक्त-जन सुगन्धित पुष्पों की अञ्जलि प्रदान करते हैं, उन्हें सर्व-सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

२. शान्ति-पाठ

श्री श्रीविद्या खड्ग-माला के नियमित पारायण से साधक का शरीर तेजो-मय हो उठता है और कभी-कभी उसे तेज को सँभालना कठिन प्रतीत होता है, हृदय व्याकुल हो उठता है। उस स्थिति की शान्ति के लिए **'माला-पारायण'** के बाद **शान्ति-स्तोत्र** का पाठ करना चाहिए। पीछे प्रत्येक माला के बाद **शान्ति-श्लोक-मन्त्र** दिया गया है। यहाँ तीन प्रकार के **शान्ति-स्तोत्र** एवं क्षमापण-**स्तोत्र** दिए जा रहा है। आशा है कि इनका पाठ कर साधक बन्धु आवश्यक लाभ उठाएँगे।

शान्ति-स्तोत्र

(प्रथम)

ॐ जय देवि जगद्धात्रि!, जय पापौघ-हारिणि!।
जय दुःख-प्रशमनि, शान्तिर्भव ममार्चने।।१

श्रीबाले परमेशानि!, जय कल्पान्त-कारिणि!।
जय सर्व-विपत्तिघ्ने, शान्तिर्भव ममार्चने।।२

जय विन्दु-नाद-रूपे, जय कल्याण-कारिणि!।
जय घोरे च शत्रुघ्ने, शान्तिर्भव ममार्चने।।३

मुण्ड-माले विशालाक्षि!, स्वर्ण-वर्णे चतुर्भुजे!।
महा-पद्म-वनान्तस्थे, शान्तिर्भव ममार्चने।।४

जगद्योनि महा-योनि, निर्णयातीत-रूपिणि!।
परा-प्रासाद-गृहिणि!, शान्तिर्भव ममार्चने।।५

इन्दु-चूड-युते चाक्ष-हस्ते परमेश्वरि!।
रुद्र-संस्थे महा-माये, शान्तिर्भव ममार्चने।।६

सूक्ष्मे स्थूले विश्व-रूपे, जय सङ्कट-तारिणि!।
यज्ञ-रूपे जाप्य - रूपे, शान्तिर्भव ममार्चने।।७

दूती-प्रिये द्रव्य-प्रिये, शिवे पञ्चांकुश-प्रिये!।
भक्ति-भाव-प्रिये भद्रे, शान्तिर्भव ममार्चने।।८

भाव-प्रिये लास - प्रिये, कारणानन्द-विग्रहे!।
श्मशानस्य देव - मूले, शान्तिर्भव ममार्चने।।९

ज्ञानाज्ञानात्मिके चाद्ये, भीति-निर्मूलन-क्षमे।।
वीर-वन्द्ये सिद्धि-दात्रि, शान्तिर्भव ममार्चने।।१०
स्मर-चन्दन-सुप्रीते, शोणितार्णव - संस्थिते।।
सर्व-सौख्य-प्रदे शुद्धे, शान्तिर्भव ममार्चने।।११
कापालिनि कलाधारे, कोमलाङ्गि कुलेश्वरि।।
कुल-मार्ग-रते सिद्धे, शान्तिर्भव ममार्चने।।१२
।। श्रीचिन्तामणि-तन्त्रे शान्ति-स्तोत्रम्।।

***

शान्ति-स्तोत्र

(द्वितीय)

ॐ जयन्तु मातरः सर्वा, जयन्तु योगिनी - गणाः।
जयन्तु सिद्ध - डाकिन्यो, जयन्तु गुरवः सदा।।१
जयन्तु साधकाः सर्वे, विशुद्धाः कौलिकाश्च ये।
समयाचार - सम्पन्नाः, जयन्तु पूजकाः नराः।।२
अणिमाद्याश्च सिद्धाश्च, नन्दन्तु भैरवादयः।
नन्दन्तु देवताः सर्वे, सिद्ध - विद्याधरादयः।।३
ये चाम्नाय - विशुद्धाश्च, मन्त्रिणः शुद्ध - बुद्धयः।
सर्वदानन्द - हृदयः, नन्दन्तु कुल - पालकाः।।४
नन्दन्तु अणिमा - सिद्धा, नन्दन्तु कुल - साधकाः।
इन्द्राद्या देवताः सर्वे, तृप्यन्तु वास्तु - देवताः।।५
सूर्य - चन्द्रादयो देवाः, तृप्यन्तु मम भक्तितः।
नक्षत्राणि ग्रहा योगाः, करणा राशयश्च ये।।६
तृप्यन्तु पितरः सर्वे, मासाः संवत्सरादयः।
खेचरा भूचराश्चैव, तृप्यन्तु मम भक्तितः।।७
अन्तरिक्ष-चरा ये च, ये चान्ये देव - योनयः।
सर्वे ते सुखिनो यान्तु, सर्पा नद्याश्च पक्षिणः।।८
पशवः स्थावराश्चैव, पर्वताः कन्दराः गुहाः।
ऋषयो ब्राह्मणाः सर्वे, शान्तिं कुर्वन्तु मे सदा।।९

तीर्थानि बहु-प्रसिद्धा, ये चान्ये पुण्य - भूमयः।
वृद्धा पति-व्रता यास्ताः, शान्तिं कुर्वन्तु मे सदा।।१०
शिवं सर्वत्र मे चाऽस्तु, पुत्र - दारा - धनादिषु।
राजानः सुखिनो यान्तु, मित्राः नन्दन्तु मे सदा।।११
साधका सुखिनः सन्तु, शिवं तिष्ठन्तु सर्वदा।
शुभा मे वन्दिताः सन्तु, मित्रा तिष्ठन्तु पूजकाः।।१२

।। श्रीरुद्र-यामले शान्ति-स्तोत्रम्।।

***

शान्ति-स्तोत्र

(तृतीय)

ॐ अनादि - घोर - संसार - व्याधि - ध्वंसैक - हेतवे।
नमः श्रीनाथ - वैद्याय, कुलौषधि - प्रदायिने।।१
योगिनी - चक्र - मध्यस्थं, मातृ - मण्डल - वेष्टितम्।
नमामि शिरसा नाथं, भैरवं भैरवी - प्रियम्।।२
आपदो दुरितं रोगाः, समयाचार - लङ्घनात्।
ते सर्वेऽत्र व्यपोहन्तु, दिव्य - चक्रस्य मेलनात्।।३
आयुरारोग्यमैश्वर्यं, कीर्तिर्लाभः सुखं जयः।
कान्तिर्मनोरथश्चास्तु, पान्तु सर्वाश्च देवताः।।४
यस्यार्चनेन विधिना, किमपीह लोके।
कर्म - प्रसिद्धमिति, नाम - फलं प्रसूते।।
तं सन्ततं सकल - साधक - चित्त - वृत्तिः।
चिन्तामणिं कुल - गणाधिपतिं नमामि।।५
रक्ताम्बरं ज्वलन - पिङ्ग - जटा - कपालम्।
ज्वालावली - कुटिल - चन्द्र - धरं प्रचण्डम्।।
बालार्क - धातु - कनकाचल - धातु - वर्णम्।
देवी - सुतं वटुक - नाथमहं भजामि।।६
ऊर्ध्वे ब्रह्माण्डतो वा दिवि, भुवन-तले भू-तले निस्तले वा।
पाताले वानले वा, पवन-सलिलयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा।।

क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च, कृत-पदा धूप-दीपादि-मांसैः।
प्रीता देव्यः सदा नः शुभ-बलि-विधिना पान्तु वीरेन्द्र-वन्द्याः।।७
देहस्थाखिल-देवता गज-मुखाः क्षेत्राधिपा भैरवाः।
योगिन्यो वटुकाश्च यक्ष-पितरो भूताः पिशाचा ग्रहाः।।
अन्ये भूचर-खेचरा दिशि-चरा वेतालकाश्चेटका-
स्तृप्यन्तां कुल-पुत्रकस्य पिवतः पानं स-दीपं चरुम्।।८
ब्रह्मा श्रीः-शेष-दुर्गा गुह-वटुक-गणा भैरवाः क्षेत्रपालाः।
वेतालादित्य-रुद्र-ग्रह-वसु-मनु-सिद्धाप्सरो गुह्यकाद्याः।।
भूता गर्न्धव-विद्याधर-ऋषि-पितृ-यक्षासुरा हि प्रभूताः।
योगीशाश्चारणाः किंपुरुष-मुनि-सुराश्चक्रगाः पान्तु सर्वे।।९
ये वाम-द्वैत-भावा हरि-चरण-पराः शङ्करा शक्तिपा ये।
निद्रावानन्दं येषां प्रसरति रसना नित्य-पूजादि-युक्ता।।
कारुण्यं वापि येषां मनसि स-विनयां ये परानन्द-सक्ताः।
तेषां लीला महेशी विरतु कुल-रता सर्वतः सर्व-दैन्या।।१०
या दिव्य-क्रम-पालिकाः क्षिति-गता या देवतास्तोयगाः।
या नित्यं प्रथित-प्रभाः शिखि-गता या मातरिश्वाश्रयाः।।
या व्योमामृत-मण्डलामृत-मया या सर्वदा सर्वगा-
स्ताः सर्वाः कुल-मार्ग-पालन-पराः शान्तिं प्रयच्छन्तु मे।।११
संत्यं चेद् गुरु-वाक्यमेव पितरो देवाश्च चेद् योगिनी-
प्रीतिश्चेत् पर-देवता च यदि चेद् वेदाः प्रमाणाश्च चेत्।।
शाक्तेयं यदि दर्शनं भवति चेदाज्ञेयमेषाऽस्ति चेत्-
सन्त्यत्रापि च कौलिकाश्च यदि चेत् स्यान्मे जयः सर्वदा ।।१२
अनेक-कोट्याः कुल-योगिनी नामन्तर्बहिः कौलिक-चक्र-संस्थाः।
निपीयमानेन परामृतेन प्रीता प्रसन्ना वरदा भवन्तु।।१३
शिवाद्यवनि-पर्यन्तं ब्रह्मादि-स्तम्ब-संयुतम्।
कालाग्न्यादि-शिवान्तं च जगद् यज्ञेन तृप्यतु।।१४
नन्दन्तु साधक - कुलान्वय - दर्शका ये।
सृष्ट्याद्यनाख्य - चतुरुक्त - महाऽन्वया ये।।

नन्दन्तु सर्व-कुल-कौल-रताः परे ये-
ऽप्यन्ये विशेष-पद-भेदक-शाम्भवा ये।।१५
नन्दन्तु सिद्ध-गुरवः स्व-गुरु-क्रमौघाः।
ज्येष्ठानुगाः समयिनो वटुकाः कुमार्यः।।
षड्-योगिनी-प्रवर-वीर-कुले प्रसूताः।
नन्दन्तु भूमि-पति-गो-द्विज-साधु-लोकाः।।१६
नन्दन्तु नीति-निपुणा निरवद्य-निष्ठाः।
निर्मत्सरा निरुपमा निरुपद्रवाश्च।।
नित्यं निरञ्जन-रता गुरवो निरीहाः।
शाक्ताश्च शान्त-मनसो हृत-शोक-शङ्काः।।१७
नन्दन्तु योग-निरताः कुल-योग-युक्ताः।
आचार्य - सामयिक - साधक - पुत्रकाश्च।।
गावो द्विजा युवतयो यतयः कुमार्यो।
धर्मे भवन्तु निरता गुरु-भक्ति-युक्ताः।।१८
जयन्तु देव्यो हर-पाद-पङ्कजं प्रसन्न-धामामृत-मोक्ष-दायकम्।
अनन्त-सिद्धान्त-मति-प्रबोधकं नमामि चाष्टाष्टक-योगिनी गणम्।।१९
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-योगीन्द्र-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः।।२०
शिवमस्तु सर्व - जगतां, पर - हित - निरता भवन्तु भूत - गणाः।
दोषाः प्रयान्तु शान्तिं, सर्वत्र जनाः सुखिनो भवन्तु।।२१
दासतां यातु भूपालः, शत्रवो यान्तु हीनताम्।
जगति वश्यमायान्तु, विघ्ना नश्यन्तु सर्वतः।।२२
कुलाभिनन्दिनी प्रीता, कुलीना सन्तु पूजकाः।
शक्तिः भक्ति-समायुक्ता, सुखं जीवन्तु साधकाः।।२३

।।श्रीदेवी-रहस्ये, एक-विंश-पटले शान्ति-स्तोत्रम्।।

***

विशेष

उक्त तीन प्रकार के शान्ति-स्तोत्रों में से किसी एक का अथवा तीनों का पाठ करना चाहिए।

क्षमापण-स्तोत्र

क

ॐ कञ्ज-मनोहर-पाद - चलन्मणि - नूपुर - हंस - विराजिते,
कञ्ज-भवादि-सुरौघ-परिष्टुत-लोक-विसृत्वर-वैभवे!
मञ्जुल-वाङ्मय-निर्जित-कीर-कुले, चल-राज-सुकन्यके,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।१।।

ए

एण - धरोज्ज्वल - फाल - तलोल्लसदैण-मदाङ्क-समन्विते,
शोण-पराग-विचित्रित-कन्दुक-सुन्दर-सुस्तन-शोभिते!
नील-पयोधर-काल-सुकुन्तल-निर्जित-भृङ्ग-कदम्बके,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।२।।

ई

ईति-विनाशिनि, भीति-निवारिण, दानव-हन्त्रि, दया-परे,
शीत-कराङ्कित-रत्न-विभूषित-हेम-किरीट-समन्विते!
दीप्त-तरायुध-भण्ड-महाऽसुर-गर्व-निहन्त्रि, पुराऽम्बिके,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।३।।

ल

लब्ध-वरेण जगत् - त्रय - मोहन - दक्ष - लतान्त-महेषुणा,
लब्ध-मनोहर-साल-निषण्ण-सुदेह भुवा परि-पूजिते,
लंघित-शासन दानव-नाशन दक्ष-महायुध-राजिते,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।४।।

ह्रीं

ह्रींपद-भूषित पञ्च - दशाक्षर षोडश - वर्ण - सुदेवते,
ह्रींमति हादि-महा-मनु-मन्दिर-रत्न-विनिर्मित-दीपिके!
हस्ति - वरानन - दर्शित-युद्ध-समादर-साहस-तोषिते,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।५।।

ह

हस्त - लसन्नव - पुष्प - शरेक्षु - शरासन-पाश-महांकुशे,
हर्यज शम्भु-महेश्वर-पाद-चतुष्टय-मञ्च-निवासिनि!
हंस-पदार्थ-महेश्वरि! योगि-समूह-समादृत-वैभवे,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।६।।

स सर्व - जगत्-करणावन - नाशन-कर्त्रि, कपालि-मनोहरे,
स्वच्छ-मृणाल-मराल-तुषार-समान-सुहार-विभूषिते!
सज्जन-चित्त-विहारिणि, शङ्करि, दुर्जन-नाशन-तत्परे,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।७।।

क कञ्ज-दलाक्षि, निरञ्जनि, कुञ्जर-गामिनि, मञ्जुल-भाषिते,
कुंकुम-पङ्क-विलेपनि, शोभित-देह-लते, त्रिपुरेश्वरि!
दिव्य-मतङ्ग-सुता-धृत-राज्य-भरे करुणा - रस - वारिधे!
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।८।।

ह हल्लक-चम्पक-पङ्कज-केतक-पुष्प-सुगन्धित-कुन्तले,
हाटक-भूधर-शृङ्ग-विनिर्मित-सुन्दर-मन्दिर-वासिनि!
हरित्ति-मुखाम्ब-वराह-मुखी-धृत-सैन्य-वरे, गिरि-कन्यके,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।९।।

ल लक्ष्मण-सोदर-सादर-पूजित-पाद-युगे, वरदे, शिवे,
लोह-मयादि-बहून्नत-साल-निषण्ण-बुधेश्वर-संवृते!
लोल-मदालस-लोचन-निर्जित-नील-सरोज-सुमालिके,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।१०।।

ह्रीं ह्रींमिति मन्त्र-महा-जप-सुस्थिर-साधक-मानस-हंसिके,
ह्रेषित-शीत-करानन-शोभिनि, हेम-लतेव सु-भास्वरे!
हार्द-तमो-गुण-नाशिनि पाश-विमोचनि, मोक्ष-सुख-प्रदे,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।११।।

स सच्चिदभेद-सुखामृत-वर्षिणि, तत्त्वमसीति सदाऽऽदृते,
सद्-गुण-शालिनि, साधु-समर्चित-पाद-युगे, पर-शाम्भवि!
सर्व-जगत्-परिपालन-दीक्षित-बाहु-लता-युग-शोभिते,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।१२।।

क कम्बु - गले वर-कुन्द-रदे रस - रञ्जित पाद सरोरुहे,
काम-महेश्वर-कामिनि, कोकिल-कोमल-भाषिणि भैरवि!
चिन्तित-सर्व-मनोरथ-पूरण-कल्प-लते करुणार्णवे,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।१३।।

ल

लस्तक-शोभि-करोज्ज्वल-कङ्कण-कान्ति-सुदीपित-दिङ्-मुखे,
शस्त-तर-त्रिदशालय-कार्य-समादृत-दिव्य-तनूज्ज्वले!
कश्चतुरो भुवि देवि! पुरेशि! भवानि! तव स्तवने भवेत्,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।१४।।

ह्रीं

ह्रीं-पद-लाञ्छित मन्त्र-पयोनिधि-मन्थन-जात-परामृते,
हव्य-वहानिल-भू-यजमान-खेन्दु - दिवाकर-रूपिणि!
हर्यज-रुद्र-महेश्वर-संस्तुत वैभव-शालिनि सिद्धिदे,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।१५।।

श्रीं

श्रीपुर-वासिनि हस्त-लसद्-वर-चामर-वाक्-कमला-नुते,
श्रीगुह-पूर्व-भवार्जित-पुण्य-फले भव-भक्त-विलासिनि !
श्रीवशिनी विमलादि सदा नत-पाद-चलन्मणि-नूपुरे,
पालय हे ललिता-परमेश्वरि! मामपराधिनमऽम्बिके ।।१६।।

***

श्री श्रीविद्या सम्बन्धी उपयोगी पुस्तकें

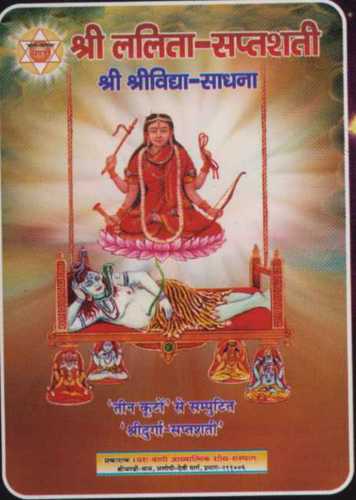

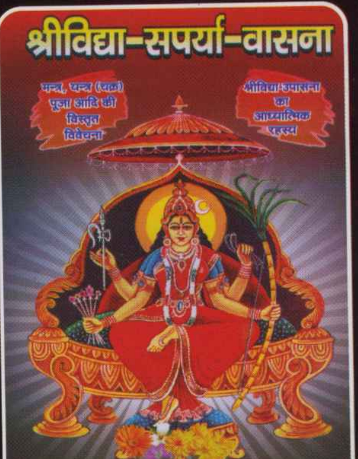

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६